वीर	सेवा मन्दिर
	दिल्ली
	•
	^
	57.56
कम स रूया ँ	- ,
हाल न० ──	2110114
व ण्ड ———	



अर्थ सहित.

तथा

मूल प्रतिक्रमण.

जीवाजीवादि स्वरूप, सिद्धपूजायुक्त.

आ प्रंय,

समस्त दिगंबरी जैनबंधुओने शतिदिन अवत्य उपयोगी जाणी,

मुनिमहाराज श्रीहर्षकीर्ति

पासे संशोधन करावी छपावनार,

भावनगर दिगंबरी समस्त संघ.

लिंबडी श्रीयशवित्संहमी मीन्टीना मसः

(सर्वहक स्वाधीन.) संस्त् १९५४ कार्त्तिक श्रक्ष पंचपी. किंमत ६ आना.

मालिनीवृत्तम्.

रचयतु निजधमें सर्वदिग्वस्त्रवर्गों जवतु सुजिनपूजा जैनसन्मंदिरेषु । कथयतु मुनिवृंदं शुद्धधर्मोपदेशं इति चिरमजिलापं हर्षकीर्त्तिविधत्ते ॥१॥

पस्तावना.

भा **छ**पुत्रंथमां सामायिक विगेरे पडावञ्यक क्रियाओ**गांदी** मुख्यमुख्य क्रियाओं लिथेली छे. जैन दिगंबरी आम्नाय प्रमाणे सामायिक, स्तवन, वंदना प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग अने स्वाध्याय-ए छ प्रकारनी ऋिया श्रावकोने अवस्य कर्त्तव्य होवायी 'आवस्य क' कहेवाय छे. ने विशेषे करी यहस्थाश्रमीनो धर्मछे. आ छ आ-वश्यक मध्ये ? सामायिकने प्रथम गणेलु छे, कारणके तेमां आ-र्चरौंद्र ध्याननो परिद्यार करी शत्रु तथा मित्र अने पाषाण तथा कांचनादिकने विषे समभावना थायछे तेमज नेना यांगथी श्रावक त्रीजी प्रतिमा धारी पण कहेवायछे. २ बीजा आवश्यक स्तवनमां तीर्थकर भगवंततुं नाम कीर्चनपूर्वक गुणकीर्चन आवेछे के जेतुं का-योत्मर्गमां अनुध्यान थायछः ३ त्रीजा आवश्यक वंदनामां वंदन करवायोग्य निर्धकरोने नथा धर्माचार्यने नमस्कार करायछे. ४ चोथा आवस्यक प्रतिक्रमणमां श्वभयोग थकी अशुभयोगने विषे गमन करनारने फरी पाछुं श्वभयांगमां कमण थायछे, एटले मो-क्षप्रत्य आपनारा एवा शुभयोगनं विषे निःश्रल्य थवं ते प्रतिक्रमण कहेवायछे, ने अर्थने अनुमरीनेज तेनुं नाम 'प्रतिक्रमण' एवं पहे-लुंछे. ५ पांचमुं आवश्यक कायोत्सर्ग के जेगां कायाना सर्व सा-वद्य व्यापारो छोडवाथी पापना छेट थनां आन्मा पापरहित थाय छे. वेमज मायाञ्चल्यः नियाणश्चय अने मिध्यात्वश्चर-ए अंतरंग त्रणशल्य नथा ज्ञानावग्णादिक पापकर्मने दुर करवामां कायोत्स-र्गनो मुख्य हेतुछे. ६ *छटुं आवस्यक स्वाध्याय, ते पूर्वाचार्यीना

^{*} आ ठेकाणे ? समता, २ वंदना, ३ स्तुति, ४ प्रतिक्रमण ५ स्वाध्याय अने ६ कायोन्सर्ग आवा क्रमथी पण गणना थायछे.

ग्रंथोतुं पटनपाटन करवाथी परिणामे ज्ञाननो उत्कर्प थवामां अ-त्यंत उपयोगी छे.

आ छघुयंथमां सामायिक, प्रतिक्रमण अने जीवादितन्तस्वरु प-ए त्रण विषयोनो मुख्यपणं संग्रह करेलो छे. तेमां जीवादितत्त्व स्वरुपने अंगे श्रावकोने जाणवालायक केटलीएक मुख्यमुख्य वाव तोनो समावेश करेलोछे. छेवटे अमारा परमपुज्य अने मान्य महा मुनि हर्षकीत्ति महाराजनी रचेली अष्ट्रपकारी सिद्धपूजा नाखी आ ग्रंथ समाप्त करवामां आव्योछे.

षडावञ्यकमां प्रथम गणेल सामायिक श्रावकोए त्रणेकाले क-रत्रुं जोइए, एवो मुख्यविधि छे. अने तेनेमाटे श्रीमत्स्वामी समंत भद्राचार्ये पोताना रचेल रत्नकरंड श्रावकाचारमां त्रीजी मतिमा धारी श्रावकना गुणना प्रसंगे एक श्लोकथी सारीरीते बतावी आ-प्युंछे. जेमके,

गीति.

चतुरावर्त्तितयः चतुः प्रणामस्थितो यथाजानः । सामयिको द्विनिषद्यः त्रियोगशुद्धस्त्रिसंध्यमभिवंदी ॥१॥

भावार्थः--प्रातःकाल, मध्यान्हकाल, अने सायंकालमां मन, वचन कायाये गुद्धथइ तथा वाह्याभ्यंतर परिग्रह छोडीने बेहाथ जो डी त्रणवार आद्वतिए चारवखत चारे दिशामां जे मणाम करे ते त्रिजी सामायिक प्रतिमाधारी श्रावक कहेवायछे ॥१॥

विवेचन--आ श्लोक उपर प्रभाचंद्राचार्यकृतटीका तथा सदासुखजीकृतवचिनकाने आधारे एवं। सिवस्तर अर्थ थायछे के, त्रिजीप्रतिपाधारी श्रावक केवो जोइए, के जेनामां प्रथम प्रतिपादन करेला
समय (प्रकार)थी आचरणकरतो अर्थात् सामायिकगुणवालो ते
होवोजोइए, तेमज चारवार त्रणवस्तत आवर्षन करनारो धाय.

कारणके एकएक कायोत्सर्ग करवामां 'नमो अरहंताणं ए पाठने थोसामि' इत्यादिआदि अंतमां प्रत्येक त्रण आवर्त्तन थायछे वली ते श्रावक चार आवर्त्तने प्रणाम करेंछे. कारणके आदिअंत एक एक प्रणाम करवाथी चार प्रणाम थायछे तेमज ते उर्द्ध कायोत्सर्गमां रही बाहेरना अने अंदरना परिग्रहनी चिंताथी निष्टत्त थायछे. अने ते प्रणाम करती वखते वे वखत देसेछे, कारणके देववंदना कर ता आरंभ अने समाप्तिमां वेवार वेसीने प्रणाम थायछे. अने ते श्रावक मन वचन अने कायाना त्रण योग शुद्ध राखेछे अर्थात् सावद्य व्यापार छोडीदे छे. आवीरीते सामायिकमां वर्त्तनार श्रावक ते त्रिजी प्रतिमा धारी कहेवाय छे. आ प्रमाणे टीकाना अभिपायथी सामायिकने माटे केटलोएक विधिनो प्रकाश आपणने सारी रिते प्राप्त थायछे.

पढावश्यकरूप प्रतिक्रमणने माटे पूर्वाचार्यो ग्रुख्यत्वे करीने प्रातःकाल अने सायंकाले करवानो विधि बतावछे. मिध्यात्व य- वाथी, असंयम थवाथी तथा कपाय थवाथी जे अशुभयोग थाय, ते अशुभयोगना विच्छेदने माटे जे निंदाद्वाराए करीन अशुभयोग विद्वित्तक्ष प्रतिक्रमण करवुं ते अतीतिविषयक तथा संवर द्वाराए करीने जे प्रतिक्रमण करवुं ते अनागनकालविषयिक प्रतिक्रमण छे, तथी ए ग्रुख्यत्वेकरिने द्विकालविषयिक प्रतिक्रमणसिद्ध थायछे अने नेमां वर्त्तमाननो पण अंतर्भाव थइजायछे. प्रतिक्रमणमां केटलाक प्राचारभेदथी साधु अने श्रावकना प्रतिक्रमण लुदानुदा थायछे. कालनाभेदथी देवसिक, रात्रिक, पासिक, चातुर्मासक अने सांव त्सरिक एपांच भेदोथी प्रतिक्रमण पांच प्रकारनुं कदेवायछे.

आवी पढावश्यक कियाथी विश्वस रहेनार हरकोई श्रावक पो ताना शुद्धपर्यथी श्रष्टथई अधोगतिने पामेछे, आ मसंगे सखवाने खेद थाय छे के, प्राचीन वखतमां जेनी विजय पताका आखा भारतवर्ष उपर फरकती हती. जेना भगवंतभाषित निष्कलंक सिद्धांतो सांभली अनेक प्रध्वीपतिओ पोताना एकछत्र राज्य-नो पण त्याग करीने चाली नीकल्या छे. जेना ग्रंथोनी चमत्कृति भरेली रचना बांची बांची इतर धर्मना अर्बाचीन विद्वानी पण मोइ पामी जायछे, अने जेनी घणी दुष्कर क्रियाथी भय पामेला पामर प्राणीओने जैन नाम धारण करी बीजा नवीन विरुद्धमार्गी काढवा पढेला छे. एवा दिगंबरी संप्रदाय आजकाल घणी पडती स्थितिने पामतो जायछे केटलाएक विद्वान भट्टारको लक्ष्मीनी देल हेरमां तणाता होवायी श्रद्ध उपदेश आपी शकता नथी. त्यागी अ ने विद्वान प्रनिओनो विलकुल अभाव होवाथी पत्येक स्थानके श्र-द्ध देशनाना प्रवाह पोहोची शकतो नथी. क्षुष्ठक अने ब्रह्मचारीओ तो घणेभागे अंतर्धान पामीगयेलाछे. आधीकरीने आ महान् संप्र-दायने मोटो धक्को लागेलोछे. परंपरा उपदेशना अभावयी प्रमादी श्रावको पोताना धर्मधी विम्रुख थनाजायछे. तेथी करी आ असार संसारमांथी उध्धार करनार पाताना पवित्र संप्रदायने तेओ भुलता जायछे. ज्यारे संपदायने भूली जवाय त्यारे पोतानी आवश्यक्रकि या तरफ तेओनुं लक्ष प्रतिदिन ओल्लंथतुं जाय तेमां कांइपण आ-श्चर्य नथी.

आवी पडती स्थितिमां दिगंबरी श्रावकोना सदभाग्यने योगे अने सहर भावनगरमां वसता ज्ञूज दिगंबरी वर्गना उध्धारकारक पुण्यने बलेकरी महापवित्र अने अनुभवी विद्वान् महामुनिराजनो योग थइ आव्योः ए महात्मानी निमल मनोवृत्तिमां मथमथीज दिगंबरी संमदायनो पवित्र संस्कार रहेलोः पण कोइ कर्मयोगे विश्रोने आ देशमां घणा विस्तारमां भवर्त्तता तपागच्छमां दी-क्षायोग यइ गयो हतो पण पोताना भवल पुण्यना योगयी अने शुद्ध सनातन दिगंबरी संपदायना महान संस्कारना बलंधी नेमने ते दीक्षा रुचिकर थइनहीं. नेथी छेवटे संवत् १९५३ ना ज्येष्ट शुक्क १० गुक्त्वारे अमी भावनगरना संघे कोइ प्रत्यक्ष गुरुना अभावधी प्रभुनी सानिष्ये गौतमगुरुने स्थापी दीक्षा आपी अने तेमनुं 'हपेकीर्त्ति' एवं नाम धारण कराव्युं. आ महोत्सव मोटा आडंबरथी करवामां आव्यो अने दिगंबरी संघमां जयजयकार प्रवर्त्यों.

टीक्षा धारण कया पछी तेओने चातुर्मास्य रहेवाने माटे वि-नंति करी, एटले कृपाल अने धर्मीपकारी ए महापुरुषे ते बान क-बुछ करी अने पोताना संपदायना उढ़ारने माटे सेहेर भावनगरमां एक जैनशाला स्थापन करी. जैनवालकोनी पोतानी आवज्य कि-याना ग्रंथोना अभ्यासने माटे उत्तम दृत्ति जोइ, तेओए आ लग्न-ग्रंथ शोधी बाहेर पाडवानो निश्चय कर्यो, आ पुम्नकने शोधवामां उत्तम शुद्ध परतो मली शकी नही पण तेओ पोताना अनुभवि ज्ञा-नना बख्यी अने मोटा प्रयत्नथी आ ग्रंथने आवी स्थितिए मुकी शक्या छे. ग्रंथमां काइ कोइ टकाणे मागधी शब्दोमां तेमने स्फूट अर्थे। करेला छे पण कोइ शुद्ध परतके टीकानो आधार मल्यो नहीं तथी तेओने सांदिग्ध रहेला छे. सामायिकमां त्रिजे पाने 'पेझिटा-वा' ए पदनों ने [' संघट्ट करेला '] एवो अर्थ लखाणों छे,ते खोटो होय एम जणाय छे. ते शिवाय केटलाक मागधी शब्दोमां शंकित अर्थ रहेला छे तेथी जो कोई विद्वान्, भट्टारक, के श्रावक अमोने सूचना करको तो अमे तेओनो उपकार मानीशुं अने बीजी आह-त्तिमां सुधारो करवाने शक्तिमान थइथुं.

आ ग्रंथमां सामायिकनी जयमाल विगरे गाथानो अर्थ तथा भित्रक्रमण मूत्रनो सविस्तर अर्थ तैयार करवा धार्यो हतो, परंतु इत्तम टीका तथा शुद्ध परत नहीं मळवाथी तेमज ग्रंथनो विस्तार थवा- ना भयथी छापवामां आव्यो नथी. आ प्रथमाहित होवाथी बुद्धि दोपादिकना सद्भाने हस्त, दीर्घ, कानो, पात्रा, अनुस्वार विगरेनी चृक तथा अक्षरादिकनी न्यूनाधिकनी चृक मनुष्यमितथी अवस्य रहेन्दी हमे, तथा मंद्वुद्धिना प्रभावथी कोड ठेकाणे अर्थमां पण अग्रुद्धता रहेन्दी हमे, किंवहुना ! कदी जिनवचन विरुद्ध छपाया नी आचरणा थड होय, ते संबंधी जे कांड् मुक्ष्म अपराध थयो होय तो ते अपराधने दुष्कृत आ पुस्तक वांचनारा दिगंवरी चतुर्विध संघ समक्ष ए महामुनि पांत मिथ्या करे हो.

र्छा. शेठ, नियमचंद सुरर्जाना तरफथी. भावनगर जैन दिगंवरी संघ.

~~;<>>

सामायिक करवानो विधि.

नित्य पातःकाळ, मध्यान्हकाल, अने सायंकाल ए अणकाले श्रावके अवश्य सामायिक कर्त्वं जोइए. तेमां ओछामांओछं, पायः बेघडीनुं मुख्य प्रमाण लेवायछे जो कटि ए त्रणकालमां न वनेतो प्रा तःकाले तो अवञ्य कर्त्रुं जोइए. सामायिक क्रमारे प्रथम गुरुपासे जइ आज्ञा लेवी. जो गुरु नहोयनो उपाश्रयमां अथवा एकांत स्था-नमां जइ सामायिक कर्वं. सामायिक करनारे प्रवेदिशाके उत्तर दिशा तरफ मुख राखवं, ते वखने शृद्ध शरीर तथा शृद्ध वस्त्र के ने नाथी संमाग्कि अशुचि क्रिया न करी होय तेवुं क्व पेहरी वेसतुं. प्रथम 'जयजय निम्सही' ए त्रणवार भणी पछी 'निःसंगाऽहीजनानां' तथा तेनी नीचे 'पांडकमामिभंन' ए पाट पूर्ण थाय न्यांस्थी हाथ जोडी बाली जवा. पछी पद्मासन वेसी 'नमो अर्हनाणं' एनच (९) पदनो जाप तथा उच्छास (२७) सत्ताविश करवा. उच्छास कर-वानो प्रकार एवं। छ के, नवकार मंत्रना छ (६) भाग छपटो करवा ते छ भागना वे वे भाग करी, एक भाग चित्रवता उंची श्वाम छेवो अने बीजो भाग चितवता नीचें: चाल लेबो, जंमके 'नमां असि-हंताणं ' ए पट मनमां चित्रजीने उंची श्वास लेबी, अने 'नमी सि-ध्याणं 'ए पद चिनवी पाछी नीची श्वास छेवी, ए प्रमाणे 'न-मो आयरियाणं ए पट उंचे धासे अने 'नमा उवन्यायाणं 'ए पद नीचे खास 'नमो ठोए 'ए पट उंचे खासे अने ' सव्यसा-हुणं ' ए पद नींचे. एवी रींन नत्र (°) वार् जाप्य करवा. पछी 'ईयीपथे पचलना ' ए श्लोकथी मांडीने 'इनिमामायिकस्वीकारः' त्यांसधी भणी सामायिकना स्वीकार करवा पछी समना सर्व भृतेषु ' (पत्र ११) ए श्होंकशी मांडीने ' मर्व सावद्ययागिवरती ऽस्मि ' (पत्र १९) त्यांसुघी भणी जतुं. पछी चैत्य भक्तिकायो-त्सर्ग करवो तेमां 'नमो अरहंताणं त्यांथी मांडीने ' दुच्चरियं वो-सरामि (पत्र (१७) त्यांसुधी भणी जतुं. पछी कार्योत्मर्ग कर-तां नव (९) जाप्य अने मत्ताविश (२७) उच्छ्वास प्रथम कहा ते प्रमाणे आपवा.

<u>---</u>0%0c

कायोत्सर्ग करवानो विधि.

कायोत्सर्ग करती वस्तते प्रथम उभायइ, क्षित्रमुद्राकरी, स्थिर रहेतुं, दृष्टि नासिकाना अग्रभाग उपर राखवी. ते वस्तते वे होठ व रावर बीढी दांत परस्पर अडे नहीं तेम सत्याविश (२७) श्वासोच्छ्या स मंत्रपद साथे चिंतवी प्रभुन्नं ध्यान करवुं जेथी कायोत्सर्गनो भंग थाय तेवा दोप ने वस्तते छोडी देवा.

उपर प्रमाणे कायोत्सर्ग करीरह्या पछी 'ॐ नमः परमान्मने' (पत्र १८) त्यांथी मांडीने 'तिःपरीत्य नमाम्यहं' (पत्र १९) ए आठमी गाथा सुधी भणी जवुं पछी 'जयित भगवान्' (२०) ए श्लोकथी मांडीने 'सिद्धं प्रयच्छंतु नः' (पत्र ३६) ६ ठी गाथा सुधी भणी जवुं. पछी 'इच्छामि भंते' ए पाठ (पत्र ३७) भणी पंचगुरु भक्ति कायोत्सर्ग पूर्व प्रमाणे करवो. त्यां पूर्वे कह्या प्रमाणे 'नमो अरहं-ताणं' (पत्र १४ थी पत्र १७ सुधी) थोस्सामि ए गाथाथी मांडीने दुचरियं वोस्सरामि' त्यांसुधी भणी जवुं पूर्व प्रमाणे २७ उच्छास

^{*} पगना आगलनी अंगुलीनी बाजु तरफना पोंहोचाने मांहे मांहे चार आंगलनो आंतरो राख्यो होय अने पगनी पाछलनी पा नीनी बाजुना भागमां मांहे मांहे चार आंगलथी कांइक उणो आं-तरो राख्यो होय ते 'जिनमुद्रा' कहेवायछे.

लीधा पछी 'नमो अरहंताणं' ए पद मुखे बोळी कार्योत्सर्ग छोड-वो. छोडया पछी उभा रहीनेज लोगस्स (ॐ नमोः परमात्वने त्यां-थी मांडी ते त्रिः परीत्य नमाम्यहं) त्यांसुधी भणी जतुं. आ क्रम ढरेक कायोत्सर्गमां याद राखवो पछी नींचेबेसी 'प्रतिहायेंजिनान सिद्धान '(पत्र ३८) ए श्लोकयी मांडीने ' जिणगुण संपत्ति होउ यम्बं' पत्र १०) सुधी भणी जुनुं. पछी शांति भक्तिकायोत्सर्ग उ-पर प्रमाणे करवो. पर्छा नींचे बेसीने 'शांतिजिनं ' (पत्र ४१) त्यांथी मांडीने 'जिणगुणसंपत्ति मझ्झं' (पत्र ४४) त्यांसूधी भ-णी जबुं. पछी समाधि भक्तिकायोत्सर्गनी पूर्व प्रमाणे क्रिया करवी. पछी इष्ट पार्थना करवामां 'प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः' ए पट बोली प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, अने द्रव्यानुयो-गने नमस्कार करवो. पछी ' शास्त्राम्यासो ' (पत्र १५) ए श्लो-कथी मांडीने 'मझ्झय दृख्ल ख्लयं दिंतु' (पत्र ४६) त्यांमुधी भ-णीने पछी पूर्व प्रमाणे सिद्ध अक्तिकायोत्सर्ग करवो, तेमां त्रण जाप आपी ९ श्वासोच्छास आपवा. पछी ' नवसिद्धे णयसिद्धे ' (पत्र ४६) त्यांथी मांडीने अठगुणाहुति सिद्धाणं ' (पत्र (४७) त्यांसुधी भणी जनुं. पछी पूर्व प्रमाणे श्रुतभक्तिकायोत्सर्ग करनो. पछी कोटीशंत द्वादश 'ए श्लोकथी (पश ४७) मांडीने 'महोव-हिं शिरसा ' त्यांसुधी भणी जवुं. पछी आचार्य भक्तिकायोत्सर्ग क-रवो. तेमां जण जाप आपी ९ उच्छास करवा. पछी ' अतजल-घि ' ए श्लोकथी (पत्र ४८) मांडीने 'मोक्ष मार्गोपदेशकाः ' (प-त्र ४९) त्यांसुधी भणी जनुं. पछी इच्छामि भंते ईर्यावहि ' ए पा-ठ भणी प्रथम प्रमाणे कायोत्सर्ग करी सामायिक समाप्त करवं.

इति सामायिक विवि :।

अय लघु सामायिकनो प्रकार.

उपर प्रमाणे जो विस्तारथी सामायिक न बनी शकेतो ते-णे फकत ' निःसंगोऽहं जिनानां ' त्यांथी मांडीने त्रिःपरीत्य न-माम्यहं ' त्यांसुधीनी जे किया आवे ने करवी तेमां पण वे घडीना प्रमाणथी ओछु प्रमाण लेतुं नही.

प्रतिक्रमण् करवानो विधि.

मरोक श्रावके मातःकाल अने सायंकाल मितकामण करवुं जो इए, ते प्रतिक्रमण देवसिओ (दिवसनुं), राइओ (रात्रिनुं), पृक्तिस्रिओ (पाप्तिक), चडमासिओं (चोमासानुं), अने संवस्मिरिओं (सांवत्स रिक) एकालना भेट्थी पांच पकारनं छे. प्रतिक्रमण करनार श्रावके भथम पूर्व तथा उत्तर दिशामां मुख राखी वेसवुं. प्रथम 'निःसंगोऽ हंजिनानां' ए पाठ भणी तेमां आवेल नव नवकारना कायोत्मर्ग करी 'त्रिःपरीत्य नमाम्यहं' त्यांनुधी भणीजवुं, पछी सामायिक ल-इने प्रतिक्रमणनो आरंभ करबो. प्रथम 'पापिष्टेन दुरात्मना' ए श्लो-कथी (पत्र ५०) मांडीने 'सिद्धभक्तिकार्यहत्वर्ग' पूर्व प्रमाण करवो. पछी 'नमो अरहंताणं' (पत्र ५५) थी मांडीने 'तम्सिमच्छामि दुक्कडं' (पत्र ६३) त्यांमुबी भणीजयुं. पछी वीरभक्तिकायोत्सर्ग करवो तेमां 'जोमये' त्यांथी मांडीने 'दुचरियं वोस्मरामि' (पत्र ६२) त्यांसुधी मणी जबं. वीरभक्तिकायोत्सर्गमां पाखी होयतो १०८ नवकारनो. दिवस सबंधो ३६ नवकारनो अने रात्रि संवधी १८ नवकारनो कायोत्सर्ग करवो. पछी 'यःसर्वाणि' त्यांथी मांडीने 'तिध्ययर्भ-त्तिकाउसग्गंकरोमि' त्यांसुधी भणि जवुं. 'तिध्यवरभत्तिकायोत्सर्ग कर्यापछी 'चउवीसं' त्यांथी मांडीने 'समाविभक्तिकायोत्सर्गे करो-म्यहं' त्यांसुधी भणीने ते कायोत्सर्ग करवो. तेमां नव नवकार अने

२७ श्वासोच्छ्वास छेवा. पछी 'प्रथमं करणं' त्यांथी मांडीने इच्ट प्रार्थना करवी. पछी 'ईय्योवहिनो' पाठ भणी नव नवकारनो का-योत्सर्ग करी प्रतिक्रमण समाप्त करतुं.

सूचना.

प्रतिक्रमणमां जे टेकाणे 'देवसिय' एवो पाठछे, ते ठेकाणे दि-वसनुं प्रतिक्रमण होयतो 'देवसिय' भणवुं. पण जो रात्रि होयतो ते ठेकाणे 'राइउ' एवो पाठ भणवो. पाखी होयता 'पाख्सिय' एवो पाठ, चोमासामां 'चोमासिय' एवा पाठ अने संवत्यरीमां 'संव-स्सिरीय' एवो पाठ भणवो.

उपवासनुं पचखाण्.

इच्छेहभत्तपचिष्वाणं.से असणंवा, पाणंवा, खाढंवा, सादंवा, तित्तंवा, कडुपंवा, कसायलंवा, अविलंवा, महुरंवा, लवणंवा, अन्लवणंवा, सचित्तंवा, अचित्तंवा, नं मव्वं चडिवहं आहारं, अष्ठजप्वख्याणं. अजलंविना, कछ उपवासं, परे उग्गदेसूरे, पडिपुण्णं, पारणं करेडज। जदि अंतरं कालंहविद तदा अणसणं होडज। धम्मो-तिकिचा, णियमोतिकिचा, संजमोतिकिचा, तपोतिकिचा, अरहंतस-ख्ख्यं, सिद्धसख्यं, साहुसख्ख्यं, अप्पस्तिक्व्यं, परसख्यियं, दे वतासख्ख्यं, दुख्ख्ख्यं, कम्मख्यं, वोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुण संपत्तिहोड । तुभ्भं, ते भवतु, ते भवतु, ते भवतु ।।?।।

^{*} जो एकतार जल पित्रानी बृद्ध राम्बनी होयतो 'जलंबिना' ए पद भणवुं नहीं.

[ं] स्वहस्ते पचखान लेवा होयतो मझ्झं एम बोळवो.

(38)

पोसहो करवानुं पचखाण.

इच्छेहउत्तमंपोसहं, सव्वं सावज्जजोगं पचल्खाणं, करेह, सु-त्तत्थंआयारं, धर्म्भद्याणं धरेह, पंचपरमेहिमल्खियं तेमे भवतु॥२॥

पोसहो पारवानो प्रकार.

पारेमि पोसहं, अण्णाणेणवा, पमादेणवा, अमत्थभावेणवा पोस-इम्मि, जंकिंपि सुत्तत्थं, आयारंण कयंतं, तस्सामिछामि दुक्कडं ॥३॥



॥ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥

(जयजयजयनिस्सही निस्सही निस्सहीके०)

जय जय जय एम कहीने त्रणवार नेषेथकी कहेवी.

श्रोकः

निःसंगोऽहंजिनानांसदनमनुपमंत्रिःपरीत्येत्यभक्तया स्थित्वागत्वानिषिद्धग्रवरणपरिणतोऽन्तःशनैर्हस्तयुग्मं भालेसंस्थाप्य बुद्धगा मम दुरितहरं कीर्तये शक्तवंदां निंदादूरंसदाप्तंक्षयरहितममुंज्ञानज्ञानुंजिनेंद्रम्॥१॥

अर्थः—संगरिहत एवोहं भगवंतना अनुषम मंदिरमां जई,त्रण भदिक्षणा फरी, भिक्तिथी उभोरही, अंदर सारापिरणामधी निस्स-हीनो उचार करी हलवे हलवे वेहाथ ललाट उपर राखी मारा पा-पने हरनारा, इंद्रने वंदन करवा योग्य, निंदाथी दूर रहेनारा सदा हितकारी, क्षयरिहत, अने ज्ञानना सूर्यहप एवा निनेंद्र भगवंतनुं हुं कीर्चन कहं हुं ॥ १॥

पिडकमामि जंते इरियावहियाए विराहणाए क्रिणागुत्ते इप्रदामणे णिग्गमणे ठाणेगमणे चं- क्रमणे पाणुगमणे विज्जुग्गमणे हरिदुग्गमणे उच्चारपस्सवण खेलसिंहाण्य वियडिपईठावणिया ए जेजीवा एइंदियावा बेंदियावा तेंदियावा चउरिं दियावा पंचेंदियावा पणोल्लिदावा पेल्लिदावा संघ-दिदावा संघादिदावा उद्दादिदावा परिदाविदावा किरिछिदावा लेसिदावा छिंदिदावा जिंदिदावा

ठाणदोवा ठाणचंकमणदोवा तस्सुत्तरगुणं तस्स पायछित्तकरणं तस्सविसोहिकरणं जावअरहं-ताणं भयवंताणं णमोक्कारं पज्जुवासं करेमि तावकायं पावकम्मं दुच्चरियंवोस्सरामि.

(पडिक्तमामि जंते के ०) हे भगवान् ! हुं पतिक्रग्रुं हुं , निवर्जुलं.(इरियावाहियाए के०) मार्गमां गमन छ प्रधान जेमां एवी.(विराहणांए के०) जंतुओनी विराधनाथी,(अ णागुत्ते के ०) अनुपयोगमां,(अइगमणे के ०) अतिशयथी गमन करवामां, (णिग्गमणे के.) नीकलवामां,(ठाणेगम णे के ?) भिध्यात्वीने स्थानके गमन करवामां, (चंकमणे के ०) तिहांज अरहा फरहां फरवामां (पाणुग्गमो।के ०) प्राणीने चांपवामां (विज्ञ्गमाो के o) बीजने चांपवामां हरिदुग्गमणे के) नीलवर्णवाळी एवी जो मूल स्कंघादिक दश मकारनी वनस्पतिने पगयी चांपवामां, (उच्चारपस्सवाा के ०) विष्टापूत्र करवामां, (खेलसिंहाणय के ०) ग्रुखनोबह-स्रो तथा नासिकानी स्रींट काढवामां (वियडि पड्ठाविणियाए के ०)विक्वतिनुं परिटबुं तेमां,(जे जीवा के ०)ने जीव(ए इंदि या वा के.)जेने शरीररूप इंद्रियएक होयते,(बेंदिया वा के.) जेने शरीर अने मुख ए वे इंद्रियो होय ते,(तेंदिया वा के०) जेने बरीर, मुल, तथा नासिका ए त्रण इंद्रियो होय ते, (चउ-रिंदिया वा के ०) जेने बरीर, मुख, नासिका अने नेत्र ए

च्यार इंद्रियो होय ते, (पंचेंदिया वा के ०) जेने शरीर, सुल, नासिका, नेत्र, अने कान ए पांच इंद्रियो होय ते, (पणोद्धि दावा के ०) प्रणोदित करेला, (पेद्धिदा वा के ०) संघ<u>द करेला,</u> (संघदिदा वा के०) एकटा करेला, (संघादिदा वा के०) संघट करेला, (उद्दविदा वा के०) उपद्रव करेला, (परिदाविदा वा के०) परितापित करेला, (किरिछिदा वा के०) क्लेश करेला, (लेसिदा वा के०) _{भूमिसाथे घसेला.} (छिंदि दा वा के०) छेदेला, (भिंदिदा वा के०) भेदेला, (ठाणदो वा के०) स्थानश्रष्टकरेला, (ठाणचंकमणुदो वा के०) एक स्थानेथी बीजे स्थान जाता, (तस्युत्तर गुणुं) तेपना ड त्तर गुणने अर्थ (तस्स पायछित करणं के ०) तेने शा-यित करवाने (तस्सविसोहिकरणं के ०) तेनेजसोधन करवाने (जाव अरहंताणं के०) ज्यां सुधि अरिहंतना (जयवंताणं के०) भगवन्तना (णमोकारं के०) व चपदरुपी जे नवकार तेने मुखमांथी (पज्जुवासं करेमी के॰) बच्यार करं (तावकायं के॰) त्यां स्रुधि (पाव कम्मं के ०) पाप कर्मने (दुच्चरियं के ०) दृष्ट कृत्यने (वोस्सरामि के०) लाग करखं

॥ जय अर्ह ३ णमोअरहंताणं जाप्य ९ उच्छ्वास २७॥

वसंतितलकाहत्तम् श्लोकः

इर्यापथे प्रचलताच मया प्रमादा देकेदियप्रमुखजीवनिकायबाधा। निर्वर्तिता यदि ज्ञवेदयुगान्तरेक्षा मिथ्यातदस्तु दुरितं गुरु भक्तितो मे॥२॥

जावार्थः -- ईर्या पिथके मार्गमां चालता एवा में ममादथी ए केंद्रिय विगेरे जीवनिकायने कार्द जो बाधा करी होय अथवा युग ने आंतरे हिष्ट करीने जोयुं न होयतो तथी थयेलुं मारुं जे पाप ते गुरुनी भक्तिथी मिथ्या थाओ. ॥२॥

श्लोक

करचरणतनुविघातादटतो निहतः प्रमादतः प्राणी। ईयपिथमिति जीत्या मुश्चेत्तहोषहान्यर्थं॥३॥

जावार्थः - हाथ पग अने शरीरना विघातथी हरता फरता जंतुओने प्रमादथी इणतो एवो प्राणी भयथी तेना दोषनी हानिने अर्थे ईर्या पथने छोडीदेछे ॥ २ ॥

ईच्छामि भंते इरियावहियस्स आखोचेउं पुवुत्तर दक्षिण पछिम।चउदिसु विदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिठिणा दठवा डवडवचरियाए पमाद दो सेण।पाणभूदजीवसताणं उवघादोकदो वा कारि दो वा कीरंतो वा । समणुमाणिदो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३॥ अर्थः-(ईन्छामि जंते के०) हेभदंत! हुं इच्छुहुं (ईरि पावहियस्स के०) इर्यापियने, (आलोचेंडं के०) आलोचनाकरवाने, (पुञ्चुत्तर दक्षिण पिछम के०) पूर्व, बत्तर, दिशण अने पिश्रम, (चउदिसु के०) ए च्यार दिशा ओमां, (विदिसासुके०) विदिशाओमां, (विद्दरमाणे ए के०) विहारकरता, (जुगंतरिदिछिणा के०) युगां तरे हिल्द करी, (दठवा के० देखवाने (डवडवचरिया ए के०) हमले हमले गित करता. (प्रमाददोसोण के०) प्रमाददोषधी (पणजूदजीवसताणं के०) प्राणीहपजितो नीसत्ताप्रत्ये, (उवघादोकदो वा के०) ज उपचात दोप धया होय. (कारिदोवा के०) कर्याहोय, (कीरंतोवा के.) कराज्या होय. (समणुमिण्दिं के०) अनुमोधाहोय, (त-स्स मिछामि दुक्कंडं के०) ने दुष्कृत पिध्याकरंछुं,

शार्दूलविक्रीडित वृत्तम् । श्लोकः

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् पादद्वयं ते प्रजाः हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसार घोरार्णवः। अत्यंतस्फुर दुग्ररिमनिकरव्याकीर्णं न्नूमंडलो ग्रैष्मःकारयतींदुपादसिखखच्छायानुरागंरविः॥४

जावार्थः--हे भगवन् ! प्रजाओ स्नेहयी तमारा वेचरणनी श्वरणे आवतीनथी पण जेशरणे आवेछे तेनुकारण विचित्रदुःखोना समृहयी भरेखो संसाररूप घोरसमुद्रज छे जेम स्फुरणायमान थना एवा पोताना घणा तीव्रकीरणोना समूर्थी सर्व भूमंडलने व्याप्त करतो एवो ब्रीष्म ऋतुनो सूर्य, लोकोने चंद्रनाकीरणो, जल अने छायानी उपर मीति उपजावे छे. ॥ ४॥

कुदाशीविषदष्टदुर्जयविषज्वाद्धावद्धीविक्रमी विद्याभेषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशांति यथा । तद्दते चरणारुणांबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् विष्ठाःकायविनायकाश्चसहसाशाम्यन्त्यद्दोविस्मग्रः ॥५॥

जावार्यः - कोध पामला सर्पनो दंश, दुर्जयविष, अग्निनी ज्वालानीश्रेणी अने विक्रम ए सर्व विद्या, आषध, मंत्र, जल अने ह्वनवदेकरीने जेम शांतिपामेले, तेम हेभगवन् तमारा बेचरणक्ष्य राताकमलनी स्तुतिकरवामां जेपुरुषो तत्परले, तेओना विद्यो तथा शरीरनारोगे। तत्काल शांतिपामेले ए मोदुं आश्र्येले ॥ ५॥ संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्हिगौरद्युते । पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडाः प्रयांति क्षयम्। उद्यद्वास्करविस्फुरत्करशत्व्याद्यातनिष्काशिता नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी॥६॥

जावार्थः - तपेला सुवर्णना पर्वतनी शोभानी स्पर्दा करनारी जेनीगौरकांति छे एवा हेभगवन्! जेम अनेक जातना माणीओना लोचननी कांतिने हरनारी रात्रि तत्काल उगता सूर्यना स्फुरणा-यमानथता सैंकडो कीरणोना न्याधातथी नाशपामेछे. तेम तमारा चरणमां मणाम करवाथी पुरुषोनी पीढाओ तत्काल क्षय पामी जायछे ॥ ६॥ त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यन्तरोद्दात्मका ब्रानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः को वा प्रस्वलतीह केन विधिना कालोग्रदावानला ब्र स्याचेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम्॥॥

जिर्थि:--हे प्रभु तमाराबेचरणकमलनी स्तुतिहप नदीनुंजो वारण न होततो आ कालहपी उग्र दावानल केने त्रैलोक्यना ईश्वर नो पण भंग करीने विजयने पामलोखे, जेनुं अत्यंत भयंकर हपछे अने जे नाना प्रकारना संकडो जन्मनी अंदर रहेला संसारीजीव-नी आगलज रहेलोछे, तेनाधी कयाविधिवडे कोणमाणी स्वलना पामेंछे. अर्थात् कोइपण पाणी ए काल हप दावानलमांथी मुकातो नथी. ॥७॥

खोकाखोकिनिरंतरप्रविततज्ञानैकमूर्ते विज्ञो नानारत्निपनद्धदण्डरुचिरश्वेतातपत्रत्रप। त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीम्नं दवंत्यामया दर्पाध्मातमृगेंद्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः८

जियिः -- आ लोकालोकने विषे निरंतर विस्तार पामेला क्षानांनी एक मूर्तिरूप अने अनेक जातना रत्नथी जिंदत एवा दंड वहे शोभायमान वण श्वेतल्योने धारणकरनारा हे भगवान्! गर्वे भरेला केश्वरीसिंहना भयंकर शब्दथी जैम वनना हाथीओ नाश्वी जयले, तेम तमारा वे चरण संबंधी पवित्र गीतना शब्दथी सर्व रोगो शींघ नाश पामेले।। ८।।

दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुत्तर्श्वानेरुचूडामणे भास्वद्वात्नदिवाकरयुतिहरप्राणीष्टन्नामण्डल। अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुर्छं त्यक्तोपमं शाश्वतं सौरव्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥९॥

भावार्थः दिव्यक्षीओना नेत्रोने आनंदआपनारा, मोटीक्रो-भावाला मेहपर्वतना ग्रुगटक्ष्प, प्रकाशमान वालप्त्यंनी कांतिने हर-नारा अने प्राणीओने इष्टले भामंडल जेतुं एवा हेप्रभु! तमारा बंने चरणकमलनी स्तुतिथी बाधावगरतुं, अचित्यसारवालुं, अतुल, अने अनुपम पुतुं शाश्वत ग्रुख प्राप्तथायले. ॥९॥

यावब्रोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निदाति भारश्रमं। यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवब्न स्यात्प्रसादोदय स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेणपापंमहत्॥१०॥

भावार्थः -हेभगवन्! ज्यांसुधी कांतिओनोसपूहरूप श्रीसूर्य प्रकाश करतो ऊदय पामतो नथी, त्यांसुधी कमलनुं वन निद्राना अतिभारनोश्रम धारण करेळे. तेवी रीते ज्यां सुधी तमारा वे चरण नो प्रसाद उदय पाम्यो नथी, त्यां सुधी आ जीवनिकाय प्रायः मोदुं पाप वहन करेळे॥ १०॥

शान्तिशान्तिजिनेन्द्रशान्तमनसस्वत्पादपद्माश्रयात् संप्राप्ताः एथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः। कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु त्वत्पादद्वयदेवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः॥११॥

भाव(र्थः--हेशान्तिजिनेन्द्र! आपृथ्वीतलनेविषे शांतिनाअर्था एवा घणांप्राणीओ, तमारा चरणकमलना आश्रयथी शांतमनवाला थइने शांतिन पामेलाके, तेथी हेविभु! तमाराचरणकमल जेनादेवता क अने आ सांत्यध्यकनो भक्तिथी पाठकरतो एवोजे हुंतमारी भक्त छुं तेनी जपर करुणाथी पसन्नदृष्टि करो. ॥११॥ अनुष्टुष् दृत्तं.

नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्द्धतकखिखात्मने। साखोकानां त्रिखोकानां यद्दिया दर्पणायते॥१२॥

जावार्थः--जनीविद्या आलोकसहित त्रणलोकने दर्पणनाजेवुं आचरण करेछे, एवा मलिनस्वरूपने दूरकरनारा श्री वर्द्धमानस्वा-मीने हुं नमस्कार कर्ष्कुं. ॥१२॥

जिनेंद्रमुन्मूिलतकम्मबन्धंप्रणम्यसन्मार्गकृतस्व रूपम् । अनंतबोधादिभवं गुणौघं कियाकलापं प्रकटं प्रवक्ष्ये॥ १३ ॥

जावार्थः - कमनाबंधने मूलथी उत्ते हिनार अने सन्मार्गमां पो-ताना स्वरूपनेकरनार एवा जिनंद्रभगवंतने मणामकरीने अनंतबो-धनी आदिमां उत्पन्नथयेला गुणनासमूहवाला सामायिकादि कि-याकलापने हुं प्रगटरीते कहीका. ॥ १३ ॥

गाया.

खमामि सव्वजीवाणं, सवे जीवा खमंतु मे।
भेती मे सवजूदेसु, वैरं मझं ए केएावि॥१॥
भवार्थः--(सवजीवाणं के०) सर्वजीवाने (खमामि
के०) समावृद्धं. (सवेजीवा के०) सर्वजीवाने (खमंतु
मे के०) मारीउपर समा करो मेर्रीमे सवजूदेसु के०)
सर्वभूत-माणीमात्रनी साथे मारे मैत्री हजो. (वैरं मऊं ए
केणवि के०) मारे कांइनी साथे वर हशो नहीं. ॥१॥

गाया.

रागबंधपदोसं च, हरिसं दीणजावयं । उस्सुगत्तं ज्ञयं सोगं, रदि मरिदं च वोस्सरे॥२॥

जावार्थः--रागवंधनोदोष, हर्ष, दीनता, चत्कंठापणुं, भय, अने श्लोक ते हुं इदयथी वोसराबुंखुं. ॥ २ ॥

गाया.

हा दुट्टकयं हा दुट्ट चिंतियं, भासियं च हा दुठूं। अंतो अंतो ऽघ्नम्मि, पछुत्ता वेण वेयंतो॥ ३॥

जावार्थः के दुष्टकामकर्युं होय, जे दुष्ट चितव्युंहोय, अने जे दुष्ट कांब्रुंहोय तेमज जे कांई गुप्तरीते दुष्ट कार्य ययुंहोय तेने हुं दुर छोडुंछुं. ॥३॥

दब्वे खेते काखे, जावे य कदा वराहसोहणयं । णिंदणगरहणजुत्तो,मणिवचिकाएणपडिकमणं ४।

जावार्थः-द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावने विषे कदी कोईनी निंदा गई। करिहोय तेने हुं मन, वचन अने कायायेकरीने पिट-कमुंछुं. ॥ ४॥

(अथकृत्यपातिज्ञा के०) हवे आकृत्यकरवानी प्रतिक्षा करेछे. (जगवन्नमस्ते क०) हे भगवन्! हुं तमने नमस्कार करुं छुं. (एषोऽहं देववंदनां कुर्याके०) आ हुं देव बंद-ना करुं (इति सामायिकस्वीकारः के०) ए प्रमाणे सामायिकनो स्वीकार करवो.

श्चोकः

समता सर्वभूतेषु संयमः शुज्जज्ञावना । आर्त्तरोदपरित्यागस्तब्धि सामायिकं व्रतम् ॥१॥

भावार्थः -- सर्वप्राणीडपर समता राखबी, संयमपालबी, शुभ भावना धरवी, आर्च अने रौद्रध्याननो परित्यागकरवो, ए सामा यिकत्रत कहेवायछे. ॥१॥

सिद्धंसम्पूर्णज्ञव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमम्। प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ॥ २॥ सुरेन्द्रमुकुटाश्ठिष्टपादपद्यांशुकेशरम्। प्रणमामि महावीरं खोकत्रितयमंगखम्॥३॥

भविर्थः-पोते सिद्ध्ययेला, भव्यअर्थथी संपूर्ण, सिद्धितं चतम कारणक्ष, श्रेष्टएवा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने प्रतिपादनकर नारा, जेना चरणकमलना कीरणक्ष्पी केश्वरा इंद्रोना प्रुगटनी साथे मलेलाले अने जेत्रणलोकमां मंगलक्ष्पले एवा महाबीर-भगवंतने हं प्रणामकहंतुं. ॥ ३ ॥

आदौ मध्येऽवसाने च, मंगलं जाषितं बुधैः । तजिनेंद्रगुणस्तोत्रं, तदविघ्नप्रसिद्धये ॥ ४ ॥

भावार्थः-- श्रारंभमां, मध्यमां, अने अंतमां मंगलाचरणकरवा ने विद्वानीए कहेलुंछे, तेथी निर्विद्यपणानी सिद्धियवाने अर्थे अर्ही जिनेंद्रभगवंतना गुणोर्नु स्तोत्र कहेलुं छे. ॥ १ ॥

विघ्राः प्राणुश्यन्ति ज्ञयं न जातु न क्षुद्रदेवाः परिलंघयंति ।

अर्थान् यथेष्टांश्च सदा रुभंते जिनोत्तमानां परिकीर्त्तनेन ॥ ५॥

भावार्थः--उत्तगतिर्थंकरोतुं कीर्त्तन करवाथी, विद्रो विनाज पामेछे, कदापि भय थतोनथी, इलकादेवनाओ पराभवकरता नथी, अने इच्छाप्रमाणे सर्वपदार्थी प्राप्तथायके. ॥ ५ ॥

सिद्धेन्यो निष्टितार्थेन्यो वरिष्टेभ्यः कृताद्रिः। अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं नमस्कुर्वे पुनः पुनः ॥६॥

भावार्थः सर्व अर्थने विषे निष्टावाला उत्तम सिद्ध पुरुषोने इच्छितअर्थनी मिद्धिने माटे हुं आदर्ग्यी वारंवार नमस्कार करुं ।। ६ ।।

आईमंगलकरणे, सिस्सा लहुपारया हवंतिति।
मन्मे अबुछिती, विज्ञाविज्ञाफलं चरमे ॥ ७॥
दुउण्णदं जहा जादं, बारसावत्तमेव य।
चदुस्सिरं तिमुद्धिं च, किरियंम्मं पउं जदे ॥८॥
किरियम्मं पिकरंतो, णहोदिकिरियम्मणिज्ञराजागी। बत्ती साणण्णदरं, साहूठाणं विराहंतो ॥९॥
तिविहंतियरणशुद्धं, मयरहियंदुविहगणपुण्यस्तं।
विण्णाकम्मविशुद्धं, किदिकम्महोदिकायद्यं १०

संस्कृत श्लोकाः ।

योग्यकाखासनस्थानमुदावर्त्तशिरोनतिः। विनयेन यथाजातः कृतीकर्मामखं जजेत् ॥१॥ भावार्यः न्यांग्यकाल, आसन, स्थान, मुद्रा, अने आवर्त्तवहं मस्तकने नमाइनार अने विनयवहे वर्त्तताएवो कृतार्थपुरुष निर्मल कर्मने भजेछे ॥१॥

स्नपनार्चास्तुतिजपान् साम्यार्थं प्रतिमाप्यते । युज्यां यथाम्नायमाद्यादृते संकल्पितेऽईति ॥२॥

जावार्थः -- प्रथम आदरकरेला अने संकल्पमां धारेला अईत भगवान्ने विषे, स्नान, अर्ज्ञी, स्तुति, जप. समना, कायोत्सर्ग अने तृष्ति हुं आम्नाय, प्रमाणे अर्थात् शास्त्रमर्यादा प्रमाणे जाहुं छुं। १३। एकत्वेन चरित्रजात्मिन मनोवाक्कायकर्म्मच्युते। केश्विद्धिक्रियते न जातु यतिवद्यद्वागिपि श्रावकः। येनाईच्छूति द्वानुपरिमयेवेयकं नीयते

भव्योऽप्यद्भुतवेज्ञवेऽत्रनमृजेत्सामायिकेकः सुर्धाः ॥३॥

जावार्थः -- जे बेकाल सामाधिकने करनारो श्रावक यतिनीपेठे पोताना आत्मामां मन, वचन अने कायानाकर्मथी रहित एवा पो ताना आत्मामां कोईपण किंद् विकारने करीशकतुंनथी अने जेना यी अईनश्रुतनालिंगने धरनारो पुरुष, प्रैवेयकनी उपर जायछे, ए बा ते अदमुतवेभववाळा वेकालना सामाधिकने कयो सद्बुध्धिवा-ळो भव्यपुरुष न आचरे. अधात उत्तमबुध्धिवाळो पुरुष तो अवस्य आचरे. ॥ ३ ॥

अथकृत्यविज्ञापना भगवनमोस्तु प्रसीदंतु प्रभुपादा वंदिष्येहमिति एपोहं सर्वसावद्ययोग विस्तोस्मिः (अथकृत्यविज्ञापनाके ०) हवे कत्य करवानी विज्ञापना करेछे. (जगवन् नमो ऽस्तु के ०) हे भगवन् हुं तमोने नमस्का रकहंखुं. (प्रसीदन्तु प्रजुपादाः के ०) आप प्र्यपादमभु प्रसन्नयाओ. (वंदिष्येऽह मिति के ०) हुं वंदनाकरिका. (ए षो ऽहं सर्वसावद्ययोगविरतो ऽस्मि के ०) आ हुं सर्व सावय योगयी विराम पाम्योछं ४ (अथ पार्वाङ्गिकदेववं दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकम्मक्षयार्थं जावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीचेत्यज्ञक्तिकायोत्स गं करोम्यहं के ०) हवे सवारनी देववंदनामां पूर्वाचार्यना अनुक्रमधी सकलकर्मना क्षयने अर्थे भावप्जावंदना अने स्तवनेस हित श्रीचेत्यभक्तिने माटे हुं कायोग्सर्ग करुछं ॥ ५॥ (णामो अवङ्गायाणं णामो लोए सवसाहूणं ॥१॥)

जावार्थः--अरिहन्तने नमस्कारहो, सिघ्धने नमस्कारहो, आ चित्रेने नमस्कारहो, अपृध्यायने नमस्कारहो, सर्वलोकनेविषे रहेला साधुओने नमस्कारहो.

चतारिमंगलं अरहंतमंगलं सिद्धमंगलं साहू मंगलं केवलीपण्यो धम्मोमंगलं चत्तारिलोगो तमा अरहंतलोगोत्तमा सिद्धलोगोत्तमा साहूलो गोत्तमा केवलिपण्यतो धम्मोलोगोत्तमा चत्तारि सरणंपवजामि अरहंतसरणंपवजामि सिद्धसर गांपवजामि साहूसरणंपवजामि केवलिपस्तो धम्मोसरगांपवजामि

चतारिं मंगलं अरहंतमंगलं सिद्धमंगलं साहू मंगलं केविलिपस्तो धम्मो मंगलं के०) केविल ए मक्षेलो धर्म ते मंगल छे. (चतारि लोगोत्तमा के०) च्यार लोकोत्तम छे. (अरहंतलोगोत्तमा के०) अरिहंत लोकोत्तम, (सिद्ध लोगोत्तमा के०) सिद्धलोकोत्तम, (सा हूलोगोत्तमा के०) साधु लोकोत्तम, (केविलिपण्णतो धम्मो लोगोत्तमा के०) केवलीए मक्षेलो धर्म लोकोत्तम (चतारि सरणं पवजामि के०) च्यार शरणे जाउं छुं. (अरहंत सरणं पवजामि के०) अरिहंतने शरणे जाउं छुं. (सिद्ध सरणं पवजामि के०) साधुने शरणे जाउं छुं. (साहु सरणां पवजामि के०) साधुने शरणे जाउं छुं. (केविलिपणत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि के०) केवलीए मक्षेला धर्मनी शरणे जाउं छुं.

अहाईदीवदो समुद्देमु पिषारस कम्मभूमीसु जावअरहंताणं ज्ञयवंताणं आदियराणं तित्थय राणं जिणाणं जिणोत्तमाणं केवित्याणं सिद्धा णं बुद्धाणं परिणिव्वुदाणं अंतयडाणं पारयडाणं धम्मायरियाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मवरचावरंगचक्कवट्टीणं देवाहिदेवाणं णाणा णं दंसणाणं चरित्ताणं सदा करोमि किरियम्मं करेमिन्नंते सामाइयंसावज्जजोगंपचरकामि जा वनीयमंतिविहेण मणसा विचया कायेण एक रेमि एकारेमि असंपि करंतंणसमणुमसामि तस्स भंते अइचारं पिडकमामि णिदामि गरहा मि अप्पाणं जाव अरहंताणं न्नयवंताणं एमो कारं पज्जुवासं करेमि तावकायं पावकम्मं डुच्च रियं वोस्सरामि

(अहाईदीवदीसमुद्देसुके०) अविद्वीपंबसमुद्द संवंधीने (पण्णरस कम्मभूमीसु के०) पनर कर्मभूमिक्षेत्रनेविषे रहेला (जावअरहंताणं क०) जेटला अरिहंतीने (भयवं ताणं के०) भगवंतीने (आदियराणं क०) द्वादशांगीने आदिने करनारने (तित्थयराणंक०) विर्धकरीने (जिणां णंक०) जिनेश्वरीने (जिणांत्तमाणं क०) जिनेश्वरीने (जिणांत्तमाणं क०) जिनेश्वरीने (जिणांत्तमाणं क०) जिनोत्तमने (केविद्याणं क०) केवलीने, (सिद्धाणं क०) सिध्यमे, (बुद्धाणं क०) वुध्यने, (परिणिवुदाणं क०) मोक्ष पामेलाने, (अंतयडाणं क०) अंतगड केवलीने, (पारयडाणं क०) पार पामेलाने, (धमायरियाणं क०) धर्मचार्यने (धम्मदेसयाणं क०) चतुविषसंघने द्वादत्रांगी रूप अमृतनोपानकरावनार ने (धम्मणायगाणं क०) धर्मनावायकने (धम्मवरचावरंग चक्कवद्वीणं क०)

मधान श्रेष्टछे चारगतिना अंतने करवाने विषे उत्तमचक्रवार्तसमा नने (देवाहिदेवासं के ०) देवाधिदेव, ने णाणाणंक.) बानने (दंसणाणं के०) दर्धनने (चरिताणं ल के o) चेरित्र ने (सदाकरोमि के o) है म्मेसा कर्त्र हैं, (किरियं मि के॰) करावुं हुं. (करेमि जंते सामाइयं के०) हे भदंत! हुं सामायिक कदं छुं (स-द्यसावज्जजोगं पञ्चरकामि जावँज्जीवं के०) हुं जावजीव सुधी सर्व सावद्ययोगना पचलाण करुंछुं. तिविहे ण के ०) त्रण मकारे करीने (मण्सा वचियाकायेण के०)मन, वचन अने कायाये करीने (एकरेमि एकारेमि असंपि करंतं एसमणुमणामि के०) हं करतोनथी, हुं करावतो नथी अने बीजो करतोहोय तेने अनुमोदना करतोनथी. (तस्सभंते अइचारं पडिक्कमामि के०) हे भदंत! ते अतिचारने हुं पतिक्रमुंछुं. शिंदामी के ०) निंदुछुं, (गरहा-मि के०) गर्डुछुं. (अप्पाणं जाव अरहंताणं ज्ञय-वंताएं णमोकारं पज्जुवासं करेमि के०) ज्यांस-थी अरिहंत भगवंतनानवकारना मुखथकी स्पष्टज्यार नकरं त्यां मुधी कायोत्सर्ग कहंछुं. (तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि के०) त्यांसुधी मारि काया अने पापकर्म तथा दुष्ट कृत्य बोसराबुंछुं. एटले त्याग कहंछुं

^{*}जिश्रावकहोय तेणें अहीं "जावनियमं " एम बोळबुं.

(जय अईणमो अरहंताणं जाप्य ९ दीयंते उ-च्छास २७।

ॐनमःपरमात्मनं नमोने कांताय संतायि चो-स्सामिहं।

जिण्वरे तिथ्थयरे केवली आणंतजिणे णरपवर खोयमहिए,विहुय रयमखे महप्पणे॥१॥

जिर्थि:--ॐकारनेनमस्कारहो परमात्माने अनेकांतने एकां-तने संतनेपत्ये हुं स्तुतिकरुंछुं जिनवरने तिर्थवरने केविल्ञअनंतिजन ने तथानरलोकतथाश्रेष्ट लोकमां पृत्य अने रजोमले रहित एवा म-हात्माने नमुंछुं.॥१॥

खोयस्सुज्ञोययरे, धम्मं तिष्ट्यंकरे जिऐवंदे । अरहंते कित्तिस्से, चउविसं चे व केविखणो॥२॥

भावार्थः -- लोकनेविषे उद्योत करनारा, धर्मप्रधानजेतीर्थ रूप एवा जिनभगवंतने हुं वंदनाकरूं लुं. अने कर्मरूप शत्रुने हणनारा जे अरिहंत तथा केवळज्ञानी चोबिशतीर्थंकरोत्तं हुं कीर्चन करिश्र ॥२॥ उसह मजियं च वंदे संभवमित्राणंदणं च । सुमइं च पोमप्पहं, सुपासं जिण्ं च चंदप्पहं वंदे॥३॥

भावार्थः--हषभदेव, अजितस्वामी, संभवनाथ, अभिनंदन
सुमितनाथ, पद्यपभ, सुपार्श्वनाथ, अने चंद्रपभुने हुं वंदना करुं छुं।।३।।
सुविहिंच पुष्फर्यंतं, सीयलसेयंसवासुपुज्जंच ।
विमलमणंतं ज्ञयंवं, धम्मंसंतिंच वंदामि ॥४॥
भावार्थः--सुविधिनाथ, पुष्पदंत, सीतल्लनाथ, श्रेयांस, वा

सूपूरव, विमलनाय, अनंतनाय, धर्मोनाथ, अने शांतिनाथ भगवं तने हुं बंदना करुंछुं ॥४॥

कुंथुं च जिण्विरिदं, अरं च मिल्लं च मुण्रीसुवयंच। णुमिंवंदे अरिष्टणोमिं तहपासं वहुमाण्च ॥ ५॥

जावार्यः--हंधुनाथ, अरनाथ, मिलनाथ, मिनसुवत, निम, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथा, अने वर्द्धमानस्वामी ने वंदना कर्म्छुं ॥५॥ एवमए अभिच्छुपा, विहुपरयमला । पहीणाजरमरणा, चउविसंपि जिण्यवरा तित्थरामे पसीयंतु ॥ ६ ॥

भावार्थः--एवा ते भिधुक, रजीमछेरहित, अने जरामरणे क-रीने रहित एवा चोविश तीर्थिकरो मने प्रसन्न थाओ ॥६॥ कित्तियवंदियमहिया, एदे खोगोत्तमा जिल्ला सिद्धा। आरोगाणाण्लाहं, दिंतु समाहिंच मे बोहिं॥७॥

जाविर्थः-- जोमनो महिमा की तिष्ये गायेलो छे एवा लोकने विषे उत्तम सिद्ध भगवंत मने आरोग्य तथा ज्ञाननो लाभ आपो अने समाधि तथा बोबि लाभ आपो ॥७॥

चंदेहिं णिम्मलयरा, आईचा उहियं पयासंता। सायरमिव गंजीरा, सिद्धा सिद्धिंमम दिशंतु ॥८॥

निर्मार्थः - चंद्रना जेवा निर्मल सर्वनुंहितकरनारा अने सा-गरना जेवा गंभिर एत्रा सिद्ध पुरुषो मने सिद्धि आयो. ॥ ८॥

यावंन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते ज्ञुवनत्रये । तावंति सततं ज्ञक्तया, त्रिःपरीत्य नमाम्यहं ॥१॥ जावार्थः--आ त्रण भुवनमां जेटला जिनचैत्यो छे, तेटला जिनचैत्योने, इंमेसा त्रण प्रदक्षिणा करीने भक्तियी हुं नमस्कार करुं हुं. ॥ १ ॥

हरिणीवृत्तम्.

जयित भगवान् हेमांभोज प्रचारविजृंभिता वमरमुकुटच्छायोद्गीर्ण प्रभापिरचुंबितौ । कखुषद्दया मानोद्ज्यान्ताः परस्परवैरिणो विगतकळुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विद्यश्वसुः ॥२॥

जावार्थः - सुवर्णना कमल उपर प्रचार करनारा अने नमता एवा देवताना सुगटनी कांतिने चुंबन करनारा एवा जेना वे चरणने प्राप्त करीने जे पुरुषो मिलन हृद्यवाला, मानथी भमेला अने परस्पर वेरवाला छे तेओ पण पाप रहित थड़ने परस्पर विश्वासी यायछे, एवा ते भगवान जय पामेछे. ॥२॥ तद्नु जयित श्रेयान् धर्माः प्रवृद्धमहोद्यः कुगति विपय होशाद्योऽसौ विपाशयित प्रजाः । परिणतनयस्यांगीभावाद्विविक्तविकल्पितं भवतु भवतस्त्रातृत्रेधा जिनेन्द्रवचोऽसृतं ॥ ३ ॥

जावार्थः - नठारी गतिरूप विपरीत मार्गना हेनाथी जे पजा ने छोडावेछे, एवो महोदयने वधारनारो श्रेष्ठ धर्म जय पामेछे. प-रिणत नयना अंगीभावथी विवेचन करेलुं, श्री जिनेंद्र भगवंतनुं त्रण प्रकारनुं वचनामृत तमारी रक्षा करनारुं थाओ ॥ १॥ तदनु जयताज्जेनी वित्तिः प्रभंगतरंगिणी प्रभवविगम ध्रोठयद्दठयस्वभावविभाविनी ।

निरूपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलं विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम् ॥४॥

जावार्थः--तेपछी अनेक भांगा (प्रकार) नी सरितारूप, अने चरपति निगम (विनाश) अने धौन्य ए त्रण प्रकारना द्रव्य स्वभानने जणावनारी ते जैननी ज्ञानसंपत्ति जयपामोः ने ज्ञानसंपत्ति निरुपमसुख, एटले मोक्षसुखनुं उघाडेलुं द्वारके ते रजोगुणरहित अविनाशी अने अन्यय एवा मोक्षने आयो ॥४॥

आर्पावृत्तम् ।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेज्यस्तथा च साधुज्यः। सर्वजगद्वंद्येज्यो, नमोऽस्तु सवर्त्र सर्वेज्यः॥१॥

जावार्थः-सर्वजगतनंबंदन करवायोग्य एवा अईत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व साधुने सर्वदा नमस्कारहो. ॥१॥ मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः विरहितरहस्कृतेभ्यः,पूजार्हेभ्यो नमोऽईद्भ्यः॥२॥

जावार्यः-मोहादिक सर्व दोपरूपी शत्रुओने नाश करनारा रजोगुणने हणनारा अने दुष्कृत्यरहित एवा पूजवायोग्य अर्हत भ-गवंतने हुं नमस्कार कहंछुं. ॥ २ ॥

क्षांत्यार्ज्जवादिगुणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं। शुज्जधामनि धातारं वंदे धर्म्मं जिनेंदोक्तम् ॥३॥

त्रिविर्यः - क्षांति सरस्रता विगेरे गुणोना समूहने संपादन करवामां साधनरूप, सर्व स्रोकोना हितनुं कारण अने शुभ तेजने वधारनार एवा जिनेंद्र भाषित धर्मने हुं वंदना करूं छुं. ॥ ३ ॥

मिथ्याज्ञानतमोवृत,लौकिकज्योतिरमितगमयोगि सांगोपांगमजेयं, जैनं वचनं सदावंदे ॥ ४ ॥

जावार्थः -- पिथ्या झानरूपी अंधकारथी व्याप्त एवा छोकने विषे ज्योतिरूप मानेकरिने रहित, कोइना योगे करिने रहित, अं ग उपांग सहित, अने जिती शकाय नहीं तेवां जैनवचनने हुं सदा बंदना करुं छुं. ॥ ४ ॥

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोक विश्वचैत्यानि । त्रिजगद्भिवंदितानां, त्रिधा वन्दे जिनेंद्राणाम्॥५॥

जावार्थः--भवन, विमान, ज्योति, व्यंतर अने नर एसर्वेना लोकमां रहेला एवा त्रण जगते वांदेला जिनेंद्रोना सर्व चैत्योने हुं मन, वचन अने कायावडे करीने वंदना करुंछुं. ॥ ५॥

भुवनत्रयेऽपि जुवनत्रयाधिपाभयद्दर्य तीर्थकर्तृणाम्। वंदे जवाग्रिशान्त्ये विजवानामाखयाखीस्ताः॥६॥

जावार्थः--संसाररहित त्रण भुवनना अधिपतिओए पूजवा योग्य एवा तीर्थंकरोनी त्रणभुवननां रहेली चैत्योनी ते श्रेणीओने, संसाररूप अग्निनी शांतिने अर्थे हुं बंदन करुंलुं.॥६॥ इति पञ्च महापुरुषाः प्रणुता जिनधर्म वचन चैत्यानि। चैत्यालयाश्च विमलां, दिशंतु बोधिं बुधजनेष्टाम्॥७॥

जिविर्धः- १९ प्रमाणे स्तुति करेला पंचपरमेष्टी पुरुषो, जिन धर्म, जिनतचन, जिनमतिर्विव, अने जिनचैत्य, ए मर्वे विद्वान पु-रुषोए इच्छेला निर्मल बोधने आपो ॥ ७ ॥

औपच्छंदसिकवृत्तम् ।

अकृतानिकृतानिचाप्रमेययुतिमंतियुतिमत्सुमंदिरेषु मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिंबानि जगत्रयेजिना नाम् ॥ १ ॥

जावार्थः कांतिवालाचैत्योमारहेला, अमभेय कांतिवहेशोभता, अने मनुष्यतथादेवताओए पूजेला एवा त्रणजगतना शास्तत अने स्थापित एवा जिनभगवंतना मितिविबोने हुं वंदना करंलुं ॥१॥ द्युतिमंडलजासुरांगयष्टीर्जुवनेषुत्रिषुज्जूतयप्रवत्ताः। वपुषाप्रतिमा जिनोत्तमानां प्रतिमाः प्रांजलिरस्मि वंदमानः ॥ २ ॥

भविर्थिः कांतिनामंड छथी जेमना अंगनी याच्छ प्रकाशमान छे, त्रण भुवनमां जेओ मोक्ष सपत्तिने अर्थ पवर्ते छी छै. अने शरीरथी जेमने कोइ उपमा आपीशकाती नथी, अवी जिनभगवा ननी प्रतिमाओने हुं अंजली जोडीने वंदना करुं छुं. ॥२॥

विगतायुधविकियाविज्रूषाःप्रकृतिस्थाःकृतिनांजिने श्वराणाम्

प्रतिमाः प्रतिमा गृहेषु कांत्याप्रांतेमाः कल्मषशां तयेऽभिवंदे ॥३॥

जिर्थि:--जेमणे शस्त्र विगरेनी विकियानी त्याम करेलोले, जेओनी पांसे वस्त्र आभूषण रहेता नथी तेथी खरेखरा पोताना म कृतिस्वरूपमां रहेली, अने चैत्योमां कांतिवढे करीन अनुपमपणे विराजती अवी कृतार्थ भगवंतनी प्रतिमाओने पापनि शांतिने माटे हुं वंदना करुंछ. ॥ ३॥

कथयन्ति कषायमुक्तिख्रध्मीं परयाशांततयाभवां-तकानाम् ।

प्रणमामि विशुद्धये जिनानां प्रतिरूपाण्यभिरूपमू-र्त्तिमंति ॥४॥

जावार्थः--जेओ संसारने नाशकरनारामुनिओ तथा पाणी ओने पोतानी उत्कृष्टशांतताथीकषायोनी मुक्तिरूपलक्ष्मीने कहेछे, एवा अभिरूप मुर्तिवाला भगवंतना प्रतिविवोने शुध्यिने अर्थे हुं प्रणामकरुंछुं।।।।।

यदिदं मम सिद्ध भक्तिनीतं सुकृतं दुःकृतवर्त्मनिरो धितेन,।

पदुना जिनधम्मं एव जिक्तभवताजन्मनि जन्मनि स्थिरा मे ॥५॥

जावार्थः--दुष्कृत (पाप) नामार्गनोरोधकरवाने चतुरएवार्षे सि ध्वपुरुषोनीभक्तिथा जे सुकृत संपादन करेलुं होय तो तेनाथी भ-वभवनेविषे मारी भक्ति जिनधर्ममांज स्थिरधाओ. ॥५॥

अनुष्दुप्

अर्हतां सर्वजावानां दर्शनज्ञान संपदाम् । कीर्त्तिपष्पामि चैत्यानि यथाबुद्धिविशुद्धये ॥१॥

भावार्थः - सर्वभावोनेजाणनारा, दर्शन तथा ज्ञाननी संपत्ति बाला अवा अईतभगवानना चैत्योतुं बृद्धिनी शुष्टिंघनेषाटे हुं कीर्त्तन करीश्च. ॥१॥ श्रीमद्भावनवासस्थाः स्वयंभासुरमूर्त्तयः। वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम् ॥२॥ भावार्थः-कोभायमान एवा भावनारूप मंदिरमारहेली, स्वाभावि कप्रकाशमान मूर्तिवाली प्रभुनीप्रतिमाओ वंदना करवाथी अमोने परमगतिआपोः ॥२॥

यावंति संति लोकेऽस्मित्रकृतानि कृतानि च। तानि सर्वाणि चैत्यानि वंदे भूयांसि जूतये ॥३॥

जावार्थः आ लोकमां जेटला साध्वत तथा स्थापित चैलोछे, ते सर्वघणाचैत्योनेसंपत्तिने अर्थे हुं वंदना कर्रे ॥ ३ ॥ ये व्यंतरविमानेषु स्थेयांसःप्रतिमागृहाः। ते च संख्यामतिक्रांताः संतु नो दोष शांतये ॥ ४॥

जावार्यः - व्यंतरोनाविमानोनीअंदर जे साश्वत प्रतिमाओना असंख्य चैत्योछे, तेचैत्यो अमारा दोषनीशांतिने अर्थे थाओ।॥४॥

ज्योतिषामय लोकस्य जूतयेऽद्रुतसंपदः। गृहाःस्वयंभुवःसंति विमानेषु नमामि तान् ॥५॥

जावार्थः -- ज्योतिषी देवताना लोकमां विमानोनेविषे समृद्धि नेअर्थे जे अद्भुतसंपत्तिवाला साथत चेत्यो रहेलाछे, तेओने हुं नमस्कार कहंतुं. ॥ ५॥

वंदे सुरिकरीटाग्रमिणिच्छायाभिषेचनम् । याःक्रमैरेव सेवंते तदर्चाः सिद्धिलब्ध्ये ॥६॥ भावार्थः-कं भगवंतनी श्रीमोओ हेवताना हुगटना अग्रभा गनामणिशोनी कांतिना अभिषेकने पोतानाचरणोथी सेन्याकरेछे, ते मितमाओने सिद्धिनीमाप्तिनेअर्थे हुं वंदना करुं ॥६॥ इति स्तुतिपद्यातीतश्रीभृतामर्हतां मम। चैत्यानामस्तु संकीर्त्तिः सर्वाश्रवनिरोधिनी ॥७॥

ज्ञावार्थः--स्तुतिनाविषयने उद्घंघन करनारी रुक्ष्मीने धारण करनारा एवा श्रीअईतभगवानना चैत्योनुं एपकारेकरेलुं संकीर्घन मारा सर्वशाश्रवनो निरोध करनारुं थाओ. ॥ ७॥

आर्याभेदवृत्तम् ।

अर्हन्महानदस्यत्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित पक्षालनेककारणमितिलौकिकुहकतीर्थमुत्तमती-र्थं॥१॥

जावार्थः--अर्हतभगवंतरूप मोटाधोनं एकतीर्थछे. तेतीर्थ त्रण भुवनना भव्यजनरूपी यात्रालुओना पापने धोवामां एककारणरूप होवाथी लौकिकतीर्थ कृत्रिमछे अने तेतीर्थ उत्तमछे.॥१॥ लोकालोकसृतत्त्वप्रत्ययबोधनसमर्थदिञ्यद्वानप्र-

त्यह्र वहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयं ॥२॥

भावार्थः - एतिर्थमां लोकालोक अने शुभतत्वनी प्रतीतिकर-नाराएवा बोधकरवाने समर्थएवुं दिच्यज्ञानरूपी प्रवाह हंमेसा वहा करे छे. एतीर्थने व्रत अने शीछ रूपी विश्वाल अने निर्मछ एवा बे कांडा छे. ॥ २ ॥

शुक्रध्यानस्तिमितस्थितराजदाजहंसराजितमशकृत्

स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्तिसिकता सु भगम् ॥३॥

त्रावार्थः ए अईतरुपी तीर्यमां शुक्रध्यानमां निश्चल यह र-हेला ब्रुनीरुपी राजहंसो शोभीरहेलाछे, तेमां स्वाध्यायरूपी मंदघोष यया करेछे अने अनेकजातना गुणो, पांचप्रकारनी समिति तथा प्र-णप्रकारनी गुप्तिरूपी रेतीवडे ए तीर्थ घणुं सुंदर जणायछे ॥ ३ ॥ क्षान्त्यावर्त्तसहस्रं, सर्वदयाविकचकुसुमविखसस्त्र तिकम् । दु:सहपरीषद्दाख्य दुततररंगत्तरंग नंगुर निकरम्

जावार्थः ए नीर्थमां क्षमारूपहजारो आवर्षके, सर्वभाणी उपर दयातेरूपी विकाशीपुष्पवाली लताओं छे, अने दुःसहपरीषहोरूपी चपल तरंगोंनी तेमां रचनाथायं छे।। ४।। ठयपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोषशैवलरहितम्। अत्यस्तमोहकर्द्दममतिदूरनिरस्तमरणमकरप्रकर म् ॥५॥

भावार्थः-ए तीर्थमां कषायरूपी फीण नथी, रागद्देषादिकदो
वरूपी शेवाल नथी, मोहरूपी कर्दम विनाश पाम्योछे अने मृत्युरूपमघरनो समूह अति दूरयीज अस्त यह गयोछे. ॥ ५ ॥
ऋषिवृषभस्तु।तिमंद्रोदेकितनिर्घोषविविधविहगध्वा
नं ।
विविधतपोनिधिपुलिनं साश्चवसंवरनिर्जरा निस्नव
गुम् ॥ ६ ॥

भावार्थः -- एतीर्यमां पुनिओए करेली श्री ऋषभभगवंतनी जे स्तुति तेनाशब्दना घोषरूपी पक्षीओना ध्वनि थया करेले. विविध जातना तपरूपी तेना कांठाले, अने आश्रव, संवर, तथा निर्जराष्ट्र-पी शरणा तेमांथी नीकल्या करेले. ॥६॥
गणाधरचक्रधरेंद्रप्रजृतिमहाज्ञठयपुंडरीकैः पुरुषेः। बहुभिः स्नातं जक्तया किल्विक खुषमलापकर्षणा र्थममेयं॥७॥

भावार्थः--गणधर, चक्रवर्त्ता, अने इंद्रविगेरे महाभव्यपुंडरीक पुरुषोए कलियुगना पापरूपमलने दूरकरवाने ए अमेय तीर्थमां भ-क्तियी स्नान करेलुं छे. ॥७॥

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितंदूरम्। व्यपहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वज्ञावज्ञावगभी रं॥८॥

भावार्थः-- ए परमपिवत्रकरनारुं, बीजाथी जितीशकायनहीं ते-बास्वभाव अने भावथी गंभिरएवुं तेतीर्थक्षे, तेमां स्नानकरवाने उ-तरेखा एवा मारा समस्त दुस्तरपापने दूर करो ॥ ८ ॥ पृथ्वीवृत्तम्.

अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवन्हेर्जयात् कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोदेकतः। विषादमदद्दानितः प्रहसितायमानं सदा मुखं कथयतीव ते दृदयशुद्धिमात्यंतिकीम् ॥१॥ भावार्थः-हे मभु! सर्वकोपली अभिनो जयकरवाथी अरक्त एवा नेत्रकमळवालु, अविकारना अधिकपणाथी कटाक्षरूपी बाणना मोक्षे करीने रहितएवं अने खेद तथा मदनीहानीवढे हमेशा हास्य करतुं एवं तमारुं मुल इदयनी अत्यंत शुद्धिने कही आपेछे।। १।। निराजरणाजासुरं विगतरागवेगोदया निरायुधसानिर्ज्ञयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात् निरायुधसुनिर्ज्ञयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात् निरामिषसुतृष्तिमद्विविधवेदनानां क्षयात् ॥२॥

जावार्थः -ह भगवन ! तमारु प केने रागनावेगनो उदय
नाभ्यामवाथी आभूषणरहितछतां मकाभ्यानछे, मकृति प्रवा निर्दो
षणणाथी दिगंबरछतांने मनोहरछे, हिंसाकरवायोग्य अने हिंसा प
वे क्रम नहावाथी भस्तरहित छतांने निर्भयछे अने विविध मकारनी
वेदनानो भयथवाथी भोगरहितछतां जेतृष्ति पामेळुं छे. ॥२॥
मितस्थित नखांगजं गतरजोम खस्पर्शनम्
नवांबु रु इंदन प्रतिमदि व्यगंधोदयम्।
रवींदुकु लिशादिपुण्यब हु लक्षणा खंकृतम्
दिवाकर सहस्रजासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥३॥

भावार्थः--हेभगवन्! तमारुख्पके जेमां नख अने केश प्रमाणर्थाज रहेलाछे, जेने रजोमलनो स्पर्शपणयतो नथी, जेमां नदीन
कमल तथा चंदनना जेवादिच्य गंधनो उदय यायछे, जे सूर्य, चंद्र
तथा वज्र विगेरेना घणापवित्रलक्षणोथी अलंकृतछे, जे इजारो सुयोंना जेवुं प्रकाशमान छे अने जे नेत्रोने घणुं प्रिय लागेछे.॥३॥
हितार्थपरिपंथिभिः प्रवासरागमोहादिभिः
कर्खिकितमना जनो यद्भिवीक्ष्य शोशुध्यते॥

सदाभिमुखमेव यज्जगति पञ्यतां सर्वतः शरद्विमखचंद्रमंडखमिवोत्थितं दृश्यते ॥ ४ ॥

भावार्थः -- हित अर्थना शत्रुरूप एवा रागमोहादिकवहे जेतुंमन कलंकितथयेलुंछे एवो माणस जे रूपने जोवाथी अतिशे शुद्धथइजाय छे अने आ जगतमां जे रूपने जोनारा माणसोने तेरूप शरद ऋतुना निर्मल चंद्रमंडलनी जेम सदा सन्मुख उदय पामेलुं जणाय छे. ॥४॥

तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामाणि स्फुरित्करणचुंबनीयचरणारविंदद्वयम् । पुनातु भगवन् जिनेन्द्र तवरूपमंधीकृतं जगत्सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः ॥ ५॥

जिर्थः --हेजिनेंद्र भगवन् ! इंद्रोना चलायमान ग्रुगटनी पं-क्तिओना मणिना किरणोथी जेनुं चरणकमलनुं युगल चुंबनकरवा योग्यछे एवुं तमारुंक्प, अन्यतीथे तथा अन्यगुरुना संगरूप दोषना चद्यथी अंध्ययेला आ सर्वजगतने पवित्र करो. ॥ ५ ॥

स्रग्धरावृत्तम्।

मानस्तंनाः सरांसि प्रविमलजलसत्खातिका पुष्प वाटी

प्राकारो नाट्यशाखा द्वितयमुपवनं वेदिकांत ध्वं जाध्वाः ।

सालः कल्पद्यमाणां सुपरिवृतिवनंस्तूपहर्म्यावलीच प्राकारः स्फाटिकोंतर्नृसुरमुनिसभा पीठिकाग्रेस्व-यंजूः ॥ ६॥ जावार्थः-मानस्तंभ, सरोवरो, निर्मलजलनीखाई, पुष्पोनी वादी, किल्लो, बेनाट्यशाला, उपवन, वेदिका अंदर ध्वजाओ, सा ल, सारीवाडवालु कल्पदृक्षोतुंवन, स्तूप, हवेलीओनीपंक्ति, स्फा-टिकमणिनो किल्लो, तेनी अंदर मनुष्य, देव अने मुनिओनी सभा अने तेपली पीठिका तेनी आगल स्वयंभू भगवान रहेलाले. ॥६॥

नताखंडलमोलीनां यत्पादनखमंडलम् । खंडेंदुशेखरीजूतं नमस्तस्मै स्वयंज्जवे ॥ ७ ॥

जावार्थः--जेमना चरणनखनुं मंदल नमता एवा इंद्रना ग्रुग-टोने अर्द्धचंद्रशेखर (अर्द्धचंद्रजेना शेखर-ग्रुगटमां छे एवा शंकर) रूप थयेलुं छे ते स्वयंभू भगयंतने नमस्कार छे.॥ ७॥

इन्द्रवजावृत्तम्।

चंद्रपञ्जं चंद्रमरीचिगौरं चंद्रहितीयं जगतीवकांतम्। वंदेऽभिवंदां महतामृषींद्रं जिनं जितस्वांतकषायब न्धम् ॥ १ ॥

जावार्थः - चंद्रनी कीरणोना जेवा गौर तेथी जाणे जगत-मां बीजो चंद्र होय तेवा मनोहर, मोटा पुरुषोने वंदन करवा योग्य अने इदय तथा कषायना बंधने जितनारा ऋषीओना इंद्र चंद्रप्रभप्रभुने हुं वंदना करुंछे. ॥ १॥

यस्यांगलक्ष्मीपरिवेषभीत्रं तमस्तमोऽरेरिव रिम-भित्रं। ननाज्ञ बाह्यं बहु मानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भित्रं॥२॥ नावार्थः - मूर्यनाकीरणोथी भेदपामेलुं क्येम बाहेरनुं अंधका र नाश्चपामी जायले, तेम जेना अंगना परिवेष (भामंडल) थी भेद पामेलुं बाहेरतुं अंथकार अने ध्यानरूपी दीपकना प्रकाशथी भेदपामेलुं अंतरतुं बहु अंधकार नाश पामी जायले. ॥२॥

स्वपक्षसोरियत्यमदाविष्ता वाक्सिंहनादैविमदा बजूबुः।

प्रवादिनो यस्य मदार्दगंडा गजा यथा केसरिएो निनादैः ॥ ३ ॥

जावार्थः--मद्वढं जेमना गंडस्थल आई छ एवा हस्तीओ के-श्वरीसिंहना नादवडे जेम मद्रहित थइजाय तेम पाताना पक्षनी स्थितिना मद्दवडे गर्वकरता एवा वादीपुरूषो जे भगवंतनीवाणीकप सिंहनादथी मद्रहित थयेला छे. ॥ ३॥

यः सर्वखोके परमेष्टितायाः पदं बजुवाद्भुतकर्मा तेजाः।

अनंतधामाक्षरविश्वचक्षुः समंतदुःखक्षयशासनश्च ॥ ४॥

जावार्थः -- अद्भुतकर्म्मरुप तेजने धरनारा, अनंतधाम, अक्षर (अविनाशी) विश्वनाचक्षुरुप अने जेमनुं शासन अनंतदुः खनेक्षय करनारुं छे, एवा जे प्रभु सर्व लोकमां परमेष्टी पदनुं स्थानदृप थ-येला छे. ॥ ४॥

सचंद्रमाभव्यकुमुद्धतीनांविपब्रद्दोषाञ्चकलंकलेपः। व्याकोशवाग्न्यायमयूखजालः पूर्यात्पवित्रो भगवा न्मनो मे ॥ ५ ॥ जिर्थि:-विनाशपोमेला दोषरूप आकाश कलंकना लेपेक-रीने रहित अने जेने न्यायवाणीरूप विकाशीकीरणोनुं जालके ए-वा भव्यजनरूपी पोयणाना पुष्पने खीलावनार चंद्ररूपी पवित्रभग वान् मारा मनने पवित्र करो. ॥ ५॥

जयंमालगायाः

वत्ताणुठाणें, जणुधणुदाणे, पइं, पासिउ, तुहु, खत्तधरु, तव चरणविहाणें, केवलणाणे, तुहु, परमप्पउ, परमपरु ॥ छू ॥

जयिरसह, रिसीसरणिमियपाय, जय अजियजियंगयरोसराय। जय संभव संजवकयविउय
। जय अहिणंदण णंदियपउय। जय सुमइ सुमइसुम्मपयास। जय पउमप्पह पउमाणिवास।
जय जय हि सुपास सुपासगत। जय चंदप्पह
चंदाहवत जय पुष्पयंत दंतंतरंग। जय सीयख
सीयखवयणभंग। जय सेय सेयिकरणोहसुजा।
जय वासुपुज पुजाणपुजा। जय विमख विमल
गुणसेढिठाण जय जय हि अणंत णंतणाण।
जय धम्म धम्मतित्थयर संत। जय, संति विहि
यायवत्त जय कुंथु कुंथुपहुआंगि सुदय। जय
अर हअरमाहरविहियसमय। जय मिस्ति मिस्लि

^{*} आ जयमालगाथानो अर्थ सुलभ छे तेथी ग्रंथ विस्तार थवाना भयथी लख्यो नथी.

आदामगंध। जय मुनिसुवय सुवयिषांबंध। जय णिम णिमियामरिणयरसामि। जय णिम धम्म रहचक्कणोमि। जय पास पासिछंदिणिकिवाण। जय वहुमाण जसवहुमाण। घता इय जाणिय णामहें। दुरियविरामहें। परिहंविणिमिय सुरा-विलेहें। आणिहिणिहिं। आणाइहिं। समियकु-वाइहिं। पणिविवि। अरहंताविलेहें॥ छ्॥

उपजातिवृत्तम्

वर्षेषु वर्षातरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु । यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिन पुंगवानाम् ॥ १ ॥

भावार्थः -भरतादिक सर्वखंडोमां, वर्षधरपर्वतोमां, नंदीश्व-रमां मंदरगिरिमां अने आछोकमां जेटला श्रीतिर्धिकरोना चैत्यस्था नोछे, ते सर्वेने हुं वंदना करुंछुं. ।। १।।

मालिनीवृत्तम् । अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां वनज्ञवनगतानां दिव्यवेमानिकानाम् । इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानाम् जिनवर निल्लयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥२॥ जावार्थः--पृथ्वी उपर रहेला, शास्त तथा स्थापितकरेला, बन अने भवनमां रहेला, दिव्यविमानोनीअंदररहेला, इंद्रोए पूर्ज- ला अने आलोकमां मनुष्योए करेला एवा श्रीजिनेश्वर भगवंतना चैत्योनुं हुं भावथी स्मरण कहंलुं. ॥२॥

शार्दूखविकीडितवृत्तम् ।

जंबूधातिकपुष्करार्द्वसुधाक्षेत्रत्रये ये जवा श्वंदांजोजशिखंडिकंठकनकपावृड्घनाभाजिनाः। सम्यग् ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकम्मेंधनाः भूतानागतवर्त्तमानसमये तेभ्योजिनेभ्योनमः॥३॥

जावार्थः- जब्दीप, धातिकखंड अने पुष्करार्द्ध एत्रणपृथ्वीनाक्षेत्रोनेविषे उत्पन्नथयेला, चंद्र, कमल, मयूरकंठ, सुवर्ण अने व
र्षाऋतुना मेघनाजेवी कांतिवाला, सम्यक्ज्ञान अने चिरत्रना लक्ष
णोने घरनारा अने अष्टकर्मरुपी इंघणाने जेओये बालीनाख्याछे,
एवाते जिनभगवंतोने भूत, भविष्य अने वर्त्तमानकालमां हुं नमस्कार
करुंछुं. ॥ ३॥

स्रग्धरावृत्तम्।

श्रीमन्मेरी कुलादी रजतिगरिवरे शाल्मलीजंबुवृक्षे वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररूचके कुंडलेमानुषांके । इक्ष्वाकारेंऽजनादी दिधमुखिशखरे व्यंतरे स्व-र्गलोके

ज्योतिर्लोकेऽजिवंदे जुवनमहितले यानि चैत्या नि तानि ॥ ४ ॥

भावार्थः --श्री-शोभावालामेरूपर्वतने विषे, कुल्पर्वतनेविषे, रजतिगारिनोविषे, शाल्मिल्हिसनेविषे, जंब्रूहसनेविषे, वसारपर्वतने विषे, चैत्यहसनेविषे, रतिकरपर्वतनेविषे, रूचकाद्रिनेविषे, कुंडल- गिरिनेविषे, मानुषोत्तरनेविषे, इक्ष्वाकारपर्वतनेविषे, अंजनामिरिने विषे, दिश्वस्वनाशिखरनेविषे, व्यंतरलोकने विषे, स्वर्गलोकनेषि॰ षे, ज्योतिषलोकनेविषे, अने भुवनपृथ्वीतलने विषे जेंटलां चैत्यो छे, तेटलाने हुं बंदना कर्द्रां ।। ४॥

वसंततिखकावृत्तम्।

देवासुरेंद्रनरनागसमर्ज्ञितेज्यः पापप्रणाशकरज्ञ व्यमनोहरेभ्यः।

घंटाध्वजादिपरिवारविजूषितेज्यो नित्यं नमो ज गति सर्वजिनाखयेज्यः ॥५॥

जावार्थः-देवतानाइंद्रोष, असुरोनाइंद्रोये नर तथा नागदेव ताओए पूजनकरेला, पापनोनाञ्चकरनारा, भन्य, मनोहर अने धं-टाध्वजविगेरेना परिवारथी विभूषित एवा जगतमां सर्वजिनालयो-ने हुं नित्ये नमस्कार करुं हुं ॥ ५ ॥

शार्दूलविकीडितवृत्तम् । द्रो कुंदेंदुतुषारद्दारधवली, द्वाविंदनीलप्रभी द्रो बंधूकसमप्रजी जिनवृषी द्वो च प्रियंगुप्रभी । शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रजा स्ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥ ६ ॥

जावार्थः न्वे तीर्थकर (चंद्रमभु तथा स्रुविधिनाय) कुंद होल रनुपुष्प, चंद्र, बरफ अने मोतिनाहारनाजेवा उज्वलछे. वे तीर्थकर (मल्लीनाथ पार्श्वनाय) इंद्रनीलमणिनाजेवा वर्णवाला छे. वे तीर्थकर (पद्ममभु तथा वासुपृज्य) बंधूक (बपोरीया) ना पुष्पना जेवा छे. वे तीर्थंकर (म्रुनिम्चत्रत तथा नेमनाथ) प्रियंगुपुष्पनाजेवीकांतिबालां अने बाकीना सोल तीर्थंकरो तपेलामुवर्णनाजेवाकांतिवालां एवा ते जन्ममृत्युएरहित, ज्ञानना सूर्यजेवा अने देवताओए स्तुनिकरेला सर्व तीर्थंकरो अमोने सिद्धि आपो. ॥६॥

इछामिन्नंते चेईयभित्तकाउसग्गो कउ । त-स्सालोचें अहलोयितिरयलोय उद्वलीयिम किष्टिमिकिष्टिमाणि । जाणि चेइयाणि ताणि सवाणि तीसुविलोएसु भवणवासिय वाणिवें-तर जोइसिय कप्पवासियित चउविहादेवा सप रिवारा दिवेण गंधेण । दिवेण पुष्केण । दिवेण धूवेण दिवेण चुण्णेण । दिवेहिं वासेहिं । दिवेहिं एहाणोहिं णिच्चकालं अचंति । पूजंति वंदंति ण मंसंति । अहमिव इहसंतो तत्यसंतांई णिचका लं अचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि । दुस्क-म्क्कउ कम्मम्कउ । बोहिलाहो सुगइगमणं स-माहिमरणं जिणागुणसंपत्तिहोउ मञ्जं ॥ ॥

जावार्थः - हेभदंत! हुं चैत्यभक्ति अने काउसग करवाने इ-च्छुछुं तथा आलोचना करवाने इच्छुंछुं, जे अधोलोक, तिर्येचलो क, तथा उर्ध्वलोकमां शाश्वत अने स्थापित एवा जेजे जिनचैत्यो छे, तेओने सर्व त्रणलोकमां भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी अने कल्पवासी एच्यारमकारना देवताओ परिवारसहित दि-व्यगंधथी, दिव्यपुष्पथी, दिव्यपुष्थी, दिव्यचूर्णथी, दि- व्यवासथी अने दिव्यद्रव्यथी त्रणकाल अर्चा करेले, पूजन करेले, वंदनाकरेले, अने नमस्कार करेले, तेयज जे जिनमितमां तेओमां रहेलोले तेमनी हुं त्रणकाल अर्चा करुंलें, पूजा करुंलें, वंदना करुंलें, अने नमस्कारकरुंलें. एप्रमाणेकरवाथी अमोने दुःखनोक्षय, कर्मनो क्षय, वोधिलाभ, सारीगितमां गमन, समाधिथी मरण अने जिन-गुणनी प्राप्ति याओं

अय पूर्वाङ्गिकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं पं-चगुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ॥

भविर्थः -- हवे दिवसनामथमभागमां देववंदनाकरवानेविषे पूर्व आचार्यना अनुक्रमथी सर्वकर्मनाक्षयने अर्थे भावपूजा अने वंदना करवाना स्तवनसहित पंचगुरुभक्तिरूप कायोत्सर्ग हुं करूं छुं.

(नमोअरहंताणीमत्यादि नते।थोस्सामि इत्यादि पठनीयं)

भावार्थः--'णमोर्अर्हताणं' त्यांथीते 'ततोथोस्सामि' त्यांग्रुची अहीं भणीजनुं.

अनुष्टुप्.

प्रतिहार्येर्जिनान् सिद्धान् गुणैः सूरीन् सुमातृभिः । पाठकान् विनयैः साधून् योगांगैश्वाष्टाभिस्तुवे ॥१॥

भविर्थः--आठमकारना प्रातिहार्यथी जिनभगवंतने, गुणो-थी सिद्धपुरूषोने, तथा स्ररीओने मातृका-शब्दोत्पादक व्युत्पत्ति-थी पाठकोने अने विनयथी तथा आठमकारना योगनाअंगोधी सा-धुओने हुं स्तुतिकरूंछुं. ॥ १ ॥

गार्थौ ।

मणुयणा इंदसुरधरियत्थत्तत्तया पंचकञ्चाणा-सुखावळीपत्तया। दंसणं णाणुं झाणुं अणुंतं-बलं ते जिएा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ॥१॥ जेहिं झाणेहिं बाणेहिं अइथट्टयं । जन्मजर मर-णाणयरत्तयं दृष्टयं। जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठा-णयं ते महं दिंतु सिद्धा वरं णास्यं ॥ २ ॥ पं-चहाचारपंचिंगिसंसाहयावारसं गांइं सुयजलहि-अवगाइया । मोरकलछीमइंती महंतेसया सु-रिणो दिंतु मेास्कं गया संगया ॥ ३॥ घोरसं-सारभीमाडवीकाणासे तिरकवियरालणहपा-वपंवाणणे । ण्ठमग्गाण्जीवाण्पहदेसया वं-दिमो ते उवझाय अम्हेसया ॥ ४ ॥ उग्गतव-चरस्किरसे हि झाणं गय धम्मवरझा तासुकेक-झासुं गया। णिझरं तव सिरीए समालिंगया साहवो ते महं मोस्कपहमग्गया । एए। थोत्रेए। जो पंचगुरुवंदए गरूयसंसार घणु वेञ्लि सोछिं• दए लहइ सो सिद्धिसोस्कइं बहुमाणएां कुण-इ कम्मिधसं पुंजपज्जलसं ॥ ५ ॥ अरुहासि-

[.] आ छ गायाना अर्थमां विश्वेषजाणवानुंनथी तेयी भावार्थ लच्यो नथी.

द्धा इरिया उझाया साहुपंचपरमेठी । एयाणणा-मोक्कारा भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ ६ ॥

इछामि मंते पंचगुरुभतिकाउसगो कउ। त-स्सालोचेउ। अठमहापाडिहेरसंजुताणं अरहं-ताणं। अठगुणसंपूष्णाणं उह्वलोयमत्छयम्मि प-यठियाणं सिद्धाणं अठपवयणमाउसंजुत्ताणं आ-इरियाणं। आयारादिसुदणाणो वदेसयाणं उव-क्रायाणं तिरयणगुणपालण्रयाणं सबसाहूणं। णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि। वंदामि णमंसामि। दुस्कस्कउ कम्मरकउ बोहिलाहो सुगइगम-णं समाहिमरणं। जिणागुणसंपत्ति होउ मझ्या।

निविधि:-हेभदंत! पंचगुरुभिक्तिकायोत्सर्गकरवाने तथा तनी आलोचना करवाने हुं इच्छुंछं, अष्ट महा प्रातिहार्येकरिने युक्त
एवा अरिअंत भगवंतने, अष्टगुणथी संपूर्ण एवा अने उर्द्ध लोकमां
स्थानवाला सिद्धोने, आठमवचनमार्गथीयुक्त एवा आचार्योने, आ
चारादिकनाशुद्ध ज्ञानने उपदेश करनारा एवा उपाध्यायजीने अने
ज्ञान, दर्शन तथा चारित्ररूप त्रण रत्नना गुणोने पालवामां तत्पर
एवा सर्व साधुओने हुं त्रणेकाल अर्चुछं, पृजुछं, वंदुछं, अने नमस्कार करुंछं, तथी मारे दुःखनोक्षय, कर्मनोक्षय, वोधिलाभ, सारी
गतिमांगमन, समाधिधीमरण अने जिनगुणोनी प्राप्ति थाओ.

अथ पूर्वाह्विकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षयार्थं जावपूजा वंदना स्तवसमेतं शांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ॥ ॥ भावार्थः-- हवे दिवसनाप्रथमभागमां देववंदनानेविषे पूर्वाचा-र्यना अनुक्रमथी सर्वकर्मनोक्षय करवाने अर्थे भावपूजा वंदनाना स्तवनसहित शांतिभक्तिकायोत्सर्गने हुं करुंछुं ।।

('णमोअरहंताणमित्यादि पठनीयं'। भावार्थः-'णमो अरहंता णं' इत्यादिक पूर्वनी जेम अहीं भणीजवुं.

दोधक वृत्तम्।

शांतिजिनं शशिनिर्मखवक्रं शीखगुण्वतसंयम पात्रम् । अष्टशतार्चितखक्षणगात्रं नौमि जिनो-त्तममंबुजनेत्रम् ॥ १॥

जावार्थः चंद्रनाजेवा निर्मल ग्रुखवाला, शीलगुण, वत तथा संयमनुंपात्ररूप, गात्रमां एकसोने आठलक्षणोवाला, अने कमलना जेवा नेत्रवाला सर्वजिनोत्तम श्री शांतिनाथ भगवंतने हुं नमस्कार करुं ।। १।।

पंचममीप्सितचक्रधराणां पूजितिमंदनरेन्द्रगणैश्व। शांतिकरं गणशांतिमभीष्सुः षोडशतीर्थकरं प्र-णमामि ॥ २ ॥

भावार्थः-इच्छितमनोरय आपनारा चक्रवर्तीओमां पांचमा, इंद्रनरेंद्रोना समूहेपूजेला अने शांतिनेकरनारा षोल्मां तीर्थंकर श्री शांतिनाय भगवंतने गणनीशांतिनीइच्छायी हुं मणाम कहंछुं।।२॥ दिव्यतकः सुरपुष्पसुवृष्टिदुंदुभिरासनयोजनघोषौ । आतपवारणाचामरयुग्मे यस्य विज्ञाति च मंडख्न-तेजः ॥ ३ ॥ भावार्थ-दिव्यहक्ष, देवपुष्पोनीहृष्टि, दुंहुभि, आसन, योज-नसुधीघोष(नाद) छत्र, बे चामर अने भामंडल जेनी पांसे शोभी रह्याछे. ॥ ३ ॥

तं जगदर्चितशांतिजिनेंदं शांतिकरं शिरसा प्रण-मामि। सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्ममरं पठ-ते परमं च ॥ ४ ॥

भावार्थ-सर्व जगतमां पूजायेला, अने शांतिनेकरनारा श्री शांतिजिनेंद्र भगवानने हुं मस्तकथी प्रणामकरुंछुं एशांतिनाथप्रभु सर्वगण(संघ)ने तथा मने परमशांतिने तत्काल आपो. ॥ ४ ॥

वसंततिखका.

येभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः शक्रादिभिः सु-रगणैस्तुतपादपद्माः । तेमे जिनाः प्रवरवंशजग-त्प्रदीपास्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु॥ ५॥

भावार्थ-इंद्रादिकोए मुगट, कुंडल, हार अने रत्नोथी जेओ-नी पूजा करेलीछे अने देवताओना गणोए जेमना चरण कमलनी स्तुतिकरेलीछे अने जेओ पोताना उत्तमवंश्व तथा जगतमां दीपक-रूपछे, एवा ते तीर्थकराजिनभगवंत मने हंमेसा शांति करनारा याओः ॥ ५ ॥

उपजाति वृत्तम् । संपूजकानां प्रतिपाद्धकानां यतीन्द्रसामान्यत-पोधनानाम् । देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ॥ ६ ॥ भावार्थ--पूजनकरनाराने पालनकरनाराने वर्ताद्रोने, साया-न्वतपस्वीओने, देश्वने, राष्ट्रने, नगरने अने राजाने श्री जिनेंद्र भगवान् शांतिकरो. ॥ ६ ॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्ठिर्दिव्यध्वनिश्वामरमास-नश्च । भामंडलं दुंदुजिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ ७॥

भावार्थः--अज्ञोकद्यक्ष, देवतानी पुष्पद्यष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल, दुंदुभिनाद, अने माथे छत्र ए आठ श्रीजिनभगवंतना प्रातिहार्यके ॥ ७॥

स्रग्धरा वृत्तम्।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रज्ञवतु बलवान् धार्मिको जू-मिपाद्धः काले काले च सम्यक् किरतु च म-घवान् व्याधयो यांतु नाशम् । दुर्मिक्षं चौरमा-री क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रज्ञवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥८॥

जावार्थः--सर्वप्रजाओनुं कुशल थाओ. राजा धार्मिक अने बलवान् थाओ. पोताने समये आवीने बरसाद सारीरीते दृष्टि क रो. न्याधिओ नाशपामोः जगतमां जीवलोकनेविषे दुकाल, चोरी के मारी (रोगोपद्रव) क्षणवारपण न थाओ अने सर्वस्रुखने आपना कं जिनेश्वरनुं धर्मचक्र इंमेसा समर्थपणे प्रवर्त्तोः ॥८॥

प्रध्वस्तघातिकम्मीणः केवलज्ञानन्नास्कराः । कुर्वतु जगतः शांतिं वृषन्नाद्या जिनेश्वराः ॥ ९॥ जावार्यः - चातिकर्मने नाशकरनारा, केवल्यानने मकाशकर-नार सूर्यक्प, एवा श्रीष्टपभादिक चोविश्वतीर्थकरो जगतमां शांति करो. ॥९॥

इन्छामि जंते चडिवशितित्ययरभित काउस्सग्गे कड तस्साखोचेड पंचमहाक छाण संपण्णाणं अठ महापाडिहेरसिह्याणं चडितीस अतिशयिवसेससं जुताणं बत्तीसदेविंदमिण मडडमछ्यमिह्याणं ब-खदेववासुदेव चक्कहरितिमुणि जङ्आणागारोव-गूढाणं थुइसयसयसहस्सणिखयाणं उसहाइवीर पिछममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पू-जेमि वंदािम णमंसािम दुस्कस्कड कम्मस्कड बोहिलाहो सुगङ्गमणं समाहिमरणं जिणगुणसं पतिहोड मझं।।

जावार्यः --हे भदंत! चोविश्वतीर्थंकरोनी भक्ति करवाने तथा तेमनी आछोचना करवाने हुं इच्छुंछुं. पंचमहाकल्याणेकरी संपन्न, आठमहाप्रातिहार्थेकरी सहित चोत्रिश्वअतिश्वयोथी युक्त, बत्रीश्वम-कारनाइंद्रो तथाछत्रधारी राजाओथी पूजायेछा, बळदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती, रूपीओ, सुनिओ, यतिओ, अने अणगारोए सेवेळा, सै कढोअनेहजारोस्तुतिओथीस्तुतिकरायेछाएवा ऋषभादिकथी वीर-भगवंतसुधी सर्वमंगळकारीमहापुहचोने त्रणेकाछ हुं अर्चुछुं, पूजुछुं, वंदुछुं, अने नमह्कार करुंछुं. तेथी दुःखनो क्षय, कर्म्मनोक्षय, बोधिलाभ, सारीगतिमां गमन, समाधिथीमरण अने जिनगुणनी प्राप्ति याओ. ॥

अथपूर्वाद्गिकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकम्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं चै-त्यपंचगुरुशांतिज्ञिक्तं कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादि-दोषविशुध्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधि-भक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं)

(दिवसना पथमभागमां देववंदनाने विषे पूर्वाचार्योना अनु-क्रमथी, सर्वकर्भना क्षयने अर्थे भावपूजा वंदना तथा स्तवन सहित चैत्य तथा पंचगुरुनी शांति भक्ति करीने हवे तेमां जो कांइ न्यूना-धिकदोषथयोहोय तेनी शुद्धिने अर्थे तथा पोताना आत्माने पवित्र करवाने हुं समाधिभक्तिकायोन्सर्ग करुंछुं.

('ग्रामोअरहंताणं जाप्य ९) अथेष्टपार्थना । प्रथमंकरणं चरणं द्रव्यं नमः । मंदाक्रांता वृत्तम् ।

शास्त्राज्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः। सद्दृत्तानां गुणगणकया दोषवादे च मोनम्। सर्वस्यापि प्रियहितवचोभावना चात्मतत्त्वे संपद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः॥ १॥

भावार्थः-- जिनशास्त्रनो अभ्यास, जिनभगवंतनी स्तुति, नित्ये सत्पुरुषोनो समागम, सदाचरणो पुरुषोना गुणगणनी मशं-सा, दोषकहेवामां मौनपणुं, सर्वनेषिय अने हितवचननुं कहेवुं अने आत्मतत्वनेविषे भावना, एसर्वे ज्यांसुवीमोक्षथाय त्यांसुधी मारे भवोभव मास थाओ। ॥ १ ॥

आर्यावृतम्।

तवपादौ ममहदये ममहदयं तव पदइये छीनम् तिष्टतु जिनेंद्र तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥१॥

जावार्थः--हेजिनेंद्र! ज्यांसुधी मोक्षनीमाप्तिथाय त्यांसुधी तमाराचरण माराहृदयमां लीनथाओ अने मारुंहृदय तमारा वे चर-णमां लीनथाओ. ॥ २ ॥

गाथा.

अस्क्रयपयत्यहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं। तंखमउ णाणदेवय मझ्झयदुस्क्रस्कयं दिंतु ॥१॥

जावार्थः - जेकांइ अक्षर पद अने मात्राशी हीन एवं माराथी भणाणुंहोय ते ज्ञानदेवता क्षमाकरजो अने मारादुःखनो क्षयकरोः

(नमोस्तु आचार्यवंदनायां सिद्धमक्तिकायो-स्सर्गं करोम्यहं जाप्य३्पठनीयम्)

जावार्थः -- हवे आचार्यनीवंदनामां सिद्धभक्तिकायोत्सर्यने हं करुंखं. अहीं त्रण जाप्य भणवाः

आर्यावृत्तम् ।

तवसिद्धे ण्यसिद्धे संयमसिद्धे चरित्तसिद्धेय । ण्राणम्मि दंसणुंमियसिद्धे सिरसा ण्रमंसामि॥१॥

जावार्थः त्वेकरीनेसिद्ध, नयेकरीनेसिद्ध, संयमेकरीनेसिद्ध चरित्रेकरिनेसिद्ध, ज्ञानेकरीनेसिद्ध, अने दर्शनेकरीनेसिद्ध एवा ते महात्माओने हुं नमस्कारकहं छुंगा १॥

संमत्ताणाण्दंसणचारीयसुहमं तहेव अवगहणम्।

अगरुलहुमबाबाइं अठगुणाहुंति सिद्धाणं ॥२॥

जावार्यः--सम्यक्त, ज्ञान,दर्शन, अनंतबल, अनंतसुख, अपू-र्तिकगुण, गुरुता अने छ्युतानो अभाव अने जन्म मरणनो अभाव. ए आठ गुण सिद्धपुरुषने होयछे.॥ २॥

(नमोस्तु आचार्यवंदनायां श्रुतन्नक्तिकायात्सर्गः करोम्यहं)

जावार्यः -- नमस्कारहा -- श्राचार्यवंदनामां श्रुतभक्तिकायोत्स-र्ग हुं करुं ।।

कोटीशतं द्वादश चैव कोटयो लक्षाण्यशीतिस्वय-धिकानिचैव ।

पंचाशदष्टौं च सहस्रसंख्यमेतच्छूतं पंचपदं न-मामि ॥ १ ॥

जावार्थः-एकसोबारकोटी त्रासीलाल अने अहावन हजार संख्यावालुं पंचपद ज्ञानने हुं नमस्कार कद्वंबुं. ॥१॥ अरहंतभासियत्यं गणहरदेवेहिगंथियं सम्मं। पणमामि जत्तिजुत्तो सुद्णाणमहोवहिंशिरसा॥२॥

जावार्थः--अईतमगवाने कहेलो, अने गणधरदेवे गुंथेलोएवो शुद्धज्ञानरूपी मोटोसमुद्र तेने भक्तिएकरी युक्त एवो हुं मुस्तक वढे भणाम करुंलुं. ॥ २ ॥

(नमोस्तु 'आचार्यवंदनायां आचार्यभक्तिका-योत्सर्ग करोम्यहं जाप्य ३ दीयते

जावार्थः--नमस्कार हो, हवे आचार्यवंदनामां आचार्यभक्ति कायोत्सर्ग हुं करूंछुं. 'त्रणजाप्य आपवा' ॥ ३ ॥

आर्था.

श्चुतजलिधिपारगेच्यः स्वपरमतिवभावनापदुम-तिभयः।

सुचरिततपोनिधिज्यो नमो गुरूज्यो गुणगुरू-ज्यः॥१॥

जावार्थः--क्षास्त्रस्पसमुद्रनापारने पामेला, पोताना अने बी-जाना मतने जाणवामां चतुरबुद्धिवाला, सार्वचित्र तथा तपना भंडारह्म अने गुणोथी मोटा एवा आचार्यगुरुने हुं नमस्कार करुंकुं. ।। १ ।।

छत्तीसगुणसमगो पंचविहाचारकरणसंदरिसे । सिस्साणुग्गहकुञ्चले धम्मायरिए सदा वंदे॥२॥

भविश्विः--छत्रीत्रगुणीएयुक्त, पांचमकारनाआचारने बताव-नारा, अने शिष्योनो अनुप्रहकरवामांकुशल एवा धर्माचार्यने हुं हंमेसावंदनाकरुंछुं ॥ २ ॥

गुरुन्नतिसंजमेणय तरंति संसारसायरं घोरम्। छित्रंति अष्टकम्मं जम्मणमरणुं ण पावंति ॥३॥

जावार्थः--भव्यप्राणीओ गुरुभक्तिरूपसंयमथी आ घोर सं-साररूपीसागरने तरीजायछे, आठकर्मने छेदेछे अने फरीवार जन्म मरणपामता नथीः ॥ ३॥

शार्दूखविकीडितवृत्तम् । ये नित्यं व्रतमंत्रहोमानिरता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः षदकर्मान्निरतास्तपोधनधनाःसाधुक्रियासाध**दः।**

शीखप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चद्रार्कतेजोऽधिकाः मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणुंतु मां साधवः॥४॥

भावार्थः...जे नित्ये व्रतमंत्रह्णहोममां तत्परछे, ध्यानह्णी अ-भिहोत्रमां आङ्गलछे, षट्कर्ममां तत्परछे, तपह्णीधनवढे धनवालाछे, साधुनीक्रियानेसाधनाराछे, श्रीलह्णीकवचनेधरनाराछे, गुणह्णी शक्को राखनाराछे, चंद्रअनेसूर्यनातेजथी पण अधिक अने मोक्षना द्वारनाकमाढने तोडवामां शूरवीरछे एवाते साधुओं मारा उपर प्रसन्नथाओं. ॥ ४॥

गुरवः पांतु वो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः। चारित्रार्णावगंत्रीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥५॥

जावार्थः -- ज्ञान तथा दर्शनना नायक, चारित्ररूप समुद्रधी गं-भीर अने मोक्षमार्गनो उपदेशकरनारा एवा गुरूओ हंमेसा तमारी रक्षा करोग्धारा

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ।

वर्षे बिद्धिशरांकचंद्रमितिके मासे शुन्ने श्रावार्षे । शुक्कायां प्रतिपत्तियौ नृगुदिनेश्रीश्रावकाणां मुदे॥ श्रीमजैनदिगंबरीयविधिना संशोध्य सामायिकं । चक्रे तत्सुपठं हि भावनगरे श्रीहर्षकीर्तिर्मुनिः ॥१॥

। इति सामायिकं समाप्तम् ।

॥ अथ प्रतिक्रमणं लिख्यते ॥

॥६०॥ पापिष्टेन दुरात्मना जडिंघया मायावि ना खोभिना। रागद्वेषमंजीमसेन मनसा दुः कर्म्म यन्निर्मितं। त्रेलोक्याधिपते जिनेंद्र भवतः श्रीपा दमूलेऽधुना निंदापूर्वमहं जहामि सततं वर्व्वर्त्तिषुः सत्पर्थे १ जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराः पदोषाः। यस्मात्त्रतिक्रमण्तः पद्धयं प्रयांति।तस्मा त्तदर्थ ममलं मुनिबोधनार्थं वक्ष्ये विचित्रज्ञवकम्म वि शोधनार्थं २ खमामि सबजीवाएं सबे जीवा ख मंतु मे। मेतीमे सब्बजूदेसु वैरं मएऊं एकि एवि १ रागबंध पदोसं च हरिसं दीण्जावयं। जस्सु-गतं ज्ञयं सोगं रदि मरदिं च वोस्सरे २ हा दु-इकयं हा दुई चिंतियं भासियंच हा दुई अंतो अंतो डफ्रम्मि पछुत्तावेण वेयंतो ३ दब्वे खित्ते काखे भावेय कदावराहसोहण्यं णिंदण्गरहण्जुत्तो मण्विकाएण पडिक्रमणं ४ एइंदिय बेइंदिय तेइंदिय चजरेंदिय पंचेंदिय पुढवीकाइय छ्याड काईय तेउकाइय वाउकाईय वाएफदिकाईय तस्सकाईय एदोसिंजहावणां परिदावणां विराहणां जवघादो कदो वा कारिदोवा कीरंतो वा सम-णुमणिदो तस्स मिञ्चामि इक्कडं॥दंसणु वयसामा

ईय पोसहसचित्तरायज्ञतेय बंजारंजपरिग्रह आ णुमण्डिहठदेसविरदोय १ पयासु यथा कहिद-पिंडमासु पमादाइ कयाइचार सोहण्डं छेदोध-द्यावणं अरहंत सिंद आइरिय जवक्काय सब साहुसिक्वयंसम्मत्तपुष्ठगंपुष्ठदंदिढघदंसमारोहियं-मेभवदु मेभवदु मेभवदु देवसिय पिंडकमणाए सबाइचार विसोहिणिमित्तं पुद्यायरियकमेण आ छोयण सिद्धज्ञत्ति काजसग्गं करेमि.

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरि-याणं णमो ज व उन्कायाणं णमो लोए सबसाहूणं चत्तारि मंगळं थोस्सामीत्यादि॥ छ.॥

श्रीमते वर्डमानाय नमो निमतविद्विषे यद्ज्ञा-नांतर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते १ तवसिद्धे ण्यसिद्धे संजमसिद्धे वरित्तासिद्धेय ण्राण्मियदंस-ण्यमिय सिद्धे सिरसा ण्यमंसामि २ इन्नामिभंते सिद्ध ज्ञत्तिकान्नस्सरगो कन्न तस्सालोचेनं सम्म-ण्राण् सम्मदंसण सम्म चरित्तजुत्ताणं अठिवह-कम्मविप्यमुकाणं अष्ठगु ण्रसंपष्पाणं निह्नलोयम-थयम्मि पङ्डियाणं तवसिद्धाणं ण्यसिद्धाणं संज-मसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं सम्मणाण सम्मदंसण् सम्मचरित्त सिद्धाणं अतीदाणागदवष्टम्मण्काल त्तयसिद्धाणं सद्यसिद्धाणं सयाणिचकालं अचेिम पुजेमि वंदामि णमंसामिदुकाका कम्मव्लड बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होड माउठां.

इछामि भंते देवसिय छ्यालोचेउं तत्त्व पंचुं बरसहियाइं सत्तवि वसणाइं जोविवज्जइ सम्म त्त विशुद्धमईसो दंसणसाव अन्निण्ड १ पंचय-अणुवयाइं गुणवयाइं हवंति तह तिणि ॥सिस्का वयाइं चत्तारिविजाणि विदियम्मिवाणिम्म २ पाणादिवादविरदी सच्च मदत्तस्स वजणंचेव॥थू-लयडबंभचेरं इछाए गंथपरिमाणं ३ जेतसका-इय जीवा पुत्रणिदिठाण हिंसिदवा।।एइंदिया वि-णुकारण तं पढमं वदं थूलं ४ ऋखियंगाजंपाणि जं पाणिवहकरंतु सच्चवपाांपि॥रोएा।व दोसेएा व मोहेणव ऐयं विदियं वयं थूळं ५ पुरगामप-द्रणाइसु पडिदं णुडंचणिहिद विस्सरिदं ॥परदब मगिण्हंतस्स होदि थूलं वदं तिदियं ६ पवेसु इत्रिसेवा अएंगकीडा सया विवजंतो॥ थूलयड बंभचारी जिणेण भागिदो पवयगाम्मि ७ जंपरि-माणं कीरदी धणधम्हिरणकं चणाईणं॥तंजाण पंचमवदं णिदिष्ट मुवासयाक्तयणे ८पुबुत्तरदिक

णपछिमासु काउण जोयणपमाणं ॥ परदो ग-मण णियत्ती दिसिविदिसि गुणवदं पढमं ९ व-यञ्जंगकारणं होदि जम्हिदेसम्मि तच्च णियमेण॥ कीरदि गमण्णियती तंजाण् गुणवदं विदियं १० अयदंडपासविक्य कूडतुलाकूडमाणकूर॥सत्ता-एंजंसंगहोण किरइ तंजाण गुणवदं तिदियं ११ जंपरिमाणं कीरदि मंडण तंबुलगंध पुष्फाणं ॥तं न्नोगविरदिभणियं पढमं सिस्कावयंसुत्ते १२सग-सत्तीए महिला वज्वाभरणाण जंतुपरिमाणुं॥तं परि न्नोगणियत्ती विदियं सिरकावयं जाणे १३ अति-हरससंविभागो तिदियं सिकावयं मुणोयदं॥तह्न-वि पंचइयारा णेया सुत्ताणु मग्गेण १४ धरिदूण-वत्वमेत्तं परिग्गहं छंडिऊण् अवसेसं॥सगिहे जि-णालयेवा तिविहाहारस्सी वोस्सरणं १५ जंकु-ण्दि गुरुसयासे सम्म मालोइ उण् तिविहेण॥सञ्जे इणं चंऊथं सुत्ते सिस्कावयं जाणियं १६ जिण-वयणधम्मचेइय परमेडिजिणाखयाणंणिच्चंपि॥जं-वंदणं तियाखंकरेइ सामाइयं तंखु १७ उत्तम-मझ्झ जहएांतिविहं पासहविहाणमुहिठं॥सगसत्ती एमासम्मि चउसुपब्वेसुइ कायवं १८ जंवजी जदि हरियं तयपत्तपवालकंदफलबीयं॥अप्फासुगंच सिखलं सिच्चित्रणि वित्तिमंठाणं १९ मण वयण काय कदकारिदाणुमोदेहिं मेहुणं णवधा॥दिवः सम्मिज्जो विवज्जदि गुणिम्म सोसावउ छेद्रो २० पुत्रुत्तण वविहाणंपि मेऊणं सद्यदा विवेजंतो॥इ-न्निकहा दिणियत्ती सत्तमया गुणबंजचारीसो २१ जांकिंपि गिहारंभं बऊष्योवंवा सयाविवक्जेदि॥आ-रंभणि वित्तमिदं सोअठमसावत जणिओ २२ मुत्रूण वज्जमेत्तं परिग्गहं च्लंडिदूण अवसेसं।।तथिव मुच्चणकरेदि जाणिसो सावउ णवमो २३ पुठोवा पुन्नेवा णियगेहि परेहि सगिहकके ॥ **ळ्यणुमण्**णं जोणकरिद वियाणसो सावउ दस मो २४ एवकोडीसु विसुदं जिस्कायरएएए भुं जदे भुंडां॥ जायणरहियं जोग्गं एयारससावउसो दु २५ एयारसम्मिठाणे उक्किठो सावउ हवइ दु विहा।।वन्नेयधरा पढमो कोवाणपरिग्गहो विदिउ २६ तववयनियमावासयलोचं कारेदि पिच्च गि-ण्हेदि॥ ऋणुवेहा धम्मझ्झाणुं करपत्ते एकठाण-म्मि २७इन्नमेजोकोइदिवसिन अइयारो आणा यारो तस्स ञंत्ते पडिकमामि पडिकमं तस्समे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडियमरणं बीरियम-रणंदुस्करक्ज कम्मस्कज बोहिलाहो सुगङ्गमणं

समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति हो छमझ्झं॥ छ॥
दंसणवय सामाइय पोसहसाचित्तरायञ्जतेय
॥ बंजारंजपिरगह अणुमण्डिदिठदेसविरदोय
१ एयासु यथा कहिदपिडिमासु पमादाइकयाइ
चारसोहण्ठं छेदोवठाणं अरहंतसिद्धआइरिय
उवझ्झायसबसाहुसिखयं सम्मत्तपुद्धगं सुबदं दि
ढवदं समारोहियं मेभवदु ३ अथदेवसियपिडिक् मणाए सबाइचारिवसोहिणिमित्तं पुद्धायरियकमे
ण प्रतिक्रमण्यक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।णमो
अपरहंताण् मित्यादि थोसामित्यादि

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरिया-णं णमो उवझ्झायाणं नमो लोए सबसाहूणं ३णमो जिणाणं ३ णमो णि सिहीए ३ णमो थुए ३ मममं-गलं अरहंत सिद्ध बुद्ध णि रयणिम्मल सममण गुजमण सुसम इसमजो गसमजाव सल्लघटाणं सल्लघत्ताणं निबुय णि रायणि होस णिम्मो ह णि म्मम णि रसंग णि सल्लमाणमायमो समूरणे तव-पहावण गुण्रयण सीलसायर अणंत अप्पमेय महदि महावीर वहुमाण बुद्धिरिसिणो वेदि छ णमो तथुदे ३मममंगलं मरहंताय सिद्धाय बुद्धाय जिणाय केवलिणो जिहिणाणि णो मणप क्कपणाणि णो चड

दसपुद्यंगमिणो सुदसमिदिसमिद्याय तवोय वारस विहो तवसी गुणाय गुणवंतोय महारिसीतिच्चं ति-त्रंकराय पवयणं पवयणीय णाणं णाणीय दंसण दंसणीय संजमो संजदाय विणार्ज विणीयदय बं-जनेरवासो बंजनारीय गुत्ती उनेव गुत्तिमंतीय मु-त्ती उचेव मुत्तिमंताय समिदी उचेव समिदिमंतीय सुसमय प्रसमय विदू खंति खवगाय खंतिमंतोय खीणमोहाय खीणवंताय बोहिय बुद्धाय बुद्धिमंतो य चेइयररकाय चेइयाणि उद्वमहतिरियलोए सि द्रायदणाणि णुमंसामि सिद्धणिसीहीयाउ ऋठा वयपद्वदेसम्मदे निक्जिते चंपाए पावाए मझ्झिमाए हन्निवालियस हाए जाउ छाणाउ काउदि सिद्ध-ष्णिसिहीयाज जीवलोयम्मिइसिपब्भरतलगयासुं सिद्धासुं बुद्धाणं कम्मचक्क्मुक्काणं सीरयाणं ग्रिम्म लाणं गुरुत्र्याइरिय वझ्झायाणं पुत्रति हेरकुलयरा-एां चाउवणे यसवणसंघोय जरहेरावएसु दससु पंचम् महाविदेहेसु जंलोए संतिसाहुर्उ संजदा तव सी एदे सम मंगलं पवित्तं एदेहं मंगलं करेमि न्नावदो विशुद्धो सिरसा ब्र्यहिबंदिऊण सिद्धे का ऊणं ऋंजिलमञ्चयम्मि पडिलेहिय ऋठकत्तरि उ तिविहं तियरयण सुद्धो च्च

पिकक्रमामि जांते दंसणपिडिमाण संकाए कं-खाए विदिगिंच्चाए परपासंडपसंसणाए पसंथुए जोमए देवसीउ अइचारो अणाचारो मणसा विच या काएण् कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणो मणिदो तस्समिन्नामिञ्चइं. १पडिक्रमामिन्नंतेवद पडिमाए पढमे थूलयडे हिंसाविरदिवदे वहेणवा बंधेणवा छेएणवा अङ्जारारा पर्णेणवा असपार णिसरोहेणवाजोमेइ देवसित अइचारो आणा-चारो मणसाविचया काएण कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणुमणिंदो तस्समिञ्जामि पुकडं० २ पडिक्रमामि भंते वदपडिमाए विदिए थूलयडे अस ाविरदिवदे मिठोवदेसेणवा रहे अबुखाणेण वा कूडलेहकरणेणवा णासावहारेणवा सायारमंत भेएएवा जोमए०३ पडिक्समामि जंते वदपडिमाए तिदिए थूल यहे थेण विरदिवदे थेण प्रनेगणवा थे-णहरियादाणेणवा विरुद्धरङ्काइक्कमणेणवा ही-णाहियमाणुम्माणोणवा पडिरूवयववहारेणवा जोमए० ४ पडिक्रमामि जंते वदपडिमाए चउथे थूलयडे अबंजविरदिवंद परविवाह करणोणवा इतरियागमणेणावा परिग्गहिदापरिग्गहिदागम णेणवा अणंगकीडणेणवा कामतिद्यानिणिवे-

सेणवा जामए० ५ पडिक्कमामि जंते वदपडिमाए पंचमे थूलयडे परिग्गह परिमाणवदो खेत्तमछू-णंपरिमाणाइ कूमणेणवा धणधन्नाणं परिमाणाइ कुमणेणवा दासीदासाणां परिमाणाइ क्रमणेणा-वा हिरससुवणाणंपरिमाणाइक्कमणोणवा कुप्प-जांडपरिमाणाइ क्रमणेणवा जोमए देवसिछ० ६ पडिकमामि जंते वदपाडिमाए पढमे गुणबदे उद्दर वइ क्रमणेणवा ऋहवाइक्रमणेणवा तिरियवइ क्रमणेणवा खेत्तवइक्रमणेणवा सदिद्यांतराधाणे णावा जोमए देवसिउ० ७ पडिक्समामि भंते वद-पडिमाए विदिए गुणबंद आण्यणेण्या विणि-जोगेणवा सदाणुवाएणवा रूवाणुवाएणवा पुग्ग-लक्तेवेणवा जोमे देवसिउ०८ पडिक्कमामि भंते वदपडिमाए तिदिए गुणवदे कंदप्पेणवा जकुचि-एणवा मोखरिएणवा असमस्क्रियाहिकरणेणवा नोगोपन्नोगाण्यक्रकण्वा जोमए देवसिउ० ९ पडिक्रमामि भंते वदपाडिमाए पढमे सिस्कावदे फासिंदिय भोगपरिमाणाइ क्रमणेणवा रसणिं-दिय जोगपरिमाणाइ कूमणेणवा घाणिंदिय भोगपरिमाणङ्कुमणेणवा चरिकंदिय भोगपरि-माणाइ कूमणेणवा सविणिदिय भोगपरिमा-

णाइकूमणेणवा जोमए देवसिउ० १० प-डिकूमामि भंते वदपडिमाए विदिएसिस्कावदे फर्सिंदिय परिभाग परिमाणाञ्कमणेणवा रस-णिंदियपरिभोग परिमाणाइ कमणेणवा चघाणि दियपरिभोग परिमाणाइ क्रमणेणवा चरिंकदिय परिभाग परिमाणाञ्कमणोणवा सविणिदियपरि न्नोग परिमाणाइ कमणोणवा जोमेए देवसिउ अ इचारो अणाचारो मणसावचिया काएण कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणुमणिंदो तस्समित्नामि डुकडं० ११ पडिकूमामि जंते वदपडिमाए तिदिए सिक्कावदे सचित्तीं एक्केवेणवा सचित्तावेपिहाणे ण्वा परउवएसेण्वा मछरिएण्वा कालाइकूम-गोणवा जोमए० १२ पडिकुमामि जंते वदपडिमा ए चउन्ने सिखावदे जीविदासंसणेणवा मरणासं सणेणवा मित्ताणुराएणवा सुद्दाणुबंधेणवा णिद्दा-गोणवा जोमए० १३ पडिकमामि जते सामाइय पडिमाए मण्डप्पणिधाणेणवा वाय दुप्पणिधा-णेणवा कायदुप्पणिधाणेणवा अणादरेणवा सिंह-अणुवहाणेणवा जोमए० १४ पडिक्कमामि जंते पोसंहपडिमाए अप्पडिवेस्क्रिया पमिकाया सग्गे-णवा अप्पडिवेस्किया पमिक्यादाणेणवा अप्पडि

वेस्कियाएमिकाया संघारोवक्कमणेणवा आवशा-स्सयाणादरेणवा सदिअणुवठाणेणवा जोमए० १५ पडिक्कमामि जांते सचित्त विरदिपडिमाए पुढ-विकाइया जीवा संखेकासंखेका आनकाइया जीवा संखेजासंखेजा तेउकाइया जीवा संखेजा संखेजा वाउकाइया जीवा संखेजासंखेजा व-ण्णप्पदिकाइया जीवा अणंता हरियाबीया अं-कुरा छिण्णा जिण्णा देसिं उद्दावणं परिदावणं वि राहणं जवघादो कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा स-मणुमणिंदो तस्स मिछामि दुक्कडं १६ पडिक्कमामि **भंते राइञ्ज**तिपडिमाएणविवहबंभचरियस्सदिवः जोमए देवसिंउ ऋइचारो ऋणाचारो मणसा विचया काएण कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणुमणिंदो तस्समिछामि दुक्कडं १७ पडिक्क-मामि जंते बंभपडिमाए इन्निकहायत्तणेणवा इत्तिमणोहरंवा णिरस्कणेणवा पुत्ररयाणुस्सरणे णवा कामुक्कीयखारसासेवणेण्या ससरीरमंड-गोगावा जोमए देवसिउ ऋइचारी ऋणाचारो मणसा विचया काएण कदोवा कारिदोवा की-रंतोवा समणुमणिंदो तस्समिछामि दुक्कडं १८ पडिकमामि जंते ऋारंज्ञविरदिपडिमाए कसा

यवसंगयेणवा जोमए देवसिउ आरंजो मणसा र्वाचया काएण कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणुमणिदो तम्समिछामि दुक्कंड १९ पडिक्क मामि जंते परिग्गइविरदिपर्डिमाए वह्वमेत्तपरि ग्गहादो अवराम्म परिगहे मुछापरिणामो जोमए० ॥ २० ॥ पडिकमामि भंते ऋणुमण् विरदिपडिमाए जंकिंपि अणुमाएं पुष्ठापुर्वेणोवा कदोवा कारिदंवा कीरंतंवा समणुमिसंदो तस्स मिछामिष्ठक्कडं २१ पडिक्रमामि ज्रंते उदिष्ठविरदे पडिमाए उद्दिष्टादोसबहुलं आहारादियं आहारि यं ब्र्याहारावियं आहारिजंतवा समणुमणिदो तस्स मिछामि दुक्कडं २२ इछामि जंते इमणि ग्गंथं पावयाां ऋणुत्तरं केवलियं पडिपुष्तंगोगा-इयं सामाइयं संसुद्धं सद्घघदाणं सद्घघताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्गं खंतिमग्गं मोत्तमग्गं णिजा णमग्गं णिवाणमग्गं सवञ्खपरिहाणिमग्गं सुच रिय परिणिवाणमग्गं ब्र्यवित्तहमविसंधि पदयण मुत्तमं तंसद्दहामि तंपत्तियामि तंरोचेमि तंफासेमि इदाेउत्तरं अणंणाञ्जिणजूदं णभवं णभविस्सदि णाणेणवा दंसणेणवा चरित्तेणवा सुत्तेणवा इदो जीवा सी एऊंति वुरुऊंति मुचंति परिणिवायंति सब इस्काणमंतं करंति परिवियाणंति समणोमि संजदोमि उवरदोमि उवसंतोमि उवधिणियि डि-माण मायमोसमूरण मिछणाणमिछदंसण मिछ-चिरतं च पिडिविरदोमि सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचिरतं च रोचेमि जंजिणवरे हिं पस्तो इछा-मिजोको इदेवसि ज अइचारो अणाचारो तस्स-मिछा मिदुक्क डं २३

इछामि जंते वीरभात्तिका उसग्गं करोमि.

जोमए दिवसिन ग्रहचारो श्रणाचारो श्रमागो श्रणामोगो काइन वाइन माणिस-न इचरिन इब्रासिन इपरिणामिन णाणादं-सणो चरित्ते सुत्तेसामाइए एयारसणं पिंडमाणं वि राहणाए अठिवहस्स कम्मस्सिणिग्घादणाए अ-खहानस्सासिदेणावाणिस्सासिदेणावानिमस्सि देणावा णिम्मिस्सिदेणावा खासिदेणावा छिंकिदे-णवा जंभाइदेणावा सुहुमेहिं अंगच लाचलेहिं दि श्चित्वाचलेहिं एदेहिं सबेहिं असमाहिं पत्तेहिं आ-यारेहिं जावअरहंताणं जयवंताणं पज्जवासं करे मि तावकायं पावकम्मं इचिरयं वोस्सरामि॥छ॥ नमोकार१०८पारकीदेवसिक३६राई१८दंस णवयसामाइयेपासहसीचत्तराइजरेग्य बंभारंभप रिग्गह अणुमण उदिठ देसविरदोय ॥१॥ एया-सुजथाकहिदपिडमासु पमादाइ कयाइ चारसो हण्छं ॥ छेदो वष्ठावणअरहंत सिद्ध आइरिय उ-वझ्झाय ॥२॥ सबसाहूसिखयं सम्मत्त पुत्रगं सुबदं ॥ दिढबदंसमारोहियंमे जवदुमेभवदु॥३॥अथदे-वसियपिडक्कमणाए सबाइ चारविसोहिणिमित्तं पुत्रायरियकम्मेणिनिष्टितकरणवीरजितकार्उस-गंकरेमिणमोअरहंताणिमत्य। दिथोस्सामीआदि

शार्व्छिविक्रीडितवृत्तम् ।
यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्रव्याणि तेषां गुणान्
पर्यायानि भूतन्नाविभवतः सर्वान् सदा सर्वथा
जानीते युगपत्मितक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः १
वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः
वीरेणाभिहितः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्यानमः
वीरात्तीर्थमदं प्रवृत्तमतुळं वीरस्य घोरं तपो
वीरेश्रीधृत्तिकीर्तिकांतिनिचयो हेवीर भदं त्विये२

उपजातिवृत्तम्। ये वीरपादौ प्रणमंति नित्यं ध्याने स्विताःसंयमयो-गयुक्ताः

ते वीतशोकाहिभवंतिलोकसंसारचर्गविषमंतरंति३

मालिनीवृत्तम्।

वतसमुद्यमूलः संयमस्कंधबंधो यमनियमपयोभि वर्द्धितः शीलशाखः समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो गुणकुसुमसुगंधिः सत्तपश्चित्रपत्रः ४

शिवसुखफलदायी यो दयाछाययोढ्यः शुभजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः इरितरविजतापं प्रापयत्नन्तज्ञावं सभवविजवहान्येनोऽसु चारित्रवृक्षः

ऋार्या ।

चारित्रं सर्वजिनश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येष्ट्रयः।
प्रणमामिपंचलेदं पंचमचारित्रलालाय ६
धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मंबुधाश्चिन्वते
धर्मेणैव समाप्पते शिवसुखं धर्माय तस्मे नमः
धर्मात्रास्त्पपरः सुहद्भवभृतां धर्मस्प मूलं दया
धर्मे चित्त महं दधे प्रतिदिनं हे धर्म मांपालय

धम्मों मंगलमुक्किष्टं अहिंसा संजमो तवो। देवावि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ८ इछामिभंते पडिक्कमणाइचारमालोचेउं तच्चदे-सासिया असणासि आयाणासिआ कालासिआ

मुद्दासिआ काउसरगासिआपणमासिआ आव-तासिया पडिक्कमणाए ह्यसुआवासपसु परिहीण दाजोमए अचासणा मणसा वचिया काएण क-दोवा कारिदोवाकीरंतोवा समणुमणिंदो तस्समि च्चामि इक्कडं दंसण वयसामाइय पोसहसचित्तरा-यज्ञत्तेय।बंजारंजपरिग्गह अणुमण्डदिष्टदेसवि रदोय।।एयासुजयाकहिदपडिमासु पमादा कयाइ चारसोहणुडं। होदोवडवेणं अरहंत सिद्ध आइरिय उवझ्झाय सबसाहुसिक्तयं सम्मत्त पुत्रगं सबदं दि रवदं समारोहियं मे जवड ३ अथ देवसिपडिक-माए सद्याइचारविसोहिणिमित्तंपुद्यायरियकमेण चउवीसतिच्चयरज्ञित काइसग्गं करेमि णुमा अरहंताणं चोस्सामित्यादि चउवीसं तिच्चयरेउसहाइ वीरपछिमेवंदे सबे-सिंगुणगणहरे सिंदे सिरसा एमंसामि. येळोकेष्टसहस्रलक्षण्धरा ज्ञेयार्ष्षवांतर्गताः ये सम्पन्नवजालहेतुमथनाश्चंदार्कतेजोधिकाः येसाध्विद्रसुराप्सरोगणु**दातैर्गीतप्रणु**त्यर्चितास्तान् देवान् वृषजादिवीरचरमान् जत्तयानमस्याम्पहं २ नाञ्जेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वखोकप्रदीपं स-र्वज्ञं संभवारूपं मुनिगणवृषभं नंदनंदेवदेवं कर्मा-

रिम्नं सुबुद्धं वरकमलिनं पद्मपुष्पाभिगंधं क्षांतं दांतं सुपार्श्वं सकलक्षक्षित्रं चंद्रनामानमीडे ३ विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं। श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं॥ मुक्तं दांतेंद्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनींदं धर्मं सद्धमं केतुं शमदमनिलयं स्तोमिशांतिंशरण्यं ४ कुंथुं सिद्धालयस्तं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषुचकं मिल्लंविख्यातगोत्रंखचरगणनुतंसुव्रतं सोख्यराशिं देवेंद्राच्यं नमीशं हरिकुल तिलकं नेमिचंदंभवांतं पार्श्वनागेंद्रवंदांशरणमहमितावर्द्धमानं चभक्तया॥५

इछामिभंते चउवीसति चयर जित्त काउसगो कड तस्सालोचेउ पंचमहाकलाण संपणाणं अह महापाडिहेरसहियाणं चउतीस अइसय विसेस सं ज्जुताणंब तीसदेवींदमणिम उडम चयमहियाणंब लदेव वासुदेव चक्कहर रिसि मुणिज इअणा गारोव गूढाणं थुइसयसहस्सनिलयाणं उसहाइ वीर प छिम मंगल महापुरिसाणं जितिए णिचकालं अं-चेमि पुक्जिम बंदामि णमंसामि इस्कस्क कम्म-स्क बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिण गुणसंपत्ति हो चमझं दंसणावये त्यादि अथदेवसियपडिक्कमणाएस बाइचार विसोहिणि मित्तंपुद्यायरियकमेणआखोयणसिद्दज्ञतिपडिक मणुजति निष्ठिद करणवीरजति चउवीसतिच्चय रजति कृत्वातद्वीनाधि कत्वादि दोषपरिहारार्थं स कलदोषनिराकरणार्थं सर्वमलातिचारविशुद्ध्यार्थं आत्म पवित्रीकरणार्थं समाधिजक्तिकायोत्सर्गं करोम्पहं णमोद्यरहंताणं जाप्प ९ उछास २७ अथेष्ट प्रार्थना प्रथमं करणां चरणां द्रव्यं नमः ॥ शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगति सर्घदार्यैः सद् त्तानां गुणगणकथा दोपवादे च मोनं ॥सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे। संपद्यंतांम**मञ्ज**व-ञ्जवे यावदेते पवर्गः ॥१॥ तव पादौ मम हृद्ये मम ह्रद्यं तव पद्रस्ये लीनं॥ तिष्टतुजिनेंद्रतावद्यावन्नि-र्बाणसंप्राप्तिः २ अखर पयत्वहीणं मात्ताहीणंच हुं मए भणियं।तं खमउणाणदेवय मझ्झय इस्कस्क यंदिंतु ३ इस्करकर्ज कम्मरकर्ज सुग्गइगमणं च वोहिलोहोय मम होउति जगबंधव तव जिणवर चरण सरणेण ४

इति श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

OCCOPPONE

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ जीवाजीवादितत्वस्वरूपं ॥

त्रिभुवनने विषे दीयक समान एवा वीरस्वामीने नमस्कारक-रीने अज्ञानी जीवने बोध थवाने अर्थे पूर्वाचार्ये जे प्रमाणे कहेल-छे तेज प्रमाणे जीवाजिवादि स्वरूप किंचित मात्र कहुंछुं. ॥ १ ॥

सूत्र—जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षा स्तत्वं ॥ १ ॥ अर्थ ^(१) _{चेतना सहित ते} जीव _{कहीयें}.

- (२) चेतना रहित ते अजीव कहीयें (३) अशुम तथा शु-भकर्म आववानों जे द्वार तेने आश्रव कहीयें.
- (४) आत्माना प्रदेश तथा कर्मना प्रदेश साथ मळवुं तेने वंध कहीये.(५)आवना कर्म रहकाय तेने संवर कहीये.
- (६) एक देशथी कर्मनो क्षय करनो न निर्जरा कहेवायछे.
- (७) सर्व कर्मानो क्षय तेने मोक्ष कहीये. ए उपर लखेला ने सप्ततत्व जाणवा. (८) अने तेमना मध्ये पुण्य तथा पाप मेळवता ९ पदार्थ कहेवायछे.

प्रथम जीवना भेद कहेछे.

जीवना वे भेद छे. ? संसारी जीव २ मुक्तिनोजीव. ? संसार मां परिश्रमण करे ने संसारी कहेवाय छे.

२ जेने कोइ दिवसे संसारमां परिश्रमण कर्बुं पडतुं नथी ते मोक्षना जीव कहेवायछे.

॥ सूत्र ॥ संसारिणस्त्रसस्यावराः ॥ २ ॥

अर्थ १ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति आ पांच स्था बर कहेवायछे. २ भृमिजपर चालेते जस कहेवायछे. १ पृथ्वीदगय जीवनो भेद कहेछे. स्फर्टीक रत्नाने जाति, चंद्रकांतादिक, दिंगको इडताल, मनसील, पारो.

सप्तप्रकारनी धातुः सोनुं, त्रंषुं, तांबु, पितळ, कथिर, सिसु, लोदुं, लिंड, लारि, तुरी, धोळी, काळी, विगेरे माटी, पाषाण, सुरमा, पांचप्रकारनुं मीदुं इत्यादिक पृथ्वीकायना जीव जाणवा. ॥ १॥

२ अपकाय जीवोनुं स्वरूप अपकेता पाणा सम-जबुंतेथी भूमीने विषे रहेलुं पाणि तल्लावने विषे रहेलुं पाणी, बरफने विषे रहेलुं पाणी, आकाशमांथी पडेल जे कराओ तेनुं पाणी अने बनस्पतिने विषे रहेला विंदु विगेरे अपकायना भेद जाणवा.

३ तेजकायना जीवनुं स्वरूप तेज केतां अग्नि ते संबंधी जे जीव तेना वीजळी प्रमुख केटलाएक भेद थायछे.

४ वायुकायना जीवनुं स्वरूप मंदमंद आवेते, एक दम आवेते, मुखमांथी नीकळे ते घनादि भि, तनोदि भि केतां जेने आधारे पृथ्वी तथा देवळोक रह्यां ने इत्यादिक वायुकायना भेद जाणवा.

वनस्पतिकायना जीवनुं स्वरूप

वनस्पितकायना जीव वे प्रकारनाछे ? साधारण २ प्रत्येक. साधारण वनस्पितकाय ते अनंतकाय कहेवायछे. सर्वप्रकारना कं-दोनीजाति कुमळाअंकुर, कुमळापान तथा लीलि, कालि, पिळी, घो-ळी, राती ए पांचप्रकारनी सेवाल. तथा लीलिहलदर, आदु, गाजर सर्व कोमळफळ, थोर, कुंवार, गुगुलनुंझाड, अमृतवेल, पिळोवेल, बटाटा जे छेद्या, छोल्या उगे विगेरे साधारण वनस्पितकाय कहे वायछे.

प्रत्येक वनस्पतिकायना जेद.

एक शरीरनेविषे एक जीव होय ते प्रत्येक कहेवायछे. फछने विषे छालने विषे मूळने विषे मोटापांदडाने विषे दरेकवीजने विषे एक जीवहोय ते प्रत्येक जाणवो.

त्रसकायना जेद.

त्रसकेता-वेरिंद्रि, तेरिंद्रि, चनुरिंद्रिय पंचेद्रिय एटलाने त्रसस-मजवा वेरिंद्रियना भेद । संखनाजीव, पेटमांकरमथायछे ते, जळो, पाणीना पूरा, सिट्रोड-जमीनमांलांवाथायते, विगेरे

तेरिंदिजीवनुं स्वरूप.

माकड, कानखजुरा, माथामांज्यायते, परसेवामां जीव थायते स्वर्ध, मंकोडा, येळ, घिमेळ, छाणनोकीडो, धान्यनो कीडो, कुंथुंवा-आकाश्चर्याथी रातारंगना वरसाट वखते पडेळे ते जे प्रभुनीगायक-हेवायळेते, इत्यादिक जाणवा.

चतुरिंदियजीवनुं स्वरूप.

बगा, भ्रमर, माखि, डांस, मछर, विंछी, विगेरे.

पंचेंदियजीवनुं स्वरूप.

१ देवता, २ मनुष्य, 3 तिर्यंच, 8 नारकी. ए चारमकारनाछे.

नारकीनुं स्वरूप.

ते सप्तप्रकारनी छे तेनां नाम— १ रत्नप्रभाः २ शर्कराप्रभाः ३ वालुकाप्रभाः ४ पंकप्रभाः ५ धूमप्रभाः ६ तमःप्रभाः ७ तमस्तमप्रभाः

तिर्यचना जेद.

? जलचर,२ स्थलचर, ३ खेचर ए त्रणमकारे तिर्येच जाणदा.

तेनी ओळखाण.

पाणीमांरहेनारां मछ, काचबा, मछनीजाति मगरविगेरं ते ज- स्वरंजीव जाणवा

स्थलचरजीवोनुं स्वरूप.

तेत्रणमकारेछे. १ भ्रुजपरिसर्प, २ उरपरिसर्प, ३ चारपगवाला जमावरो

? जे भुजावढे करीने चाले ते भुजपरिसर्पजाणवाः २ उरकेता उदरथी चाले ते उरपरिसर्पजाणवाः गाय, भेंस,घोडा, उंट, बलद वगरे चतुष्पदः

खेचरनुं स्वरूप.

जे आकाशमार्गे गतिकरे तेने खेचर जाणवा मेना, पोपट, इंस, बगळा, पारेवा, चकला वगेरे खेचर समजवा तेमांखेचरनाबेभेदछे. १ रोमपांखबाला, २ चर्मपांखवाला.

मनुष्यना जेद.

१५ कर्मभूमि ३० अकर्मभूमि ५६ अंतरद्वीपविषे उत्पन्नथाय ते संक्षीपंचेंद्रिय कहेवायछे.

देवताना जेद.

१० भुवनपति ८ व्यंतर ८ वाणव्यंतर ५ जोतिषि तथा २ वैमानिक. तेमां ज्ञुवनपतिनां नाम.

? अग्नुरकुमार, २ नागकुमार, ३ विद्युतकुमार, ४ ग्रुवर्णकु-मार, ५ अग्निकुमार, ६ वायुकुमार, ७ स्तनितकुमार, ८ उद्धिकु-मार, ९ द्वीपकुमार, १० दिककुमार.

व्यंतरना आठ प्रकार.

? किश्वर, २ किंपुरुष, ३ महोरग, ४ गंधर्व, ५ यक्ष, ६ रा-श्रस, ७ भूत, ८ पिशाच.

वाणव्यंतरना जेद.

? अणपिन, २ पणपिन, ३ रुपिनादी, ४ भूतनादि, ५ कं-दित, ६ महाकंदित, ७ कोइंड, ८ पर्यंग.

जोतिषिना जेद.

? चंद्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा. तेना वे मकार. १ स्थिर तथा २ चर.

जेना विमान फरे तेचरकहीयें. जेना विमानफरतानथी ते स्थिर कहीयें.

वैमानिकदेवताना प्रकार.

१ कल्पोपन्न तथा २ कल्पातीत तेमांकल्पोपन्नना नाम १ सी-धर्म, २ ईशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेंद्र, ५ ब्रह्म, ६ ब्रह्मोत्तर, ७ लांतव, ८ कापिष्ट, ९ शुक्र, १० महाशुक्र, ११ शतार, १२ सहस्रार १३ आणत, १४ प्राणत, १५ आरण, १६ अच्युत ए सोळ स्वर्ग कहेवायछे

कल्पातीतना नाम.

? नवप्रैवेयक तथा २ अनुत्तरविमानः

नवयेवेकना नाम.

? सुदर्शन, २ सुप्रतिबद्ध, ३ मनोरम, ४ सर्वतोभद्र ५ सुवि-शास, ६ सुपनस, ७ सोपनस, ८ प्रीतिकर, ९ आदित्य.

अनुत्तरविमानना जेद.

? विजय, २ विजयंत, ३ अपराजित, ४ जयंत, ५ सर्वार्थसिट, आप्रकारे सर्वदेवतानाभेदजाणवा ते जीवसंबंधी वर्णन समाप्तथयुं.

अजीव संबंधि वर्णन.

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाश्वास्तिकाय, ४

पुद्गलास्तिकाय, ५ जीव, ६ काल ए पर्भेद अजीवना जाणवा. तेमां पुद्गलके ते रूपीछे तेओ द्रव्य नामयी एण केहेवायछे जेम-धर्म-द्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, जीवद्रव्य, कालद्रव्य ते अविनाशी अने अरूपीछे.

धर्मास्तिकायनुं स्वरूप.

- ? चलनस्वभाववाको होयते ते धर्मास्तिकायः २ प्रदेशनो स-मृह ते अधर्मास्तिकायः ३ एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे जवाने अ-वकाश्वथापे ते आकाशास्तिकायः ४ जेमांजीवरहेलोछे, हालेचालेछे ते पुद्गलास्तिकायः ५ उपयोग अने ज्ञान सहित होय ते जीव. ६ कालद्रक्यते प्रख्यान छे.
 - १ तेमां धर्मास्तिकायनो जे प्रदेश तेना त्रण भेदछे.
- ? आलो पदार्थ ने स्कंध २ आलानो कांइकभाग ओछो ते देश कहीए ३ जे वस्तुनो कांइभाग नथाय तेप्रदेश.
- २ अधर्मीस्तिकायना पण वण भेदछे. १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश. ३ आकाशास्तिकायना पण त्रण भेदछे.
- ? स्कंथ २ देश ३ मदेश. ४ सर्वेमळी ९ यया तेमां काळद्र- व्यमेळवतां १० थाय ते अजीवतत्वनां अरूपीभेदसमज्ञवो.

रूपिअजीववच्चे ४ भेदछे.

१ पुदगलस्कंघ २ देश ३ प्रदेश ४ परमाणु. धर्मास्तिकाय त-या अधर्मास्तिकाय आ बेइने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूपरहित असंख्यात प्रदेश चौद राजलोके व्यापेलोक्छे अने आकाशास्तिकाय तो लोकालोके व्यापीने वर्ण, गंध, रस, शब्द, रूप रहित अनंत प्रदेशी के, पण पुद्गलास्तिकायनो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूप, सहित, सचित, अचित अने मिश्र जोईए तेवो शब्द अंधका र, प्रकाश, चंद्रमामीजोत, छाया, सूर्यनुंतेज ईत्यादिक गुणवाळो च- तुर्दश्च राजलोक व्यापक संख्यात तथा असंख्यात ने अनंतप्रदेशी पुरणगलन छे. विशेष प्रकार अन्यसूत्रथी जाणवो ए अजीवतत्व-नुस्तरूप संपूर्ण थयुं.

आश्रवना जेद.

१ मन, वचन अने कायानी जे क्रिया तेने योग कहीयें अने तेज आश्रव पण कहेवाय छे.

सूत्र. शुन्नः पुण्यम्याशुन्नः पापस्य.।

१ श्वभयोगथी पुन्यनो आश्रव होय अने २ अश्वभयी पापनो आश्रव होयछे.

अशुन्नयोगना लक्षण.

जीवनोघात, चोरी, परस्ती साथे मैथुनसेवन, कर्कश वचन, कटोर चिंतववुं अथवा कहेवुं अने ईपी करवी ईत्यादिक अथुभयो गनां कारण छे.

शुज्जयोगना लक्षण.

? हिंसादिक पापरहित कायानी जे प्रवृत्ति ते शुभ काययोग कहेवायछे. २ जे प्रमाणे क्षास्त्रमां छे तेवा सत्यवचन अने स्वपरना उपकारने अर्थे जे वचन वोलवा ते शुभवचनयोग समजवो ३ अ ईतादिक पंचपरमेष्टिना गुणनुं चिंतवन करतुं धर्मध्यान करतुं अने शास्त्रनुं चिंतवन करतुं ते शुभमनोयोग समजवो.

सूत्र. सकषायाकषाययोःसांपरायिकेर्यापथयोः।

कषायसिंहत जीवने संसारनो कारण एतो सांपराधिक आ-अब होयछे अने कषायरिंहतजीवने ईर्यापथ आश्रव होयछे.

सूत्र-इंदियकषाया व्रतिक्रयाः पंच चतुः पंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य जेदाः

- अर्थ-(१) इंद्रिय-५ (स्पर्शन, रसन, घाण, चक्षु, कर्ण.)(२) कषाय-४ (क्रोप, मान, माया, लोभ.) (३) अवत-५ (हिंसा, मुखाबाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ए पांच अवत कहेनायछे.
- (४) अने २५ पचवीश क्रिया, ए सर्व आश्रव आववाना कारणके तेमनी ओळखाण

प्रथम पांच इंद्रियोना २४ विकार कहेछे.

- ? इलकुं, भारि, मृदु, खर, शीत, उष्ण, स्निग्ध, भस्स, ए आट स्पेर्शेदियना विकार छे.
- २ खारो, तीखो, मीडो, कडवो, खाटो, तूरो, एछ रसनेंद्रियना विकार छे.
- ३ सुरभीकेता सारीगंध, दुरभीकेता खरावगंध, ए वे घ्राणें-द्रियना विकारछे.
- ८ काळो, घोळो, पिळो, लाल, इरो ए पांचरंग चक्षुइंद्रियना विकारछे.
- ३ सचिततेमनुष्यनोश्चन्द, बीजोअचिततेसारंगीपमुखनोश्चन्द, वे चेमळीयायतोमिश्र, एत्रणविकार कर्णेद्रियनाळे. केटलाकनोमत छे के तेमांथीहरोरंगवादकरेतो २३ विकारपण थायछे. तेबीजाग्रंथशी जाणीलेवा. ए सर्व आश्चव आववाना कारणो छे.

कपाय कहेंछे.

२ ते चारप्रकारना छे तेना १६ भेट थायछे. ते घणे ठेकाणे प्रख्यात छे. माटे लख्या नथी.

पंच महात्रतोनुं स्वरूप.

? नानी तथा मोटी कोईपणजीवनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, करतांपत्यें, अनुमोदना नकरवी मन, वचन, कायावडे करी ते प्रथम (प्राणातिपान महाब्रत कहेवाय छे) २ क्रोथ, छोभ, भय, तथा हास्यादिकथी द्रव्य, क्षेत्र भावशी मृषा बोले नहि बोलावे नहीं तथा अनुमोदना करे नहिं ते बीजुं (मृषावादमहावत समजवुं.)

श्पारकुंअदत्त केता दीधाविनालेवुं तेने अदत्तकहीयें ते छेए
 निह अने लेवरावे निह अने लेनारने अनुमोदना करेनहि ते चार
 श्वतारन छे.

१ तीर्थंकर अदत्त, २ गुरु अदत्त ३ स्वामी अदत्त ४ जीव अदत्त, तेमां जीवअदत्तना अनेक भेदछे. ते बीजाशास्त्रथीजाणवा (ए त्रीज़ं अदत्तादानमहात्रत कहेवाय छे.)

४ मिथुन केता स्निसंगतछोडीने ब्रह्मचर्यपाळवुं, ते बेपकारतुं
छे. (प्चार्थुमहावत कहेवाय छे.)

२८ गुणने धारण करनार पुलाकादि ५ निर्प्रय मुनियो सर्वे विरितियणे सर्वेश्वीनो त्यागकरे ते सर्व विरिति ब्रह्मचर्य कहेवाय छे ते मुनींद्रनेज होयछे अन्यनेनिह धने श्रावकादि जे स्वस्तीमां संतोष राखीने मन, वचन, कायावडे करीने जे पाळे ते अणुत्रत देशाविरित ब्रह्मचर्य कहेवायछे ते श्रावका श्रये समजनुं. ते नवमकारे पाळवानी रीति.

श्चोक.॥

स्त्रीपंढपशुमद्वेश्मासनकुड्यान्तरोइझनात् सरागस्त्रीकयात्यागात् प्राग्वच स्मृतिवर्जनात् ॥१॥स्त्रीरंम्यांगेक्षणस्वांगसंस्कारोपरिवर्जनात्। प्रणित्यात्यशनत्यागात् ब्रह्मचर्यं तु जावयेत्॥२॥

जावार्थ:-ब्रह्मचर्यवंत सर्व विरति प्राणी नवपकारे पाळे ते कहेछे. (१) जेडेकाणे स्रीतथागाय, घोडी, डंटडी, वकरी, विगेरे पश्च अथवा पंडक (नपुंसक) वगेरे वसता होय ते ठेकाणे ब्रह्मचर्य वालासाध न वसे. (२) जे आसने खी बेठी होय ते आसनथी ते उठी गयापछी वे घडिसुधी जे जग्याउपर तथा स्त्री वेठीहोय ते हे-काणे न बेसे. (३) जे ठेकाणे ब्रह्मचर्यवंत पाणी बेसेछे. ते ठेका-णानी भीतनी पछवाडे पण स्त्रीना आलाप संलाप विगरे सराग शब्द संभलाय तेमहोय अथवा ए काले स्त्री होय तो ते जग्यानो त्याग करे. (४) मार्गथी जातां आवतां कुमारी कीशोरी जाया के वृद्ध स्त्री विगेरेनां अंग उपांग ने नेत्र, वदन, स्तन, उदर तथा वरु विगेरे जोवा दृष्टि पहोचाडे नही. (५) स्त्रीनी उत्तम के नटारी राग सहित कथा न करे. (६) संसारिकपणामां करेली जे पोतानी तथा पारकी स्त्रीयोनी संगाते क्रीडा तेमज मक्कगी, हास्य, विला-स. मोहकारी आलाप संलापादि जे कृत्य ते ब्रह्मचर्य लिधा पछी स्मरण न करें. (७) नीरस आहार पण अति मात्राये वजन उप-रांत न लहे. (८) शीरो, लापसी, पूरि, श्रीखंड, मीठाई, घेबर विगरे, चीकणाञ्चवाळापदार्थ अतिशय न वापरे कारणके तेनाथी बरीर रुष्ट्रपुष्टथई इंद्रियनो विषय थायछे माटेतेवर्जवो. (९) नहानुं तथा हजामत कराववी तेमज सुगंधि प्रमुख (अत्तर)थी मनोहर अंगनी ब्रोभान करवी कारणके जो शोभा करी होयतो कोई दिवसे भी-गनीवांछा थयाविना रहेतीनथी माटे ते नकरतुं. आप्रकारे नवभेद ते चोथं महाव्रत जाणवं.

पांचमुं परिग्रह महात्रत ते २४ मकारनुंछे तेना लक्षणो कहेछे.

तेमां १० बाह्य अने १४ अंतरपारिग्रहछे.

? खेतर २ घर ३ घन ४ घान्य ५ शय्या ६ भांड ७ पशु ८ वस्त्र ९ नोकर १० सुवर्ण ए दश प्रकारे बाह्यपरिग्रह. तथा १ स्त्रीवेद २ नपुंसकवेद ३ पुरुषवेद ४ मिथ्यात्व ५ कोघ ६ मान ७ माया ६ लोभ ९ हास्प १० रित ११ अरित १२ भय १३ स्रोक १८ जुगुप्सा ए चौदप्रकारे अंतरपरिग्रहः ए पांच महावतनो देश-विरित त्याग तेअनु व्रत अथवा तेमनो त्याग ते अवत कहेक्छे.

पचिवश (२५) क्रियानुं वर्णनः

(१) (कायिकीक्रिया) कायानोदोष. (२) (अधिकारणिकी क्रिया) विश्लेषे काम करतां जे जीवोनी विराधना थाय ते. (३) (पट्टेषिकी किया) जीव तथा अजीव उपरद्रेषभावराखवी ते. (४) (पारितापनिकीकिया) पारका जिवने ताप देतां जे क्रिया लागेते. (५) (प्राणातिपातिकिया) नाना तथा मोटा जीवनी विरोधना करे ते. (६) (आरंभिक किया) खेति प्रमुख तथा पृथ्वी अप नेज वाय वनस्पति एमनेपारबुं ठोकबुं बाळबुं धोबुं विगेरे. (७) (परिग्रहिकि किया) उपरकद्देला परिग्रहथी जेकिया आवेते. (८) (मिथ्या दर्शन प्रत्येकीकिया) स्वधर्मछोडी, हनुमान देवदेवीने मानवा पिपले पा-णीरेडवं अन्यमतना धर्मसंबंधीकार्यकरवा तथा शीतलामातापूजवी बगेरे जे जिनशासनथी विरोध करवा ते. (९) (मायामत्ययिक क्रि-या) कपट करीने बीजाने टगवा ते. (१०) (अमत्याख्यानिकिकिया) क्रोध मान माया लोभ करतां ने क्रिया लागे ते. (११) (दिप्टिकि क्रिया) कौतक करी अश्वमसुखने दोडावे ते. (१२) (पृच्छनिकिकि-) या) रागनेवक्रकरी पुरुष, स्त्री, तिर्यंच बख्न प्रमुख कोमळवस्तुने अ-इकतां जे किया लागे ते. (१३) (पातित्यिक किया) बीजाने घरे बस्तु जोतां द्वेष करावे ते. (१४) (सामंतीपनिपातिकि क्रिया) पो-ताना घरनी वस्तु माटे जे लोक देखना आव्या नेनि प्रसंशा करी मनमां आनंद करे ते. (१५) (नैसृष्टिकिक्रिया) स्वइस्तेकाम करता ने किया लागे ते. (१६) (आद्वापणिकिकिया) तिर्धेकरोनी आज्ञा उथापी स्वद्धाद्धिथी जे गुण प्रगटकरे अने कहेके हुं करुंछुं ते खरुंछे

बीजा खोटाछे. (१७) (वैदारिणिकिकिया) बीजानी खोटो आचार देखीनें तेना कार्यनो नाश करवो ते. (१८) (अनामोगिकिकिया) उपयोगयी जे विपरीत थाय ते. (१९) (अनवकांक्षपत्ययिकिकिया) पोतानी तथा बीजानी अपेक्षा करवी तेने अवकांक्षा कहीये तेथी विपरीत आवे ते. (२०) (प्रयोगिकिकिया) दोडता दोडता चालता चालता काया संबंधी ज्यापार करता अथवा हिंसाकारी कठोर बचन बोलता जे किया लागे ते. (२१) (समुदानिकिकिया) भाडा-दिकनो ज्यपार करवोते (२२) (प्रेमपत्यिकिकिया) माया तथा लो-भधी जे विपरित थाय ते (२३) (देशप्रत्योकिकिया) कोध मान करता जे किया लागे ते. (२४) (इर्यापिथिकिकिया) चालता जे किया लागे ते. (२५) (स्वहस्तिकिकिया) पोताना हाथथी थाय ते.

सूत्र-तीव्रमंदज्ञाताज्ञातन्नावाधिकरणवीर्य विशेषेत्रयः तद्विशेषः

अर्थ-१ (नीव्र) कपायनी उत्कंडाथी जे परिणामे हायछे ते. (२) (मन्द्र) कषायना मन्द्रतानो जे परिणाम ते. (३) (ज्ञात-भाव) हुं आ प्राणीने मारुं एवं जाणीने मारवानि प्रदृत्ति करे ते. (१) (अज्ञातभाव) जाण्याविना प्रमाद्यी प्रदृति करे ते. ५ (अधि करण) पुरुषनुं प्रयोजन जेने आधारे होय ते. ६ (वीर्य) द्रव्यानि ज्ञाकि ते. ७ (स्थिति) जेवाजेवा परिणाम थाय तेवातेवा कर्ममां रस पढे ते. इत्यादिक सर्व आश्रवतत्वना अश्रभ कर्मना द्वारछे. अन्य प्रणाछे पण आहें ग्रंथ वधी जवाना भयथी छष्ट्या निथी. ते अन्य ग्रंथथी जाणी छेवा. इतिश्री आश्रवतत्व संपूर्ण.

बंधतत्वना भेदः

सूत्र-मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः अर्थ-पिथ्यादर्भन अविराति प्रमाद कषाय योग ए पांचकारण वंधना लक्षण समजवां. ? तत्वार्थनी अश्रद्धा ते मिथ्यात्व. २ पांच इंद्रीयो छठो मन तथा छकायना दयानो अभाव ए बार अविरतए कर्मवंधना कारण छे. अने विकयादिक प्रमादयी पोताना स्वरूपनुं भूलवुं तेपण वंधना कारण छे क्रोध मान माया लोभ चार कषाय तेपण वंधनाकारण छे. मन वचन कायाना योग तेपण वंधना कारणछे. ए प्रमाणे थोडामां वंधना छक्षण कह्याछे अने विशेपजाणवुं होय तो अन्य ग्रंथयी जाणो लेवुं अहिं ग्रंथ वधी जवाना भयथी छक्ष्यां नथी.

केटलाक ग्रंथमां जुदे भंदे कहें छे.

१ मक्कतिबंध २ स्थितिबंध ३ अनुभागवंध ४ प्रदेशबंध.

तेना लक्षण.

? कर्मनो स्वभाव परिणमनरुपछ माटे प्रकृतिबंध कहेवायछे. २ कर्मनो काळ परिणामरूपछे माटे स्थितिबंध कहेवायछे. ३ कर्मना तीत्रमंदादिरसपरिणामरूपछे माटे अनुभागवंध कहेछे ४ कर्ममदेश पुद्गलनो परिणामरूपछे माटे प्रदेशबंध कहेछे. इति वंधतन्त्र संपूर्ण.

मंबरतत्वना भेद कहंछे.

३ गुप्ति. ५ समिति. २२ पिरसह १० धर्म. १२ भावना. ५ चारित्र. एटला महारे संवर थाय छे तेमना लक्षणो कहे छे. १ (मन-गुप्ति) मनने धर्म करणीमां लगाडी पाप रस्ते न लगाडता गोपन करी राख दुं ते. २ (वचन गुप्ति) वचनने एवं राखे के माण जाय तो पण गुप्ति न छांडे ते. ३ (काय गुप्ति) कायाथी सत्य धर्म न छांडे ते

५ सिमात कहेंछे.

? (ईर्यासमिति) भूमी उपर साडात्रण हस्त जागा जोईने चाले ते. २ (भाषासमिति) कर्कशवचननो त्याग करी मनोहर अने त्रिय वोले ते. ३ (एषणासिमाति) दोष दुष्ट आहार पाणीनो त्याग करी निर्दोष आहार करे ते. ४ (आदानानि क्षेपणसामिति) बेसतां उठतां उपाडतां भूमि शुद्ध जोईने वर्ते ते. ५ (पारिष्टापानिकासिमिति) मळ मूत्रादिकने माटे शुद्ध भूमि जोईने बेसे ते.

२२ परिषद्द कहेंछे.

? (धुधापरिषदः) भूख लागे तेनी वेदना सहन करवी ते. २ (पिपासा) पाणीनी थख लागे ते सहन करवी ते. ३ (शीत) थंड पडतां जे वेदना सहन करवी ते. ४ (उष्ण) उष्ण पडतां जे वेदना श्राय तेने सहन करवी ते. ५ [इंस] ज, गुमासी, डांस, मछर वगेरे भीवो शरीरने मुख्यी वेदना करे ते सहन करवी ते. ६ (अचे-लक) बस्तरहित रहीयें ते. ७ (अरति) शीतादीकथी उत्पन्न थयेली वेदनाने सहन करवी ते. ८ (स्त्री) स्त्रीना अंग उपांग केतां आंगळी प्रमुख स्तन जंघा कमर छाति आलाप संलाप मुखर्शृंगार वगेरे जोतां मन चलायमान न करवुं ते. ९ (चर्या) प्रमाद राहेत बामानुब्राम विहार करे ते. १० (निपेधिकी) शून्यघर स्मशान अ-थवा उद्यान तथा गिरी गुफादिकने विषे कायोत्सर्ग करतां भय उत्पन्न थाय ते सहन करवो ते. ११ (शय्या) उष्ण शीत उंचनींच उपर आसन प्रमुख करतां उद्देग नकरे ते. १२ (आक्रोश) अन्य माणसना क्रोधना बचन सांभळतां सहन कर्द्धं ते. १३ (वध) चावक लाकडी खडग तमाचा विगेरेथी मार सहन करवो ते.१४ (याचना) श्रीमंत छतां दिक्षा लइ पछी भिक्षा मागवानी छज्जा न राखे ते. १५ (अलाभ) भीक्षा मागतां संसारीए विराध्यो होय तोपण तेना उपर द्वेष न करे ते. १६ (रोग) दिक्षा लीधापछी जे रोग उत्पन्न थाय तेने सहन करवो ते. १७ (तणफास) तण उपर संथारो करतां वेदना सहन करवी ते. १८ (मळ) उष्णना योगथी ने मेल थाय तेने सद्दन करवो ते. १९ (सत्कार) सन्मान थयोतो

हर्ष न पामवो अने असन्मान थायतों दुःख न पामवुं ते. २० (म हा) कोइए प्रश्न पूछ्यो तेनो जवाप न अपानो तो तेनाथी दुःख न पामवुं ते २१ (अज्ञान) कर्मसंजोगयी वस्तुने न पामे एटले ग्ना-स्नज्ञानने न पामतां तेनायी कोघ न करवो ते. २२ (सम्यक्त्ब) अज्ञानथी देवगुरू धर्म तत्व खरुं छेके खोटुं छे एवो विचार न क-रे अन्य वादीनी तपश्चर्या जातां पोतानो धर्म न छांडवो ते.

१०दश लाक्षणिक धर्म. १ क्षमा कठोर कुर तथा आक्रोश संबंधी वचन सांभळतां स्थिर परिणाम राखवो ते. (२) मार्दव मानरहित रहेवुं ते. (३) आर्जव-कपट रहित रहेवुं ते. (४) सत्यवत नीरंतर खहं बोलवुं ते. (५) शीच=छेंताळीस दोपरहित आहार करवो ते. (६) संयम म्रानेवत धारण करवुं ते (७) तप=द्वादश मकारे तपश्चर्या करवी ते. (८) त्याग=सर्वत्रमकारे वस्तुपर लोभ न राखवो ते. (९) अर्किचन=द्रव्य संबंधी परिग्रहनी त्याग करवो ते. (१०) ब्रह्मचर्य स्त्री संबंधी विषय सुख भोगववानी जे वांछा तेनो त्याग करवो ते.

द्वादशअनुपेक्षा (१) (अनित्य भावना) काया छे ते पाणीना परपोटा सरखी छे तेमां काळ निरंतर फरी रह्यों छे. इन्य ते पताकानी पेठे चपळ्छे सगां संबंधी द्रन्य छे त्यां सुधी छे, मृत्यु नजीकज रहे छे आ संसारमां कोई कोईनो नथी माटे संसार सर्वत्र अनित्य छे आवी भावना भावनी ते (२) (अश्वरणभावना) जन्म, जरा अने मरणनो जे भय तेमने अटकाव करवाने माटे धर्म सिनाय कोई शरण नथी. एवं चिंतवन करवं ते. (३) (संसारभावना) कर्मना वश्यी संसारमां अनादि काळथी जीव परिश्रमण करेंछे अने माता मरीने बेहेन थायछे, भगनी मरीने स्त्री थायछे, स्त्री मता यायछे, माता मरीने स्त्री थायछे, रक्नो सित्र थायछे, मित्रनो शत्रु थायछे, राजानो रंक थायछे, रक्नो राजा

बायछे, पुत्रनो पिता, अने पितानो पुत्र थायछे, एवी अनंत का-ऋषी उलट पालट चाली जायछे अने अनेक दुःख भोगवेछे, एवं संसारनुं स्वरूप चिंतववुं तेने संसारभावना कहायें. (४) (एकत्व शावना) आ जीव संसारमां एकलो आव्योछ अने एकलो जवानो छे अने दुःख भोगववामां पण हुं एकछोज छुं मारा सज्जन, कु-दंब. परिवार कोईपण आवता नथी आ जीव जन्म ग्रहण करवामां एकजछे, बीजोकोई मारीसायेआनवाबाळोनथी,अनेजेजीवमाणसने घणोज बहालो होय तेन जीव गया पछी तेन एक कलाक पण घरमां-गलता नथी. अने तरत लई जाओ लई जाओ एवा शब्द कहेडे लाखो रुपियानी मिलकत कमायेली होय तोपण कोइ साथे देता नथी. अने एमां एवोज सार नीकले छे के स्वार्थनी सगाई छे मा-टे मारूं कोई नथी एवं चिंतवन करवुं ते. (५) (अन्यत्व भावना) आत्माज्ञान स्वरूप छे अने शरीर जह छे तेमां आत्मा नित्य छे अने शरीर विनाशी छे शरीर इंद्रियथी पळेलुं छे अने आत्मा इंद्रि-योथी जुदो छे एवं चिंतवन करवुं ते. (६) (अशुचिभावना) आशरीर अत्यंत अशुचि छे अने घणुं दुर्गिधिवाळु छे अंदरना पुरूष संबंधि ९ द्वार तथा स्त्री संबंधी १२ द्वारी मळ मूत्र विष्टा पसीनो श्लेष्म थुंक कर्णमेळ तथा शरीर संबंधी रस रूधिर हाड मांस वीर्थ परु विगे-रेथी भरेलुं छे चर्मथी ढांकेलुं छे अने अंदर सर्व दुर्गंधि अने अधु-चि छे ते कोई दिवसे पण स्नान सुगंध पुष्प अत्तर बगेरेथी तथा बस पात्र अलंकारनी श्रीभायी श्रद्ध थतुं नथी। ज्यारे द्वान दर्शन चारित्रकृषि सत्ता प्रगट याय त्यारे अंतरंग आत्मा शुद्ध याय छ अने पाणीथी तो फकत शरीर साफ थाय छे तेथी कांई आत्मा शुद्ध थतो नथी आत्मा रत्नत्रयथीज शुद्ध थाय छे माटे आ शरीर निरंतर अशुचि छे अने विनासी छे ए भावना भाववी ते. स्त्री सं-बंधी १२ द्वार तेमां ९ पुरुषना जेवा अने योनिमां पिशाब करवातुं

जूदुं अने विषयनुं जूदुं अने स्तन वे एम बार, केटलेक ठेकाणे ?? पण कहेछे ते संक्षेपथी जाणवुं. (७) (आश्रवभावना) स्पर्शन रसन धाण चक्ष अने श्रोत्र-कान कीथ मान माया लोभ (५) महाब्रत-नो देश विरात नियम कहीयें ते) ५ अनुवृत्त र योग अने २५ क्रिया एनाथी जे कर्मनो बंध थाय छे तथा दया दान न करतां ने कर्म बंधाय छे एवी भावना भाववी ते. (८) (संवरभावना) ई-द्वियो तथा कषायादि करी संकुचित थयेलो जे आत्मा तेना सम-स्त दोष गुणनो मार्ग काढी अने आश्रव आवनाना द्वार मटाहे ते. (उदाहरण) जेमके पाणीमां कमळ रहे छे पण अनुरेण पाणीधी लिप्त थतुं नथी, तम आत्मा पण पापरुपी तिामेर जे अंधकार तेने आववा दे नहि. (बीन उदाहरण) एक पाणीनो होज छे तेन ४ नळ छे ३ मांथी पाणी आवे छ अने एकमांथी पाणी जाय छेता-तेनो संभव पवो छे के ते कोई काळे खाली थवानो संभव नथी तेम त्रण तरफथी पाप आवे अने एक तरफ थोड़ पुन्य थायता को-ई दिवसे पण आ आत्मा संसारमांथी छृटतो नथी तेथी संसारमां अवन क्यांन करे हे अने त्रणमांथी पाणी जाय हे अने एकमां-थी आबे छे एवं। नळ तो तरत खाली थाय छे. ते प्रमाणे आत्मा-मां त्रण ठेकाणेथी कर्म आववाना द्वार वंध थाय अने एक तरफर्थी आबे तो आत्मा तरत निर्मळ थर्ड पकाशने करता अनत बीर्य अनंत बळ अनंत शाक्ति अने त्रण लोकनं प्रकाशकारक छे जेप अरिसामां प्रतिबिंब देखाय छ ते प्रमाणे पोतानी शक्तिने पोते जोवे छे अने बरत मोक्ष लक्ष्मीन पामे छे एवो विचार करी आश्रवना द्वार बंध करवा ते संबर भावना समजवी.

(९) (निर्जराभावना) निर्जरा वे प्रकारनी छे, १ सविपाकनिर्जरा २ अविपाक निर्जरा, पोतानो रस देवाथी जे निर्जरा थायते (स-विपाक निर्जरा) समजवी, २२ परिषसह तथा १२ प्रकारनी तप-

स्या करतां जे निर्जरा थायछे ते. (अविपाकनिर्जरा) वेमां (सार्व-पाकनिर्जरा) समस्त संसारी जीवने थायछे अने ते अगामि बंधतं कारण है माटे तेनो त्याग करवो ते योग्यछे अने (अविपाकनिर्ज-रा) तो मोक्षनुं कारण छे तेथी ते ग्रहण करवी योग्य छे ए भावना भाववी ते निर्जराभावना तेमां द्वादश प्रकारनां तपनां नाम १ अनशन-उपवासादिक करवुं ते. २ उणोदर-अर्थाहार करवो ते-३ वृत्तिपरिसंख्या-प्रतिज्ञारूप आहार करवो ते. १ रसत्याग-छ रसमांथी एकरस त्यान. ५ विविक्तशय्यासन-एकटेकाणे सुवं बेसतुं ते.६ कायक्रेश-लोचादिक किया करवी ते. एबाह्यतपना छभेदछे ? प्रायश्वित-पोतानो अपराध गुरुने कही दंड छेवो ते.२ विनय-देवगुरु शास्त्रनो विनय करवा ते. ३ वेयावच-वेयावच करवी ते. ४ खाध्या य-ज्ञास्त्र भणवुं ते. व्युत्सर्ग-शरीरनी ममता छोडीन ध्यान धरवुंते. ६ ध्यान-मननो संबंध ज्ञानवस्त्रमां लगाडी अंतर्मुहुर्त ध्यानकर्त्रुते. ए अंतरतपनाछभेदछे नेमांछपकारना र सनानाम आगलकहेलाहेतेथी ल्रख्या नथी. तेमां प्रायश्वितना ९ भेद कहेछे. १ आलोचना-प्रमा-दथी दोष लाग्या होय ने गुरुपासे निवेदन करवा ने, २ प्रतिक्र-मण मने जे दोष लाग्या होय ते मिथ्या थावी एम वचने प्रगट कर्वं ते. हे तद्भय-आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्वं ते. ४ वि-वेक-टोषसहित अन्नपान तथा उपकरणादिकनो संशय थयो होय नेनो त्याग करवो ते. ५ व्युत्सर्ग-कायोन्सर्गादि करवुं ते. ६ तप-अनजनादिक द्वादश प्रकारतुं अंगीकार करतुं ते. ७ भेद-दिवस पक्ष मासादिकनी दीक्षा घटावाने करतुं ते. ८ परिहार-पक्षमास आदि विभागथी संघनी बहार राखवो ते. ९ उपस्थापना-पहेली दीक्षा छोडाबीने नवी दीक्षा देवी ते. विनयना चार प्रकार. १ ज्ञा न विनय-सन्मान सहित शास्त्रनो विनय करवो ते. २ दर्शनविनय-शंकादि दोषरहित तन्वार्थनी श्रद्धा करवी ते. ३ चारित्र विनय-

ज्ञानदर्शनसहित चारित्रमां, समाधान करवुं ते. ४ उपचार-आचा र्यगुरु निष्रंथादिक आवता देखी उधुं थवुं, आघा होयतो त्यांसुधी सन्मल जुनु, अंजलियी नमस्तार करवो अने सेवा करवी ते. ट-भगकारे वैयावच कहेंछे. १ आचार्य, २ उपाध्याय, ३ तपस्वी. 8 श्रेक्ष्य, ५ ग्लान, ६ त्रणगण, ७ चारकुळ, ८ संघ, ९ साधु, अने १० मनोज्ञ ए प्रकारे दशनी वैयावच करवी ते. विवेचन-विक्षाना अधिकारी ते शैक्ष्य २ रोगादिकथी पिढेला ते ग्लान. ३ बुद्ध मनीश्वरनी परिपाटिना होय ते त्रणगण. ४ दिक्षा देवावाळा ने आचार्यना शिष्य होयते चार्कुल. ५ साधु साध्वी, श्रावक, श्रा विका ते संघ ६ लोकमां मान्य होय ते साधू अने मनोहा ५ म-कारे स्वाध्याय. १ वांचना-दोषादि रहित ग्रंथ तथा अर्थनुं भणनुं भणाववुं ते २ पृछना-शंका होयतो पूछवुं ते. ३ अनुपेक्षा-जा णी लीधेल अर्थनुं वारंवार चिंतवन करवुं ते. ४ आम्नाय-शब्दनो स्पृष्ट उचार करवो ते. ५ धर्मकथा-धर्मनुं कथन करवुं ते. ध्यानना चारलक्षण. १ आर्त, २ रौद्र, ३ धर्म, ४ शुक्र, एमना प्रकारी त त्वार्थ सूत्रथी, संघयण पकरणर्थी अने अन्यशास्त्रथी जाणीलेवां. ए प्रमाणे धारि मनमां चिंतवन करवं के, हे जीव ! आ कर्मनी निर्जराना इक्षणनोते अंगिकार कर, एवी भावना भाववी ते नि-र्जरा भावना(१०)(लोकभावना) लोकसंस्थादिकतं चितवन तेमज-पुष्यपापनुं फळ तथा नरकस्वर्गादिकनुं चिंतवन तथा धर्म, अधर्म आ काम, पुद्रल, जीव अने काल तेमना गुण पर्यायना स्वरूपनुं चितवन करवुं ते. ११ (बोधिदुर्लभभावना) एक निगोदराशीमां सिद्धरासी-थी अनंतगुणे जीव छे अने निगोद जीवथी समस्तलोक अंतर र-हित भर्या छे-पृथ्वी, अप, तेज, वायु, अने वनस्पति जिवशी नि-रंतर भर्या छे तेमां त्रसपणुं पामनुं कटण छे कदापि त्रसपणुं पामे वेमांबी विकलेंद्रियपणुं पामुं कठण छे कदापि विकलेंद्रियपणुं पा-

मे तेनाथी पंचेंद्रिय-तिर्येचपणुं पामवुं कठण छे. कदापि ते पुण्य सं-जोगे पामे तो मनुष्यपणुं पामनुं कठण छे. कदापि ते पामेती आ-र्वदेश तथा ऊंचुकुल पामवुं कठण छे. कदापि ते पामेतो देवगुरुनी जोगवाई मळवी बहु अशक्य छे कदी ते पण पुण्यथी मले तो अ-द्धा बेसवी कठण छे, कदी पुण्यथी ते थायतो समाधि मरण पाम-बुं मुक्केल छे-एटा अनेक जातना विचार करी बोध पामवो ते ' बोधि दर्रूभ' भावना समजवी १२ (धर्मानुपेक्षा तेज धर्म भावना) तीर्थंकर भगवाने मूळ धर्म आहिंसा कहेलो छे ते अंगिकार करी क्षमा, मार्दव, आर्जव-सत्यव्रत-शोच, तप, त्याग-अर्किचनत्व अ-ने ब्रह्मचर्य के जे धर्मना, मूळ विनय-क्षमा तेनुं बळ. ब्रह्मचर्य तेनी रक्षा अने कषाय रहित जे परिणाम ते प्रधान, अने ममतानो त्या ग ते तेनुं आलंबन वगेरे धर्मनी चिंता करवी ते धर्मभावना- पांच प्र-कारे चारित्र (१) (सामायिकचारित्र)सावद्य व्यापारनो त्याग करी नि रवद्यपणुं अंगिकार करवुं ते. (२) (छेदोपस्थापनीय) प्रमाद्यी जत्पन्न थयेली जे दोष तेनाथी गयेलुं जे चारित्र तेने मायश्वितादि करी स्थापन करबुं ते. (३) (परिहारविशुद्धि) जेनाथी विशुद्धता विशेष होयतो तेने अंगिकार करवावालो पुरुष नव पूर्वभणेलाहोयतोज अंगीकार करे त्रण संध्याविना बाकीना काळमां वे कोश विहार करे. (४) (सक्ष्म-संपराय) सुरुम जे कपायते छे जेमना मध्ये ते उपश्रमश्रेणिया कर्म उपञ्चमावतां अने क्षपक श्रेणीथी कर्म खपावतां होयतो नवमा गुण-ढाणामां लोभना असंख्याता खंड करीने उपश्रम श्रेणिवाळो जे होय ते उपज्ञमावे अने क्षपक श्रेणीवालो होयते खपावे त्यारे अ-संख्याता खंड महिलो एक खंड बाकी रहे तेना पण असंख्याता मुक्त्म लंड करी १० गुणठाणे उपशमावे अथवा क्षपकवालो होय-तो खपावे माटे सक्ष्म संपराय कहीयें अने दश्चमा गुणठाणानु नाम पण सूक्ष्म संपराय छे. (५) (यथाख्यात) मोहनी कर्मना शयथी

तथा उपश्रमथी जेवो आत्मानो स्वभाव तथा विकार रहित शुद्ध स्वभावनुं प्रगट थवुं ते यथाख्यात चारित्र समजवुं, एटला प्रकारथी संवर थायछे आ प्रमाणे संवर तत्व संपूर्ण थयुं.

निर्जरा तत्वना भेद कहे छे. आ चोपडीना संवर तत्वना भेदमां जे द्वादशानुष्रेक्षानुं वर्णन छे तेमां नवमी निर्जरा भावना छाती छे तेमां निर्जरा तत्वनुं स्वरूप आवी गयुं छे तेनाथी जाणी छेवुं. इति निर्जरा तत्व संपूर्ण.

मोक्ष तत्वतुं स्वरूप. १ अष्टक्तम्मेना प्रकार ज्ञानावरणी १ दर्श्वनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी ४ आयु ५ नाम ६ गोत्र ७ अंत-रायकम्मे ८ ज्ञानावरणीकम्मेभेद – मित्रज्ञानावर्णी १ श्रुतज्ञानावर्णी २ अवधिज्ञानावर्णी ३ मनपर्ययज्ञानावर्णी ४ केवलज्ञानावर्णी ५ तेमनी ओलल मित्राानावर्णी – मित्र होवानदे १ श्रुतज्ञानावरणी श्रुतहोवानदे २ अवधिज्ञानावरणीकम्मे अवधिहोवानदे ३ मनपर्ययज्ञानावरणीकम्मे केवलज्ञानावरणीकम्मे केवलज्ञपज्ञवानदे ५ उत्कृष्टि स्थितिसागर कोडाकेडी ३० ज्ञान्य अंतर्भुहुर्तनी

द्वितीयद्र्भनावरणी कर्म्प्रकृति ९ चक्षुदर्शन।वरणीकर्म च-धुनदेखवानदे १ अचक्षुदर्शनावरनीप्रकृतिः स्पर्शनरसन्धाणश्रांत्र देखवानदे २ अविधिदर्शनावरणी अविधिएकि देखवानदे ३ केवल दर्शनावरणी केवलदेखवानदे १ निद्रा दर्शनावरणी एकवचन मूनो जागे ५ निद्रा निद्रा दर्शनावरणी मृनोबहुवचनजागे ६ पचलादर्शना वरणी उद्यतसावेबोलाञ्युवचनदे पणजानेनही ७ पचला पचलाद-र्शनावरणी मुखलालगले अंगसिथलथाय चलथाय मृन्यताहोय ८ स्त्यानमृद्धिपकृति स्तोकर्म्भकरे एवंदर्शनावरणीपकृति ९ उत्कृष्टस्थि-तिकोढाकोढि ३० सागर जयन्य अंतरमुहुर्त

वेदनी प्रकृति २ सातावेदनी प्रकृति सुख होय ? असातावे

दनी उदयथी दुखी होय २ तेमनी उत्कृष्टस्यिति ३० कोडाकोडी मागरोपमनी छे. जघन्य द्वादशमुहुर्तनी छे.

मोहनीमकृति २८ अनुतानुवंधी चोकडी अनंतानुवंधी क्रोध-पाषाणरेखावत् ? अनंतानुवंधी मानप्रकृतिपाषाणस्यंभवत् २ अ-नंतानुबंधी मायावंशजालवत् ३ अनंतानुबंधी लोभलाखरंगवत् ४ अप्रत्याख्यानचतुष्कलिख्यते अत्रत्याख्यानकोषमकृति इस्टरेखावत् १ अप्रत्यारुयानमान अस्थिवत् २ अप्रत्याख्यानमाया मेषशृंगवत् ३ अप्रत्याख्यानले।भचक्रमृत्तिकावत् ४ प्रत्याख्यान प्रकृतिजेद ४ लिख्यते मलाख्यानक्रोधमकृतिधूलिरेलावत् १ प्रत्याख्यानमान शुष्ककाष्ट्रवत् २ प्रत्याख्यानमायागोग्रुत्राकारवत् प्रत्याख्यानलोभप्रकृतिकुसंभरंगवत् ४ संज्वखनचतुष्क **ि रूप**ते संज्वलनकोधपकृतिजलरेखावत् १ संज्वलनगाननाग व्हीवत् २ संज्वलनमायाचमरीकेशवत ३ संज्वलनलोभप्रकृतिहरिद्रा रंगवत् ४ हारूयादिषट्पकृति हास्यमकृति हास्यवपने १ रतिकर्माउदयेथीसर्व्वत्ररतिउपजे २ अरतिकर्माउदयथीकांइचित्तन लागे ३ शोकप्रकृतिउदयथीशोकघणोउपजे ४ भयकर्माउदयागते भयबहुउपजे ५ जुगुण्साकर्माउदयागतशोकउपजे ६ वेदित्रिक ३ स्त्रीवेदउदयागत स्त्रीभावउपजे ? पुंवेदउदयागत पुरुषभावउपजे २ नपुंसकवेदथीउभयाभिलाषभावउपजे तथास्वकीयस्वकीयकम्मेउद्-यागतस्त्रीपुंनपुंसकलिंगहोय३ दर्शनमोहनात्रणभेद१ मिथ्या कर्म्मे उदयागतीजनधर्मपराङ्ग्रुखद्दोयतवरूचिनवेठे ? समयमि-ध्याकर्मसमयमात्रीमध्याहोय २ सम्पक्षकृतिमिथ्यासर्व्हेधम्त्र-सर्व्वदेवरुचिहोय एवंमोइनीकर्म्भपकृति २८ एयनीउत्कृष्टस्थिति स-१७ त्तर कोडाकोडी सागरोपमनीछे अने जयन्यअंतरद्वहुर्तनी छे

आयु प्रकृति कम्म ४ नरकायु प्रकृति उदयागत नरकायुद्दोय १ तिर्यचायुप्रकृति उदयागतिर्यच उपने २ देवायुप्रकृति ति उदयागत देवायुद्दोय ३ मनुष्यायुप्रकृति उदयागत मनुष्यायु उपने एमनि स्थिति उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी छे अने जघन्य अंतर मुद्दुत छे

नाम कर्म्म प्रकृति ए३ तेमां प्रथम गति ४ नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य र देव ४ जेवारे जे गति कर्म्म उदय आ-वे तेवारे ते गति जाय जाति ५ एकेंद्री १ वेंद्री २ त्रेंद्री ३ चड-रींद्री ४ पंचेद्री ५ शरीर जाति प्रकृतिजेद ५ जदारिक अरीर ? वैकियशरीर २ आहारकशरीर ३ तेजसशरीर ४ कर्म-णशरीर ५ एवं शरीरकर्म जेवारे जे शरीरकर्म उदय होय ते बारे ते बरीर हे, आंगोपांग जेद ३ उदारिकांगोपांग ? वैक्रियांगोपांग २ आहारकांगोपांग ३ जेतारे अंगोपांगकर्म्मनुउदय आवे तेवारे ते बरीरले, निर्माण कर्मजेद २ स्छान-निर्माण ? प्रमाणनिर्माण २ जेबारे जे नीर्माण उदय होये तेवारे ते निर्माण हे, बंधन कर्म्भे जेद ५ ऊदारिकवंधनम्बाति ? वै क्रियबंधन २ आहारकवंधन ३ तेजसवंधन ४ काम्मीणवंधन एवं प्रकृति ५ जेवारेने बंधनप्रकृतिने उदय होय तेवारे बंधनप्रकृतिले संघात कम्म जेद ५ उदारिकसंघात ? विक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४ कार्म्भणसंघात ५ जेवारेजे संघातकर्मनो उदय होय ते हे संस्थान कम्मे जेद समचजरसंस्थान कम्भेजदयहोय समचजरससरीर होय ? निंग्रोधसंस्थानकर्मे उदयजपराजे हेठलसंकिण वह ह-क्षनी पेठे सरीर होय २ वाल्मीकसंस्थान कर्म्मउदयागत हेठाहि विस्तीर्ण चपरसंकीर्णसरीरछे राफडाने आकारे ते जालवो ३

बामनसंस्थानमकृतिउदयागत वामन होय ४ डुंडकसंस्थानपक्रति उदयसर्रारमान प्रमाण प्रमाणे तथा क्वडुं होय ५ हुंडक संस्थान मकृति उदय शरीरमान ममाण तथा कोथलानी पेठे विवधपकार द एवं ६ संस्थानकर्मजेद ६ होय संहननक-म्मभेद ६ वज्रवृषभनाराचसंहन वज्रमयअंग १ रिषभनाराच-संइनन २ नाराचसंइनन ३ अर्द्धनाराचसंइनन ४ की लिकासंइन न ५ अस्रफाटिकसंहनन ६ एवंसंहननकम्मजेसंहननकम्मजदयहो-ये ते हे स्परीप्रकृति कठिनकर्म्म उदयक िन जाणे १ कोम-लिमकृतिउद्यकोमलजाणे २ स्निग्धप्रकृतिउद्यास्निग्धजाणे ३ लुक्ष पकृतिउदयल्भजाणे १ भारीपकृतिउदयथीभारीजाणे ५ इलकुपकृ-तिउद्यथीहरूको नाणे ६ शीतप्रकृतिनाउद्यथीशीतजाणे ७ उद्यप-कृतिनाउदयथीउदयजांणे ८ रसपकृति ९ तिक्त १ कटुक २ क्षार ३ मधुर ४ अंबिळ ५ कर्म्मछेयेतेवोथाय गंध प्रकृति २ सु-गंत्र प्रकृति उदयथीसुगंबहोय कर्पूरकस्तुरीना सरखी सुगंत्र होये १ दुर्गभउदयथी दुर्गभहोये कृथितमृत्तिकावत् २ वर्ण प्रकृति ५ श्वेत १ पीत २ रक्त ३ हरित ४ कृष्ण ५ जेनकृति उदयहोय तेनो वर्णले अनुपूर्वी ४ नरकगत्यानुषूर्वी १ निर्यचगत्य नुपूर्वी २ मनुष्यग त्यानुपूर्वी ३ देवगत्यानुपूर्वी ४ जेअनुपूर्वीकर्म्धनोवेध तेनि गतिमा नाय गुरुपकृति ३ लघुपकृति १ गुरु पकृतिउदयभारी होय पारानीपेठे लघुपकृतिउदय आकडानी पेठे होय उपघात प-कृति उपघात करे ? परघात उदय अनेरातेहने करे २ आताप पकृतिउदयआतापरपने अग्नीवत् उद्योतमकाति कांतिहोय मणिवत् ३ स्वासनिस्वासहोय विहायोगति प्रकृति २ मशस्तवि-हायोगतिजदयहंसवत् रुढीगतिहोय अपशस्तविहायोगनिजदयजंद-नीपेरेगति होय खोडोपांनुलो होय प्रत्येक प्रकृतिउद्यसरिपांप्क

नीवहोय ? साधारण प्रकृतिउदय एकश्ररीरमां अनंतजीवहोय ? त्रस्पकृतिउदयवंद्री ? तेंद्री २ चउरेंद्री ३ पंचेंद्री १ होय थावर प्रकृतिउदयथावरहोय एकेंद्री सुभगपकृतिउदयसोभाग्यहोय ? दु-भगपकृतिउदयशुभहोय ३ अशुभ प्रकृतिउदयशुभहोय ३ अशुभ प्रकृतिउदयशुभहोय ३ अशुभ प्रकृतिउदयशुभहोय ४ सुस्वरप्रकृतिउदयसुस्वरहोय ६ सुस्म प्रकृति उदयसुस्महोय कुशुंआदि ७ बादरप्रकृतिउद्यपोटोमहामछवत् पर्याप्तिकम्मंउद्यपद्पर्याप्ति केवल पुरे अपर्याप्तिकम्मंउद्यपप्याप्ति उरिछले ?० थिरप्रकृतिउदयथिरयाय ?? अस्थिरपकृतिना उदयथी आस्थिर थाय ?२ आद्यपकृतिनाउद्यथी स्वत्रमानताहोय ?३ अनाद्यपकृतिनाउदयथी अमान्यताहोय १४ जसप्रकृतिनाउद्यथी जसवंतोहोय १५ अजसप्रकृतिनाउदयथी अमान्यताहोय १४ जसप्रकृतिनाउद्यथी जसवंतोहोय १५ अजसप्रकृतिनाउदयथी अजसनहोय १६ तीर्थकरप्रकृतिनाउदयथी तीर्थकरहोय १७ एवंभेद ९३ नायप्रकृतिसंपुर्ण एनिस्थिति २० कोडाकोडो सागरोपमनी छे जथन्यस्थिति अष्ठ सुहर्तनि छे.

गोत्रकर्मभेद २ तेमनी ओलख १ उंचगोत्र २नीचगोत्र उंचगोत्र बांधनारना गुण देवशास्त्र तथा गुरू तेमनी भक्ति तथा वैयावचकरतां निरंतर संवेगदान तप भाव प्रमुख धर्मकार्यकरता उंचगोत्र बंधाय छे एनाथी जेवीप्रीतिकिया करतां नीचगोत्र बंधाय छे तेमनी उत्कृष्ट स्थिती २० कोडाकोडी सागरोपमनी छे अने जघन्यमुहुर्त आठनी छे उंचप्रकृतिउदयथीउंचगोत्रले नीचकर्मनाउदयथीनीचगोत्रले अं-तरायकर्मनाभेद ५ तेमनीओलख दानांतराय १ लाभांतराय २ भो गांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यांतराय ५ तेमनीजत्कृष्टिस्थिती ३० कोडाकोडीसागरोपमनीछे जगन्यअंतम्रहुर्तनी दानांतरायनाउ-द्यथी दांनदेवानपामे लाभांतरायनाउदयथीलाभनपामे मोगांतरा यनाउदयथीभोगकरवानपामे उपभोगांतरायकर्मनाउदयथीलपमो-मकरवानदे ४ वीर्यांतरायनाउदयथीबलनहोय ५ एवंकर्म्यम्बर्हित १८८ विवरणं समाप्तं पुन्यनीमकृति ४२ अनेपापनीमकृति ४२ छे पणतेआंहीविस्तारनाभयथीलखेलनथी तत्वार्थनीमोटीटीकाथीजा-णीलेवी सप्ततत्वअनेपापअनेपुन्यमेलवतांनवपदार्थथयाछे आरीतेजी वादीपदार्थनुंस्वरूपसंपूर्णथयुंछे.

माखिनीवृत्तम्.

रचयतु निजधर्म सर्वदिग्वस्त्रवर्गो ज्ञवतु सुजिनपूजा जैनसन्मंदिरेषु। कथयतु मुनिवृंदं शुद्धथर्मोपदेशं इति चिरमज्ञिलापं हर्पकीर्तिर्विधत्ते ॥१॥



श्रीसिद्धभगवाननी अष्टप्रकारनी पूजा.

प्रथमजखपूजा. १

(राग मालकोसी)

जिनवर परमद्याल, भविया जिनवर परमद्याल (ए आंकणी.) मागधवरदा आनंदकारी,प्रभासवरमनोहारा,होभविया.जिन ।।१।। अष्टोत्तरशतकं भभरके, प्रशालकरोजिनचंदा,हो भवियाः जिन्।।२॥ पंचामृतवरपावोधारा, जिनमुद्रामनोहारा, हो भविया जिन०।।३।। कांचनपात्रमांउत्तमवस्त्रथी,चरणपुंछोधरिरंगा,होभविया,जिन०॥१॥ एवाविधिथी न्हावणकरतां.झरसेपापनीधारा,होभविया.जिन०॥५॥ तेथी परमानंद्रमगटक्षे, आनंदवरपेअपारा, हो भवियाः जिन०॥६॥ हर्षकी ति एम उपदेशे, पामशो सुखभंडारा, हो भविया जिन ।।।।।

काव्यं ''द्रुतविलंबितवृत्तम्"

निजमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसुधारया । सकलबोधकलारमणीयकं, सहनसिद्धमहं परिपूजये.

ॐ -हीँ अई श्रीपरमेष्टिने परमपुरुषाय सर्वदोषनिवारणाय जलम्।

अय गंधपूजा. २

(राग वसंतनी देशी.)

सुंदरपूर्णविलासहो प्रभु तेरे मंदिरमे, तेरे मंदिर०। वावनचंदनकुंकुमिश्रित, ङावोसुगंधअपार,हो प्रभुतेरे. सुंदर०॥१॥ निर्मलम्भुसें कधुंदुंमनसे, चितमांलेजोलगार,हो प्रभुतेरे. सुंदर०॥२॥ सर्वमकारे सुगंधिलैकर, चरणपूर्जु मनोद्दार, हो प्रभुतरे. सुंदर्गाशा मनउहासंस्तुतिकरतो, जिन वंदु वार्रवार, हो प्रभुतेरे. सुंदर्गाधा एवाठाठथी पूजनकरिने, वांछितसाधोकाज,हो प्रभुतेरे. सुंदर०॥५॥ हर्पर्कार्त्तिम्रुनि एम भणेछे, अंतरभाक्ति अपार,हो प्रभुतेरे. सुंदर०॥६॥

काव्यम्।

सहजकर्मकलंकविनाशनै, रमलभावविभावितचंदनैः । अनुपमानगुणाविलनायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ।।२।।

ॐ-हाँ, परमेष्टिने परम० गन्धम्। अय अक्षतपूजा. ३

(गग श्रीराग)

जिनगुण ध्यावत मन मोहनी, मन मोहनी० (ए आंकणी)
कांचन पात्र हस्तमां लेकर, मुक्ताफलनो चोक भरी. जिनगुण ॥१॥
सर्व देवोनुं दृंद मलीने, अग्रे नाचन सुर सुंदरी जिनगुण ॥२॥
अनेक मकारथी भिक्त करतां,मृदंग किकिणी उठे ध्वानि जिनगुण ॥३॥
उज्वल अखंडित तंदुल लेकर, मुस्चरणाग्रे पूंज करी जिनगुण ॥४॥
इस्त जोडके ध्यान धरतहं, मागनहं मुगती रमणी जिनगुण ॥६॥
तेम तमे सौ पूजन करके, मेमना अश्रु नयन धरी जिनगुण ॥६॥
तेथी परमानंद मगटके, हर्प की चिनी तृषा हरी जिनगुण ॥७॥
का ठियम.

सहजभाव सुनिर्मल तंदुलैः, सकल दोप विशाल विशोधनैः। अनुप रोध सुवोध विधायकं, सहज सिद्ध महं परिपूज्ये ॥

ॐ ह्रा परमेष्ठिने परम० अक्षतान्। अद्य पुष्पपूजा ४

राग इंग्रेजी वाजानी चाल.

आनंद कंद श्री जिनेंद ध्यानमां धरो, उमंग रंगथी जिनेश अर्चना करो. (ए आंकणी.)

कल्याण पंच उत्सवे सुरेन्द्र आविया, जातु प्रमाण पुष्पथी प्रभू वधाविया. ॥ आनंद कंद्र.॥१॥

मंदार पारिजात डुंद् मालती अति, सेवंतिने गुलाव जाइ जृड् ब्हेकती. आनंद् कंद्. ॥२॥ बदुल केतकी सुगंघी पुष्प सज करो, विकाशी पुष्पमाल जगतपालने घरोता आनंद कंदताहै।। उन्कर्ष भावहर्षयीस्त्र अंतरे घरोतश्री हर्ष कार्ति सरस वाक्य चित्तमां करोत आनंद कंदताही।।

काव्यम्.

समयसार मुणुष्प सुमालया, सहज कर्म करेण विशेषया। परम योग बलेन वशीकृतं, सहज सिद्ध महं परिपृत्रये ॥४॥

ॐ ह्रा परमेष्टिने परम० पुष्पम् ।

अथ चरूपूजा. ५

(राग जिल्लानी टुमरी.)

चलो सखे जिनमंदिरकुं, मनयां छितहो सब होवनहें. (ए आंकणी) खाजा खूरमा पिम्ता बदाम, द्रास दाडीम गुलावनहें. चलो सखें. ॥१॥ तिनछत्र उपमेंगलिकमाला, कंपरीथालभरावतहें, चलो सखें. ॥२॥ फेनी घेवर मोदक पेडा, क्षीर खांड घृत छोडतहें. चलो सखें. ॥३॥ स्वादिष्ट साटा सुंदरलाडु, उत्तमथाल चडावनहें. चलो सखें. ॥१॥ नानाविध पकवान बनावी, जिनपुर धालधरावतहें. चलो सखें।॥६॥ विविध हंपसें पूजनकरके, जन्मक्ष्याकुं हरावतहें. चलो सखें।॥६॥ काट्यम्.

अकृतबोधसुदीव्य निवेद्कं, विहितजाति जरामरणांतिकः । निरवधिप्रवरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजयं ॥५॥ ॐ-हाँ परमेष्टिनेपरम० चरु ।

अय दीपपूजा. ६

(राग श्रीरागवा कालिंगडो.)

दीपक पूजा धरो तमे हंद, दीपक० (ए आंकणी.) इंद्र इंद्राणी हम्तमां रूकर, बाजत हां संया ताल मृदंग ॥ दीपक०॥१॥ किंकणी नाद बांमुरिमंडल, गावतहा सेया देवनोहंद. दीपक०॥२॥ एवा ठाठथीटीपक ग्रहके, छोडत हा संया प्रभुजिके अंग. टीपक०॥३॥ तेटीपककी ज्यात प्रकाशे, अज्ञानतमकानाशे फंद. टीपक०॥४॥ तेम तुम शुद्धभाव प्रकाशो, भवका सन्वर जाशे जंट. दीपक०॥५॥ हपैकीत्तिमुनि एम भणेछे, प्रभु सेवामां मागत फंद. दीपक०॥६॥ काठयम्

सहजरत्नरुचित्रविद्यीवकै. रुचितिभृतितमः प्रविनाशनैः । निरवधिप्रविकाशविकाशनं, सहजरिद्धमहं परिपृज्ये ॥६॥

ॐ -हीं, परमेप्टिने, परम० भ्रम्ब. । द

अय फलपूजा. ७

(गन खमाचर्न, तुमरी.)

दर्शनियन प्रश्नुजी आनंद नहीं, आनंद नहीं, दर्श० (ए आंकणीं) अनंतकाल भव सुख दुख लीनों, प्रभुजीको मुलहरीं, दर्शन० ॥१॥ द्राक्ष दादीम आम्र कांत्रज, नानाविधिमें पात्र भरीः दर्शन० ॥२॥ परम भावमें आनंद देखें।, थाल प्रभुजीके आगधरीः दर्शन० ॥३॥ आनंदमयी हो मृत्ति जिनकीं, सब पाप छेदनहारीः दर्शन० ॥१॥ मुक्ताफलथी पूजन करतां, वरों भेमे मुक्ति मुंदरीः दर्शन० ॥५॥ हपैकोक्तिं गुणक्षथी जाणे, प्रमु ध्यानमें ज्योतमलीः दर्शन० ॥६॥

काञ्यम्

परम भावफलाविलसारयाः सहज भाव कुभाव विशोधयाः । निजगुणम्फुरटात्मनिरंजनं, सहजिमद्धमर्हपरिषूजये ॥ ७॥

ॐ हाँ परमे। धुने परम० फर्छ ।

अय अष्टमः अर्घः । ६

(राग रेखता.)

चंद्रमभु हो पुनमचंदा, अपुनराद्यत्ति आवी गंगा, (एआंकणी.)
सुजलगंधअक्षतोधारी, वरछोडा पुष्प मनोहारी,
चरुदीप धूप प्रगटावी, ग्रहोफल हस्तमां लावी. चंद्रमभु० ॥१॥
धरी उपचार ए हर्ष, जिनेश्वर पांस जै तर्षे,
पूजाकरीअष्टविधरीते, वरो मुक्ति सुंदरी प्रीते. चंद्रमभु० ॥२॥
भावनगरे उत्तमकाजा, चंद्रमभु शोभे महाराजा,
श्रावकशुद्धभक्तिमांजाग्या, धर्मप्रीतिजाणवालाग्या.चंद्रमभु० ॥३॥
महात्रतनी कियाकारी, अहाविश मूल गुणधारी,
हिंद्रमध्ये नागपुरवासी, दिगंवरसत्तवालज्ञाति. चंद्रमभु० ॥४॥
चौमासे हपं महाराजा. करी रचना पूजाकाजा,
सेवकनीपूर्णकरोआशा, देजंप्रभुक्तिना वासा. चंद्रमभु० ॥५॥
संवतओगणीश्चत्रेपनम, भाद्रपद शुक्तिश्चि नोम,
मुनिहर्षकीर्तिएमभापे, चिद्रानंद रूपनी आशे. चंद्रप्रभु० ॥६॥
शाद्देलविक्वीहितन्नसम्.

नेत्रोन्मीलविकाशभावानिवहैंग्त्यंतवोधाय वं वार्गन्धाक्षनपुष्पटामचरुके दींपैः सधूपः फलेः। यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चये सिद्धस्वादमगाधवोधमचलंसंचर्चयामोवयम् ॥८॥

ॐ हाँ परमेष्टिने परम॰ अर्घम्। ॥ समाप्तेयं पूजा ॥

*---

आ पूजा भूलथी रही गयेली छे, ते पाने ९७ में दीपपूजा थया पछी बांचवी पछी फलपूजा लेवी.

अथ धूपपूजा. ७

राग पीलू.

माराप्रभूजिनी धूपनीपूजा कर्म दुर्गंध मिटावनहारी. (ए आंकणी.)
अगर सिलारस उत्तम लावो, कांचन पात्रके थाल भरावो,
नंदनवनथी, चंदनिमिश्रित, अत्यंत सुगंध करोहो भविका. मारा ॥१॥
तेम पूजाहो जिननी करता, आनद मन उल्लासे भजतां,
तेथी समिकत रंगथी अंकित, गोत्र अशंकित थापोरे भविका. मारा ॥२॥
रजतपात्रमां अग्नि धरावो, उपर मुगंधी द्रव्य सुकावो,
विणशी दुर्गे थिथाशे सुगंधी, आत्मशुद्धि तमे करोरे भविका. मारा ॥३॥
मन वच कायाथी आनंद धरता, अंतर दोपने परगट करता,
कर्मना इंधन करी बहु रंधन. हर्षकीर्त्ति एम भणेरे भविका. मारा ॥॥॥

काव्यम्।

निजगुणाक्षयरूपसुघूपनैः स्वगुणघातिमल प्रविनासनैः । विश्वदबोधसुदीर्घसुखात्मकं, सहजसिद्धमहंपरिपूजये. ॥ ७॥

ॐ -हीँ परमेष्टिने परम० धूपम् ।